श्रीः ।

जगद्विनोद ।

★

मोहनलालभट्टात्मज कविवर पद्माकर
मथुरानिवासी विरचित ।

★

मुद्रक व प्रकाशक-

खेमराज श्रीकृष्णदास,
अध्यक्ष-"श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
❋ बम्बई. ❋

संवत् २०१३, शके १८७८.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ जगद्विनोद।

कविवर पद्माकर कृत।

★

दोहा—सिद्धिसदन सुन्दरबदन, नँदनंदन मुदमूल ॥
रसिक शिरोमणि साँवरे, सदा रहहु अनुकूल ॥१॥
जय जय शक्ति शिलामयी, जय जय गढ़आमेर ॥
जय जयपुर सुरपुर सदृश, जो जाहिर चहुँफेर ॥२॥
जय जय जाहिर जगतपति, जगतसिंह नरनाह ॥
श्रीप्रतापनन्दन बली, रविवंशी कछवाह ॥ ३ ॥
जगतसिंह नरनाहको, समुझि सबनको ईश ॥
कवि पद्माकर देत हैं, कवित बनाय अशीश ॥४॥

कवित्त—क्षात्रन के छत्र छत्रधारिनके छत्रपति,
छाजत छटान क्षिति क्षेमके छवैयाहौ।
कहै पदमाकर प्रभाकरके प्रभाकर,
दयाके दरियाय हिन्दूहदके रखैयाहौ ॥
जागते जगतसिंह साहिब सवाई,
श्री—प्रतापनन्दकुलचन्द आज रघुरैयाहौ ॥
आछे रहो राजराज राजनके महाराज,
कच्छ कुल कलश हमारे तो कन्हैयाहौ ॥ ५ ॥

आप जगदीश्वर ह्वै जग में विराजमान,
हौंहूं तौ कवीश्वर ह्वै राजते रहतहौं ।
कहै पदमाकर त्यों जोरत सुयश आप,
हौंहूं त्यों तिहारो यश जोरे उमहत हौं ॥
श्रीजगतसिंह सदा राजमान सिंहवत,
बात यह साँची कछू काची न कहतहौं ।
आपु ज्यों चहत मेरी कवितादराज त्यों मैं,
उमरिदराज राज रावरी चहतहौं ॥ ६ ॥

दोहा—जगतसिंह नृप जगतहित, हर्षकिये निधि नेह ॥
कवि पद्माकर सों कह्यो, सुरस ग्रन्थ रचि देह ॥७॥
जगतसिंह नृप हुकुमते, पाइ महा मनमोद ॥
पद्माकर जाहिर कहत, जगहित जगतविनोद ॥८॥
नवरसमें जु शृंगाररस, सिरे कहत सब कोय ॥
सुरस नायका नायकहि, आलम्बित ह्वै होय ॥९॥
ताते प्रथमहि नायका, नायक कहत बनाय ॥
युक्तियथामति आपनी, सुकविनको शिरनाय ॥१०॥

अथ नायिका लक्षणम् ॥

दोहा—रसशृंगारको भाव उर, उपजहि जाहि निहार ।
ताहीको कविनायका, वर्णत विविधविचार ॥ ११ ॥

अथ नायिकाको उदाहरण ।

कवित्त—सुन्दर सुरंग नैन शोभित अनंग रंग,

अंग अंग फैलत तरंग परिमलके ।
बारनके भार सुकुमारको लचत लंक,
राजत प्रयंक पर भीतर महलके ॥
कहैं पदमाकर विलोकि जन रीझै जाहि,
अम्बर अमलके सकल जल थलके ।
कोमल कमलके गुलाबनके दलके,
जात गड़ि पाँयन बिछौना मखमलके ॥ १२ ॥

पुनर्यथा -सवैया ॥

जाहिरै जागतसी यमुना जब बूड़ै बहै उमहै वह बेनी ।
त्यों पदमाकर हीराके हारन गंगतरंगनको सुखदेनी ॥
पाँयनके रँगसों रँगिजातसी भांतिही भांति सरस्वतिसेनी ।
पैरैजहांई जहां वहबाल तहां तहँ तालमें होत त्रिबेनी ॥१३॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—आई खेलि होरी घरै नवलकिशोर कहूं,
बोरीगई रंगमें सुगन्धनि झँकोरै है ।
कहैं पदमाकर इकन्तचलि चौकी चढ़ि,
हारनके बारनके फंद बंद छोरैहै ।
घाँघरेकी धूमनि सु ऊरुन दुबीचेदाबि,
आँगिहू उतारि सुकुमारि मुख मोरैहै ।
दंतनि अधरदाबि दूनरि भईसी चापि,
चौवर पचौवर कै चूनर निचोरैहै ॥१४॥

दोहा—सहजसहेलिन सौंजतिय, बिहँसि बिहँसि बतराति ।
शरदचन्द्रकी चांदनी, मन्द पतरसी जाति ॥१५॥
कही त्रिविध सो नायिका, प्रथम स्वकीया नाम ।
पुनि परकीया दूसरी, गणिका तीजीबाम ॥१६॥

अथस्वकीयालक्षणम् ॥

दोहा—निजपतिहीके प्रेममय, जाको मन वच काय ।
कहत स्वकीया ताहिसों, लज्जाशीलसुभाय ॥ १७ ॥

अथ स्वकीयाका उदाहरण ॥

कवित्त—शोभित स्वकीयगण गुण गनती में तहां,
तेरेनामही की एकरेखा रेखियतु है ॥
कहैं पदमाकर पगीयों पति प्रेमहीमें,
पदमिनी तोसी तिया तूही पेखियतु है ॥
सुवरण रूप जैसो तैसो शील सौरभ है,
याहीते तिहारो तनु धन्यलेखियतु है ।
सोनेमें सुगन्ध नाहिं सुगन्धमें सुन्योरी सोनो,
सोनो औ सुगन्ध तोमें दोनों देखियतु है ॥१८॥

दोहा—खान पान पीछू करति, सोवति पिछले छोर ।
प्राणपियारे ते प्रथम, जगति भावती भोर ॥१९॥
एक स्वकीया की कही, कबित अवस्था तीन ।
मुग्धा इक मध्या कहत, पुनि प्रौढा परबीन ॥२०॥

अथ मुग्धा लक्षणम् ॥

दोहा—झलकत आवै तरुणई, नई जासु अँग अँग ।

मुग्धा तासों कहत हैं, जे प्रवीण रसरंग ॥ २१ ॥

अथ मुग्धाका उदाहरण-सवैया ॥

ये अलिया बलिके अधरानिमें आनि चढ़ी कछुमाधुरईसी।
ज्यों पदमाकर माधुरी त्यों कुच दोउनकी चढ़ती उनईसी ॥
ज्यों कुचत्योंहींनितम्बचढ़ेकछुज्योंहींनितम्बत्योंचातुरईसी।
जानीन ऐसी चढ़ाचढ़िमें विहिधौंकटि बीचहीलूटिलईसी ॥

दोहा—कछु गजपतिके आहटनि, छिनछिन छीजतशेर।
विधुविकास विकसतकमल, कछू दिनमके फेर ॥
पल पल पर पलटन लगे, जाके अङ्ग अनूप।
ऐसी इक ब्रजबालको, कहिनहिंसकत स्वरूप ॥ २४ ॥
यह अनुमान प्रमाणियतु, तियतनु यौवन ज्योति।
ज्यों मेहँदीके पातमें, अलख ललाई होति ॥ २५ ॥
मुग्धा द्विविध बखानहीं, प्रथमकही अज्ञात।
ज्ञात यौवना दूसरी, भाषत मति अवदात। २६ ॥
जब यौवनको आगमन, जानिपरत नहिं जाहि।
सो अज्ञात यौवन तिया, भाषत सुकवि सराहि ॥

अथ अज्ञातयौवनाको उदाहरण ॥

कवित्त- ये अलि हमैं तौ बात गातकी न जानि परै,
बझत न काहे यामें कौन कठिनाई है ॥
कहैं पदमाकर क्यों अंग न समात आँगी,
लागी कहा तोहिं जागी उरमें उँचाई है ॥

तुव तजि पांयन चली है चंचलाई कित,
बावरी विलोकै क्यों न आंखिनमें आई है ॥
मेरी कटि मेरीभटू कौनधौं चुराई तेरे,
कुचन चुराई कै नितम्बन चुराई है ॥ २८ ॥

पुनर्यथा--सवैया ॥

स्वेदकेभेद न कोऊ कहै ब्रत आंखिनहूंअँसुवानकोधारो
त्यों पद्माकर देखती हौं तिनको तनकोउ न जात सँभारो
ह्वैधौंकहाको कहागयोयों दिनद्वैकहीते कछुख्याली हमारो ।
काननमेंबसीबांसुरीकोध्वनि प्राणनमेंबस्योबांसुरी वारो ॥

दोहा--कहाकहौं दुख कानसों, मोनगहौं केहि भांति ॥
घरी घरी यह घांघरी, परत ढीलिये जाति ॥३०॥
उरउकसोहैं उरज लखि, धरति क्यों न धरि धीर ।
इनहिंविलोकिविलोकियतु, सौतिनके उरपीर॥३१॥
तनुमें यौवन आगमन, जाहिर जब ज्येहि होत ।
ज्ञात यौवना नायका, ताहि कहैकविगोत ॥ ३२ ॥

ज्ञात यौवनाका उदाहरण--सवैया ॥

चौकमें चौकी जरायजरी तिहिपै खरीबार बगारतसौंधे॥
छोरिपरी है सुकंचुकीन्हानकोअंगनतेजमें ज्योतिकेकौंधे ।
छाइउरोजनकोछवि ज्यों पद्माकर देखतही चकचौंधे ॥
भाजिगईलरिकाईमनौलरिकैकरिकैदुहुँदुन्दुभिऔंधे ॥३३॥

पुनर्यथा--सवैया ॥

ये वृषभानुकिशोरीभई इतहू वह नंद किशोर कहावै ।

त्यौं पदमाकर दोउनपै नवरंग तरंग अनंग कि छावै ॥
दौरेदुहूं दुरि देखिबेको द्युति देह दुहूंकी दुहूंनको भावे ।
ह्यां इनके रसभीजत त्यों दृगह्वै उनके मसि भीजत आवे॥

दोहा--आजु काल्हि दिन द्वैकते, भई औरही भांति ।
उरज उचौंहिन दै उरू, तनुतकि तिया अन्हाति ॥
अतिडरते अतिलाजते, जो न चहै रति बाम ।
त्यहि मुग्धाको कहतहैं, सुकविनवोढ़ानाम ॥३८॥

अथ नवोढाका उदाहरण—सवैया ॥

राजिरही उलही छविसों दुलही दुरि देखतही फुलवारी ।
त्योंपदमाकरबालहँसै हुलसैबिलसै मुखचन्द्र उज्यारी ॥
ऐसेसमयकहुँ चातककीध्वनि कानपरी डरपी वहप्यारी ।
चौंकिचली चमकीचितमें चुपह्वैरही चंचल अंचलवारी ॥

दोहा--पियदेख्यो पियसामने, गहल आपनी बांह ।
नहीं नहीं कहि जगिभजी, यदपि नहीं ढिगनाह ॥
पतिकी कछु परतीति उर, धरै नवोढ़ा नारि ।
सो विस्रब्ध नवोढ़ तिय, वर्णत विबुध विचारि ॥

अथ विस्रब्ध नवोढाका उदाहरण—सवैया ॥

जाहिनचाहकहूंरतिकी सुकछू पतिको पतियानलगी है ।
त्यौं पदमाकर आननमें रुचिकाननभौंहैं कमानलगी है ॥
देततिया नछुवैछतियां बतियांनमें तो मुसक्यानलगी है ।
पीतमपान खवाइबेको परयंकके पासलौं जानलगी है ॥

दोहा–दूरिहिंते दृग दै रहति, कहै कछू नहिं बात ।
छिनक छबीलेको सुतिय, छुवन देति क्यों गात ॥
इक समान जब ह्वै रहत, लाज मदन ये दोय ।
जातियके तनुमें तबहिं, मध्या कहिये सोय ॥४३॥

अथ मध्याका उदाहरण–सवैया ॥

आईजुबालगोपालबरै ब्रजबालविशाल मृणालसीबाहीं ।
त्योंपदमाकर मूरतिमें रति छ्वै न सकै कितहूं परछाहीं ॥
शोभितशंभु मनो उरऊपर मौज मनोभवकी मनमाहीं ।
लाजबिराजरही अँखियानमेंप्राणमें कान्हजबानमें नाहीं ॥

दोहा–मदन लाजवश तियनयन, देखत बनत इकन्त ।
इते खिंचे इत उत फिरत, ज्यों दुनारिकेकन्त४४॥
ललितलाजकछुमदनबहु, सकल केलिकेखानि ।
प्रौढ़ा ताहीसों कहत, सुकविनको मनमानि ॥४५॥

॥ अथ प्रौढका उदाहरण ॥

कवित्त–रतिविपरीति रची दम्पति गुपति अति,
मेरे जानि मानिभय मनमथ नेजेतैं ।
कहैं पदमाकर पगी यों रस रंग जामें,
खुलिगे सुअंग सब रंगन अमेजेतैं ।
नीलमणि जटित सुबेंदा उच्च कुचपै,
परेउ है टूटि ललित ललाटके मजेजेतैं ।
मानो गिरेउ हेमगिरि श्रृंगपै सुकेलिकरि,
कढिकै लंक कलानिधिके करेजेतैं ॥ ४६ ॥

दोहा—तिय तनुलाज मनाजकी, यों अब दशादिखाति ।
ज्यों हिमन्तऋतुमें सदा, घटत बढ़त दिन राति ॥
प्रौढ़ा द्विविध बखानहीं, रति प्रिया इकबाम ।
आनँद अति सम्मोहिता, लक्षण इनके नाम ॥४८॥

अथ रतिप्रियाका उदाहरण—सवैया ॥

लपटैपट पीतमके पहिरो पहिराय पियै चुनचूनरखासी ।
त्यौंपदमाकरसांझहीते सिगरी निशिकेलि कलापरगासी
फूलतफूल गुलाबनके चटकाहटिचौंकिचकी चपलासी
कान्हकेकानन आँगुरीनाइ रही लपटाइलवंगलतासी ॥
दोहा--करत केलि पिय हियलगी, कोककलिन अवरेखि
विमुद कुमुदलौं ह्वैरही, चन्द्र मन्द द्युतिदेखि ॥५०॥

अथ आनन्दसम्मोहिताका उदाहरण—सवैया ॥

रीतिरची परतीतिरची रतिप्रीतमसंग अनंगझरीमैं ।
त्यौंपदमाकर टूटेहराते सरासरसेज परे सिगरी मैं ॥
यों करिकेलि विमोहित ह्वै रही आनँदकी सुघरी उघरीमैं ।
नीवी नवार सँभारिबेकी सुभईसुधि नारिकी चारिघरीमैं॥
दोहा—भई मगन जो नागरी, सुलहि सुरत आनन्द ।
अँग अँगोछि भूषण बसन, पहिरावत नँदनन्द ॥
मान समय मध्या त्रिविध, त्रिधा कहत प्रौढ़ाहि ।
धीरा बहुरि अधीरगनि, धीरा धीरा ताहि ॥ ५३ ॥
कोप जनावै व्यंग्यसों, तजै न पति सन्मान ।
मध्या धीरा कहत हैं, तासों सुकवि सुजान ॥५४॥

अथ मध्याधीराका उदाहरण ।

कवित्त--पीतमके संगही उमंगि उठि जैबे कोन
एती अगा अगनथरद पंखियां दई ।
कहै पदमाकर जे आरती उतारैं चमरढौर,
श्रमहारैं पै न ऐसी सखियां दई ॥
देखि दृग द्वैही सों न नेकहू अघैये इन,
ऐसे झुका झुकमें झपाक भाखियां दई ।
कीजै कह राम श्याम आनन विलोकिबेको,
विरचि विरंचिते अनंत अँखियां दई ॥५५॥

पुनर्यथा—सवैया ॥

भाल पै लाल गुलाल गुलालसों गेरिगरेगजरा अलबेलो
यों वनि वानिकसों पदमाकर आये जु खेलन फाग तौ
खेलो ॥ पै इक या छवि देखिबेके लिये मो बिनतीके
न झोरिन झेलो । राउरे रंगरँगी अँखियानमें ये बलबीर
अबीर न मेलो ॥ ५६ ॥

दोहा--जो जियमें सो जीभमें, रगन रावरे ठौर ।
आज काल्हिके नरनके, जीभ न कछु जिय और
करै अनादर कन्त को, प्रकट जनावै कोप ।
मध्य अधीरा नायका, ताहि कहत कवि ओप ॥

अथ मध्यअधीरा नायकाका उदाहरण ॥

कवित्त--भूले से भ्रमे से काहि शोचत भ्रमे से,
अकुलाने से ठिकानेसे ठगे से तीक आये हो ।

कहै पदमाकर सु गोरे रंग बोरे दृग,
थोरे थोरे अजब कुसुंभी फरी लाये हो ॥
आगेको धरत पर पीछेको परत पग,
भोरहीते आज कछु औरै छबि छाये हो।
कहां आये तेरे धाम कौन काम घर जाउ,
जाउँ कहां श्याम जहां मन धीर आयेहो ॥५९॥

दोहा--दाहक नाहक नाह मोहिं, करिहौं कहा मनाय।
सुवश भये जा तीयके, ताके परसहु पांय ॥ ६० ॥

धीर वचन कहिकै जो तिय, रोय जनावत रोष।
मध्या धीरा धीर तिय, ताहि कहत निर्दोष ॥६१॥

अथ मध्या धीराका उदाहरण ॥

कवित्त--रावलि कहा हो किन कहत हो काते अरी,
रोष तज रोषकै कियो मैं का अचाहेकी।
कहै पदमाकर यहै तो दुख दूरि करा,
दोष न कछु है तुम्हैं नेह निरवाहेको।
तोपै इति रोवति कहा है कहौं कौन आगे,
मेरेई जु आगे किये आसुन उमाहे को।
कोहौ मैं तिहारी तूतो मेरी प्राणप्यारा आजु,
होती जो पियारी तौ बरोती कहौ काहेको ॥६२॥

दोहा--करि आदर तिय पीयको, देखि दृगन अलसानि।
समुख मोरि वर्षनलगी, लै उसाँस अँसुवानि ॥६३॥

उर उदास रतिते रहै, अति आदरकी खानि ।
प्रौढाधीरा नायका, ताहि लीजियत जानि ॥ ६४ ॥

अथ प्रौढा अधीरा उदाहरण ॥

कवित्त--जगर मगर युति दूना केलि मंदिर में,
बगर बगर धूप अगर बगारयो तू ।
कहै पदमाकर त्यों चन्द्रते चटकदार,
चुम्बनमें चारुमुख चन्द्र अनुसारयो तू ।
नैननमें बैननमें सखी और सैननमें,
जहां देखो तहाँ प्रेम पूरण पसारयो तू ।
छवत छपाये तऊ छलन छबीली अब,
उर लगिबेकी बार हारना उतारयो तू ॥ ६५ ॥

दोहा--दरश दीठि पिय पगनरति, आदर कियो अछेह ।
देह गेहपति जानिगो, निरखि चौगुनो नेह ॥६६॥
कछु तरजन तावन कछू, करि जु जनावे रोष ।
प्रौढ अधीरा नायका, निरखि नाहको दोष ॥६७॥

अथ प्रौढा अधीराका उदाहरण ॥

कवित्त--रोष करि पकरि परोसते लिआई घरै,
पीको प्राणप्यारी भुज लतनि भरै भरै ।
कहैं पदमाकर ये ऐसो दोष को जो फिर,
सीखन समीप यों सुनावति खरै खरै ।
प्योछल छयावै बात हंसि बहरावै तिय,
गदगद कण्ठ दृग आंसुन झरै झरै ।

ऐसी धनधन्य धनीधन्य है सुवैसोजाहि ।
फूलकी छरीसों खरी हनति हरै हरै ॥ ३८ ॥

दोहा--नेह तरेरे दृग नहीं, राखन क्यों न अँगोट ।
छैल छबीलेपर कहा, करति कमलकी चोट ॥६८॥
रतिते रूखी ह्वै जहां, दुरजु दिखावै बाम ।
प्रौढ़ाधीर अधीरतिय, ताहि कहत रसधाम ॥ ७० ॥

अथ प्रौढा धीरा अधीराका उदाहरण ॥

कवित्त--छवि छलकन भरी पीक पलकन त्योंहीं,
श्रम जलकन अलकन अधिकानेह्वै ।
कहै पदमाकर सुजानि रूपखानितिया,
ताही ताकि रही ताहि आपुहि अजानेह्वै ॥
परसतगात मनभावनको भावतीकी,
गईचढ़ि भौंहैंरही ऐसी उपमानेह्वै ।
मानो अरविंदनपै चन्द्रको चढ़ायदीनी,
मानकमनैत बिनरोदाकी कमानेह्वै ॥ ७१ ॥

दोहा--अन्तरमें पतिकी सुरति, गहिगहिगहकि गुनाह ।
दृगमरोरि मुखमोरितिय, छुवनदेति नहिं छाह ॥
वर्णत ज्येष्ठ कनिष्ठिका, जहँ ब्याही तियदोय ।
पियप्यारी ज्येष्ठाकही, अनप्यारी लघुसोय ॥ ७३ ॥

अथ ज्येष्ठा कनिष्ठाका उदाहरण ॥

कबित्त--दोऊ छवि छाजतीं छबीली मिलि आसनपै,
जिनहिं बिलोकि रह्यो जातन जितै जितै ॥

कहै पदमाकर पिछौहैं आय आदरसे,
छलिया छबीलो कत बासर बितै बितै ॥
मूँदे तहां एक अलबेलीके अनोखे दृग,
सुदृग मिचाउ नेक ख्यालन हितै हितै ॥
नेसुक नवायग्रीव धन्य धन्य दूसरी को,
आँचक अचूक मुख चूमत चितै चितै ॥ ७४ ॥
दोहा--जलबिहार पिय प्यारिको, देखत क्यों न सहेलि ।
लै चुभकी तजि एकतिय, करत एकसों केलि ॥

इति स्वकीया ।

॥ अथ परकीया लक्षण ॥

दोहा—होई जो तिय परपुरुष रत, परकीया सो वाम ।
ऊढ़ा प्रथम बखानहीं, बहुरि अनूढ़ानाम ॥ ७६ ॥
जो व्याही तिय औरको, करत औरसों प्रीति ।
ऊढ़ा तासों कहत हैं, हिये सखी रसरीति ॥ ७७ ॥

अथ ऊढाका उदाहरण ॥

कवित्त--गोकुलके कुलके गलीके गोप गायनके,
जौंलगि कछू को कछू भारत भनै नहीं ।
कहैं पदमाकर परोस पिछवारनके,
द्वारनके दौरि गुण अवगुण गनै नहीं ॥
तौलों चलि चातुर सहेलियाहि कोऊ काहूँ,
नीके कै निचोरै ताहि करत मनै नहीं ।

हौंतो श्यामरङ्ग में चोराइ चित्त चोरा चोरी,
बोरत तौ बोरचो पै निचोरत बनै नहीं ॥ ७८ ॥

दोहा--चढ़ी हिंडोरे हर्ष हिय, जस तिय वसन सुरंग ।
तिय झूलत पिय संगमें, मन झूलत हारि सङ्ग ॥७९॥
अनव्याही तिय होत जहँ, सरसपुरुष रसलीन ।
ताहि अनूढा कहत हैं, कवि पंडित परवीन ॥ ८० ॥

अथ अनूढाका उदाहरण—सवैया ॥

जाबनहीं कुल गोकुलमें अरुदूनीदुहूंदिशिदीपति जागै ।
त्योंपदमाकर जोईसुनै जहँ सो तहँ आनँद में अनुरागै ॥
एदई ऐसो कछू कर ज्योंत जू देखैं अदेखिनके दृगदागै ।
जामेनिशंक ह्वै मोहनको भरिये निजअंककलंक न लागै ॥

दोहा--कुशल करै करता तौ, सकल शंक सिय राय ।
यार क्वारपनको जुपै, कहूं व्याहि लैजाय ॥ ८२ ॥
इक परकीया को कहैं, षट् विधि भेद बखानि ।
प्रथमहिं गुप्ता जानिये, बहुरि विदग्धामानि ॥८३॥
ललित लक्षिता तीसरी, चौथी कुलटा होय ।
पँचईं मुदिता षष्ठईं, है अनुसैना सोय ॥ ८४ ॥
कही जो गुप्ता तीन विधि, सुकविनहूं समुझाय ।
भूतसुरत संगोपना, प्रथम भेद यह आय ॥ ८५ ॥
वर्तमान रति गोपना, भेद दूसरो आन ।
पुनि भविष्य रति गोपना, लक्षण मान प्रमाण८६॥॥

अथ भूतसुरत संगोपनाका उदाहरण ॥

कवित्त--आली हौं गई हौं आज भूलि बरसाने कहूं,
तापै तू परैहै पदमाकरतनै नीयों ।
व्रजवनिता वे बनितान पै रचैहैं फाग,
तिनमें जु ऊधमिनि राधा मृगनैनीयों ॥
घोरिडारी केसरि सुबेसरि बिलोरिडारी,
बोरिडारी चूनरि चुचात रंगनैनी ज्यों ॥
मोहिं झकझोरिडारी कंचुकी मरोरि डारी,
तोरिडारी कनि बिथोरिडारी बेनी त्यों ॥ ८७ ॥

दोहा--छुटत कंप नहिं रैनिदिन, बिदित बिदारति कोय ॥
अति शीतल हेमन्त की, अरी जरी यह तोय॥८८॥

अथ वर्तमान सुरतगोपनाका उदाहरण--सवैया

ऊधम ऐसो मचो ब्रजमें सब रंग तरंग उमंगनि सींचैं ।
त्योंपदमाकरछज्जनिछातनि छ्वैछितिछाजति केसरिकीचैं ॥
त्यपिचकीभजिभीजितहांपरे पीछे गोपालगुलालउलीचैं ।
एकहि संग यहां रपटे सखिये भये ऊपर मैं भई नीचैं ॥

दोहा--चढ़त बाट बिचलौ सुपग, भरो आन इक अंक ।
ताहि कहा तुम तकरही, यामें कौन कलंक ॥९०॥

अथ भविष्य सुरत गोपना ॥

कवित्त--आजुते न जैहौं दधि बेचन दोहाई खाउँ,
भैयाकी कन्हैया उत ठाढ़ोई रहत है ।

कहै पदमाकर त्यों साकरी गली है अन,
इत उत भाजिवेको दांव ना लगत है ॥
दौरि दधिदान काज ऐसो अमनैक तहां,
आली बनमाली आइ बहियां गहत है ।
भादौं सुदी चौथको लख्यो मैं मृगअंक याते,
झूठहू कलंक मोहिं लागन चाहत है ॥ ९१ ॥

दोहा--कोऊ कछु अब काहुवै, मति लगाइये दोष ।
होनलग्यो ब्रजगलिनमें, होरिहारनको घोष ॥९२॥
द्विविध विदग्धा जानिये, वचन विदग्धा एक ।
किया विदग्धा दूसरी, भाषत विदित विवेक ॥९३॥
वचननिकी रचनानिसों, जो साधै निजकाज ॥
वचन विदग्धा नायका, ताहि कहत कविराज ॥९४॥

अथ वचन विदग्धाका उदाहरण--सवैया ॥

जब लौंघरकोधनि आवैघरै तबलौं तोकहींचित दबोकरो ।
पदमाकर ये बछरा अपने बछरानके संग चरैबोकरो ॥
अरु औरनके घरते हमसों तुम दूनी दुहावनी लबोकरो ।
नित सांझसबेरेहमारीहहा हरिगैयां भले दुहिजैबोकरो ॥

पुनर्यथा सवैया ॥

पिये पागे परोसिनके रसमें बसमें न कहूं वश मेरे रहैं ।
पदमाकर पाहुनीसी ननँदीनिशिनींदतजे अवसेरे रहैं ॥
दुख और मैं कामोंकहौंकोसुनैब्रजकीवनितादगफेरे रहैं ।

न सखी घरसांझ सबेरे रहैं घनश्यामघरीघरीघेरे रहैं ॥९६॥

दोहा--कल करील की कुंजमें, रहो अरुझि मो चीर ।
ये बलबीर अहीरके, हरत क्यों न यह पीर ॥९७॥

कनकलता श्रीफल परी, विजन बन फूलि ।
ताहि तजत क्यों बावरे, अरे मधुप मतिभूलि ॥
जो तिय साधै काज निज, करै क्रिया अनुमानि ।
क्रिया विदग्धा नायका, ताहि लीजिये जानि ॥९९॥

अथ क्रिया विदग्धाका उदाहरण

कवित्त—वंजुल निकुंजनमें मंजुल महल मध्य,
मोतिनकी झालरै किनारिनमें कुरविन्द ।
आइये तहांई पद्माकर पियारे कान्ह.
आनि जुरिगये त्यों चबाइनके नीके वृन्द ॥
बैठी फिर पूतरी अनूतरी फिरंग कैसी,
पीठ दै प्रवीनी दृग दृगन मिलै अनन्द ।
आछे अवलोकि रही आई इस मंदिरमें,
इंदीवर सुन्दर गोविंदको मुखारविन्द ॥१००॥

दोहा—कारि गुलाल सों धुंधुरित, सकल ग्वालिनी ग्वाल ।
गोरीमीडनके सु मिस, गोरी गहे गोपाल ॥ १ ॥
जातियको जिय आनरत, जानि कहै तिय आन ।
ताहि लक्षिता कहतहैं, जे कवि कलानिधान ॥

अथ लक्षिताका उदाहरण ॥

॥ सवैया ॥

ब्रजमण्डलीदोष सबै पदमाकर ह्वै रही यों चुपचापरी है।
मनमोहनकी बहियां में छुटी उपटीयहबेनीदेखापरी है॥
मकराकृतकुण्डलकी झलकी इतहूभुजमूलपैछापरी है।
इनकी उनसोंजोलगीं अँखियां कहियेतो कछूहमैंकापरी है॥

पुनर्यथा सवैया ॥

बीतवहीसुतौवीतचुकी अब आंजती होकिहिकाजलकंजन।
त्योंपदमाकरहालकहेमतिलाल करौ दृगख्यालके खंजन॥
रेखतकचुकीकेंचुकीके बिच होत छिपाये कहा कुचकंजन।
तोहिंकलंक लगाइबेको लग्यो कान्हहीके अधरानमें अंजन॥

दोहा--धरकत कत हेमन्तऋतु, रीति कहो कह जात।
अपने बश सोवन लगी, भली नहीं यह बात॥ ५॥
जो बहुलोगन सों जु तिय, राखति रतिकी चाह।
कुलटा ताहि बखानहीं, जे कवीनके नाह॥ ६॥

अथ कुलटाका उदाहरण ॥

॥ सवैया ॥

यों अलबेलीअकेली कहूंसुकुमारि शृँगारनकैचलैकैचलै।
त्यों पदमाकर एकनकेउरमेंरसबीजनि वै चलै वै चलै॥
एकनसों बतरायकछूछिनएकनकोमन लै चलै लैचलै।
एकनकोतकिघूँघटमेंमुखमोरिकनैखिन दैचलै दैचलै॥७॥

दोहा–विपिन बाग बीथी जहां, प्रबल पुरुष मय माम।

कासकलित बलि वामको, तहां तनिक बिसराम॥८॥
सुनत लखत चितचाहकी, बातभांति अभिराम ।
मुदितहोय जो नायका, ताको मुदिता नाम ॥ ९ ॥

अथ मुदिताका उदाहरण ॥

कवित्त-वृन्दावन बीथिन बिलोकन गईही जहां
राजत रसाल बन तालरु तमालको ।
कहै पदमाकर निहारत बन्योई तहां,
नेहनिको नेम प्रेम अदभुत ख्यालको ॥
दूनो दूनो बाढ़त सुपूनोंकी निशामें अहो,
आनंद अनूप रूप काहू ब्रजबालको ।
कुञ्जत कहूंको सुनो कंतको गमन लखि,
आगमन तैसो मनहरण गोपालको ॥१०॥

दोहा--परखि प्रेमवश परपुरुष, हरषि रही मनमैन ॥
तबलगि झुकि आईघटा, अधिकअधेरीरैन॥११॥
कही सु अनुशयना त्रिविध, प्रथमभेद यहजानि॥
वर्तमान संकेतके, निघटनके सुखहानि ॥१२॥

पहिली अनुशयनाका उदाहरण ॥

कवित्त--सूनेघर परम परोसीके सुजान तिया,
काई सुनि सुनिकै परोसिन मनो अराति ।
कहै पदमाकर सुकञ्चन लतासी लचि,
ऊँची लेत श्वास वा हियेमें त्यों नहींसमाति॥
आइआई जहां तहाँ बैठि जैसे तैसे ,

दिन तौ बितायो बधू बीततिहै कैसे राति ।
ताप सरसानी देखै अति अकुलानी जऊ,
पति उरआन तऊ सैजमें बिलानीजाति १३

दोहा—सौति संयोगन रोग कछु, नहिं वियोग बलवन्त ।
ननँद होत क्यों दूबरी लागत ललित बसन्त १४
होनहार संकेतको, धरि अभाव उरमाहिं ।
दुखित होत सो दूबरी, कहत अनुसिया ताहिं १५

अथ दूसरी अनुशयना नायकाका उदाहरण ॥

कवित्त—चालो सुनि चन्द्रमुखी चित्तमें सुचैन करि,
तित बन बागन घनेरे अलि घूमि रहे ॥
कहै पदमाकर मयूर मंजु नाचत हैं ।
चाइसों चकोरिनि चकोर चूमि चूमि रहे॥
कदम अनार आम अगर अशोक थोक,
लतन समेत लोने लोने लगि झूमि रहे ।
फूल रहे फल रहे फैलि रहे फबि रहे,
झपिरहे झलिरहे झुकिरहे झूमि रहे ॥१६॥

दोहा—निघटत फूल गुलाबके, धरति क्यों न धनधीर ।
अमल कमल फूलन लगे, विमल सरोवर नीर १७
जु तिय सुरत संकेतको, रमन गमन अनुमान ।
व्याकुल होति सु तीसरी, अनुशयना पहिचान १८

तीसरी अनुशयनाका उदाहरण—सवैया ॥

चारिहूंओरते पौनझकोर झकोरनि घोर घटा घहरानी ।

ऐसेसमय पदमाकर काहूके आवत पीतपटी फहरानी ॥
गुंजकीमाल गोपालगरेब्रजबालबिलोकिथकी थहरानी ॥
नीरजते कढ़िनीरनदी छविछीजत छीरजपै छहरानी ॥
दोहा–कल करीलकी कुञ्जसों, उठत अतरकी बोय ॥
भयो तोहिं भावी कहा, उठी अचानक रोय ॥२०॥

इति परकीया निरूपणम् ॥

अथ गणिका लक्षणम् ।

दोहा–करै औरसों रति रमण, इक धनहीके हेत ।
गणिका ताहि बखानहीं, जे कवि सुमति निकेत ॥

गणिकाका उदाहरण ॥

कवित्त–आरतसों आरत सम्हारत न शीश पट,
गजब गुजारत गरीबनकी धारपर ।
कहै पदमाकर सुगन्ध सरसार वैसे,
बिथुरि बिराजै बार हारिनके हारपर ॥
छाजत छबीले क्षिति छहर छराकी छोर,
भोर उठि आई केलि मन्दिरके द्वारपर ।
एक पग भीतर सु एक देहरी पै धरे,
एक करकञ्ज एक कर हैं किवाँरपर ॥ २२ ॥
दोहा--तनु सुवरण सुवरण वसन, सुवरण उक्ति उछाह ।
धनि सुवरणमें ह्वैरही, सुवरणहीकी चाह ॥२३॥
प्रथम कही जो नायका, ते सब त्रिविध विचारि ।

अन्य सुरति दुखिता सुइक, मानवती पुनिरारि ॥
फिरि वक्रोकति गर्विता, यहिविधि भिन्न प्रकार।
तिनके लक्षण लक्षिसब, भाषत मति अनुसार ॥
प्रीतम प्रीति प्रतीति जो, और तियातनुपाइ।
दुखित होइ सो जानिये, अन्य सुरत दुखताइ ॥

अन्य सुरति दुःखिताका उदाहरण ॥

कवित्त--बोलति न काहे येरी पूछे बिन बोलौं कहा,
पूछतिहौं कहो भई खेद अधिकाई है।
कहै पदमाकर सुमारगके गये आये,
सांची कह मोसों आजु कहांगई आई है ॥
गई आई हौं तो पास सांवरेके कौन काज,
तेरेलिये ल्यावन सु तेरिये दुहाई है ॥
काहेते न ल्याई फिरि मोहन बिहारीजूको,
कैसे बाहिल्याऊँ जैसे वाको मनल्याई है ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त--धोइगई केसरि कपोल कुचगोलनकी,
पीकलीक अधर अमोलन लगाई है।
कहै पदमाकर त्यों नैनहूं निरंजनमें,
तजति न कंपदेह पुलकनि छाई है ॥
बाद मति ठानै झूठ बादिनि भई री अब,
दूतपनो छोंड़ि धूतपन में सुहाई है।

आई तोहिं पीर न पराई महापापिन तू,
पापीलौं गई न कहूं वापीन्हाइ आई है ॥ २८ ॥
दोहा--खान पान शय्या शयन, जासु भरोसे आय ।
करै सो छल अलि आपसों, तासों कहा बसाय ॥
पियसों करै जो मान तिय, वहै मानिनी जान ।
ताको कहत उदाहरण, दोहा कवित बखान ॥

माननीका उदाहरण--सवैया

मोंहिं तुम्है न उन्हैं न इन्हैं मनभावति सोन मनावन ऐहै
त्योंपद्माकर मोरनको सुनि शोरकहो नहिंको अकुलैहै,
धीर धरोकिन मेरे गोविंद घरी इकमें जो घटा घहरैहै ।
आपहि ते तजिमानतिया हरुवैहरुवै गरुवैलगिजैहै ॥ ३१ ॥
दोहा--और तजे तो रहु सजे, भूषण अमल अमोल ।
तजन कह्यो न सुहागमें, अंजनतिलक तमोल ॥ ३२ ॥
वहवक्रोकति गर्विता, द्विविध कहत रसधाम ।
प्रेमगर्विता एक पुनि, रूप गर्विता नाम ॥ ३३ ॥
करै प्रेमको गर्व जो, प्रेम गर्विता नारि ।
रूपगर्विता होय वह, रूप गर्वको धारि ॥ ३४ ॥

अथ प्रेमगर्विताको उदाहरण—सवैया ॥

मोबिनमाइनखाइकछू पद्माकरत्योंभइभावी अचेत है ।
वीरनआइलिवाइबेकोतिनकीमृदुबानिहूमानिनलेतहै ।
प्रीतमकोसमुझावतिक्योंनहिंयेसखीतूजुपैराखतिहेतहै ।
औरतोमोहिंसबैसुखरीदुखरीयहैमाइकैजाननदेत है ॥ ३५ ॥

पुनर्यथा--सवैया ॥

हौं अलि आजु बडे तरके भरिके घट गोरसका पगधारौ ।
त्योंकबकोधौंखरोरीहुतो पदमाकर मोहितमोहिंनिवारौ ।
सांकर खोरमें कांकरीकीकारचोट चलौफिरलौटिनिहारौ ।
ताछिनतेइन आंखिनते नटरयो वह माखन चाखन हारौ ॥

दोहा--कछुनखाति अनखाति अति, बिरहभरीबिललाति ।
अरी सयानीसौतिकी, बिपतिकहीनाहिं जाति ॥३७॥

अथ रूपगर्विताका उदाहरण--सवैया ॥

हैनहिंमाइको मेरीभटू यह सासुरोहै सबकी सहिबो करौ ।
पदमाकर पाइ सुहाग सदासखियानहूको पहिंचानबो करौ ।
नेहभरी बतियां कहिकै नितसौतिनकी छतियांदहिबोकरौ ।
चन्द्रमुखीकहेहोतीदुखीतौनकोऊकहै गोमुखी रहिबो करौ ।
दोहा--निरखि नयन मृगमीनसों, उठीं सबै मिलभाखि ।
परघर जाइ गमाइरिस, हौं आई रसराखि ॥ ३९ ॥

अथ दशनायकावर्णनम् ॥

दोहा--प्रोषित पतिका खण्डिता, कलहान्तारिता होय ।
विप्रलब्ध उत्का बहुरि, बासकसज्जा जोय ॥ ४० ॥
स्वाधीनहु पतिका कहत, अभिसारिका बखानि ।
प्रकट प्रवत्स्यतप्रोषिता, आगतपतिकाजानि ॥४१॥
ये सब दशबिधिनायका, कविन कही निरधारि ।
तिनके लक्षण लक्ष सब, क्रमते कहत विचारि ॥४२॥

पिय जाको परदेशमें, प्रोषितपतिका सोय ।
उदित उदीपन ते जुतन, सन्तापित अतिहोय ॥४३॥

अथ मुग्धा प्रोषितपतिका उदाहरण ॥

कवित्त--मांगि सिख नौदिनकीन्योतिगेगोविंदतिय,
सौदिन समान छिनमानि अकुलावै है ।
कहै पदमाकर छपाकरि छपाकरते,
वदन छपाकर मलीन मुरझावै है ॥
बूझत जु कोऊकै कहा री भयो तोहिं तब,
औरही की और कछु भेद न बतावै है ।
आंसुनके मोचन सकोचवश आलिन में,
उलही बिरह बेलि दुलही दुरावै है ॥४४॥

पुनर्यथा--सवैया ॥

बालमके बिछुरे ब्रजबालको हालकह्योनपरैकछु ह्याहीं ।
च्वैसीगईदिनतीनहीमें तब औधिलौंक्योंछजिहैछबिछाहीं ।
तीरसों धीर समीर लगै पदमाकर बूझिहू बोलत नाहीं ।
चन्द्रउदयलखि चन्द्रमुखी मुखमन्दह्वैपैठतिमन्दिर माहीं ।
दोहा--भरति उसाँसन दृग भरति, करति गेहको काज ।
पलपल पर पीरी परति, परी लाजके राज ॥४६॥

मध्या प्रोषितपतिका--सवैया ॥

अबह्वैहै कहा अरविन्दसों आननइन्दुके आइहवाल पर्‍यो ।
पदमाकर भाषैनभाषैबनै जिय ऐसे कछू बकसालै पर्‍यो ॥

इकमीनविचारोबिंध्योबनसी पुनिजालकेजाइदुमालै परयो।
मनतोमनमोहनकेसँगगोतनुलाजमनोजकेपालेपरयो ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त--ऊबतहौं डूबतहौं डगतहौं डोलतहौं,
बोलत न काहे प्रीति रीतिन रितै चल।
कहै पदमाकर त्यों उससि उसाँसिन सों,
आंसूवै अपार आइ आँखिन इतै चल ॥
अवधिहीकी आगम लौं रहत बने तो रहौ,
बीचही क्यों बैरी बन्ध वेदनिवितैचलै ॥
मेरेमेरे प्राण कान्ह प्यारेके चलाचलमें,
तबतौ चलै न अब चाहतकितै चलै ॥४८॥

दोहा-रमण आगमन अवधिलौं, क्यों जिवाययतुयाहि।
रहत कण्ठगत अवधिये, आधीनिकसतिआहि४९॥

प्रौढाप्रोषित पतिका ॥

कवित्त--लागत वसंतके सुपाती लिखी प्रीतमको,
प्यारी परवीन है हमारी सुधि आनवी।
कहै पदमाकर इहां को यों हवाल,
बिर--हानलकी ज्वालासों दवानलतेमानवी ॥
ऊबको उसाँसनको पूरो मरगास सोतो,
निपट उसाँस पवनहूतै पहिचानवी ॥
नैननको ढङ्गसों अनङ्ग पिचकारिन ते,
गातनको रङ्ग पीरे पातन ते जानवी ॥५०॥

दोहा—वर्षतमेह अछेह अति, अवनि रही जलपूरि ।
पथिक तऊ तुव गेह तो, उठत भभूरनधूरि ॥५१॥

परकीया प्रोषित पतिका उदाहरन सवैया ॥

थोरे गये नँदलाल कहूंसुनिबाउबीलगवियोगकीबेरी ।
ऊतरु कौनहूं कै पदमाकर दै फिरि कुञ्ज गलीनमें फेरी ॥
पावै न चैनसुमैनके बाननि होत छिनै छिन छीनघनेरी ।
बूझैजु कन्त कहै तो यहै तिय पाउँ पिरातहै पांसुरीमेरी ॥

दोहा—व्यथित वियोगिनि एक तू, यों दुख सहत न कोइ
ननँद तिहारे कन्तको, पन्थ बिलोकति जोइ ५३

अथ गणिका प्रोषितपतिकाका उदाहरण—सवैया ॥

बीर अबीर अभीरनको दुखभाषै बनै न बनै विनभाखै ।
त्यों पदमाकर मोहन मीतके पायसँदेश न आठयेपाखै ॥
आयेन आपनपातीलिखीमनकीमनहींमेंरही अभिलाखै ।
शीतके अन्त बसन्तलग्यो अब कोनकेआगेबसन्तलै राखै ॥

दोहा—पग अंकुश करमें कमल, कारिजु दियो करतार ।
सुसखिसफल ह्वै है तबहिं, जब ऐहैं घरयार ॥५५॥
अनत रमें रचि चिह्न लखि, पीतमके शुभगात ।
दुखित होइ सो खण्डिता, वर्णत मति अवदात ॥

मुग्धखण्डिता का उदाहरण ॥

कवित्त—बैठी परयंक पै नवेली निरशंक जहा,
जागी ज्योति जाहिर जवाहिरकी जागै ज्यों ॥
कहै पदमाकर कहूंवे नन्दनन्दनहूं,

आँचकही आइ अलसाइ प्रेम पागेयों ॥
झपकोहैपलनी पियाके पीक लीक लखि,
झुकि झहराइहू न नेकु अनुरागे त्यों ।
वैसेही मयंकमुखी लागत न अंकहुती,
देखिकै कलंक अब येरी अंकलागैक्यों ॥ ५७ ॥
दोहा—बिनगुन माल गोपाल उर, क्यों पहिरी परभात ।
चकित चित्त चुप ह्वैरही, निरखि अनोखीबात ॥

मध्याखंडिताका उदाहरण ॥

कवित्त—ख्याल मनभायो कहूं करिकै गोपाल घरै,
आये अतिआलस मढ़ेई बड़े तरकै ।
कहै पदमाकर निहारी गजगामिनिके,
गज मुकतानिके हिये पै हार दरकै ॥
येते पै न आनन ह्वै निकसे बधूके बैन,
अधर उराहने तुदीबेकाज फरकै ।
कंधनते कंचुकी भुजानिते सु बाजूबन्द,
पौंचनते कंकन हरेही हरे सरकै ॥ ५९ ॥
दोहा--रसिकराज आलस भरे, खरे दृगनकी ओर ।
कछुक कोप आदर न कछु, करत भावती भोर ॥

अथ प्रौढाखंडिताका उदाहरण॥

कवित्त--खाये पान बीरासी बिलोचन बिराजै आज,
अंजन अँजाये अध अधरा अमीके हैं ।
कहै पदमाकर गोबिंद देखौ आरसी लै,

अमल कपोलन पै किन पान पीके हैं ॥
ऐसो अवलोकिबेई लायक मुखारविन्द,
जाहि लखि चन्द अरविन्द होत फीके हैं ॥
प्रेमरस पागि जागि आये अनुराग याते,
अब हम जानीकी हमारे भाग नीके हैं ॥६१॥

दोहा--ताकि रहत छिन और तिय, लेत औरको नाउँ,
ये बलिऐसे बलमकी, विविधभाँति बलि जाउँ ॥ ६२ ॥

अथ परकीया खंडिताका उदाहरण ॥

कवित्त--एहो ब्रज ठाकुर ठगोरी डार कीन्हीं तब,
बौरी बिनकाज अब ताकी लाज मारिये ।
कहै पदमाकर एतेपै यो रँगीलो रूप,
देखे बिन देखे कहो कैसे धीर धारिये ॥
अंकहु न लागीं पै कलंकिनी कहाई याते,
अरज हमारी एक यही अनुसारिये ।
सांझके सवेरे दिन दशयें दिवारी फाग,
कबहूँ भलेजू भलै आइबो तो कारिये॥६३॥

पुनर्यथा--सवैया ॥

सीख नमानीसयानी सखीन कियो पदमाकरकी अमनैकी ।
प्रीति करी तुमसों बजिकै सुबिसारि करी तुम प्रीति घनेकी ॥
रावरीरीतिलखी इमि सांवरे होति है सम्पति जो सपनेकी ।
सांचहूताको नहोत भलो जो न मानत है कही चारि जनेकी ॥

पुनर्यथा—सवैया ॥

साहसहू न कहूं सख आपनोभाषै बनै न बनै बिन भाखैं।
त्यों पदमाकर यों मगमें रँग देखतहौं कबकी रुखराखैं ॥
वा विधि सांवरे रावरे कीन मिले मरजीनमजानमजाखैं।
बोलातिबानिबिलोकनिप्रीतिकी वो मनवेनरहीं अबआखैं ॥
दोहा--गन्यो न गाकुल कुल घनो, रमण रावरे हेत।
सु तुम चोरि चितचोर लौं, भोर देखाई देत ॥६६॥

गणिका खंडिता ॥

कवित्त–गोस पेंच कुण्डल कलंगी शिर पेंच पेंच,
पेंचन ते खेंचि बिन बेचे बारि आये हौ।
कहै पदमाकर कहां वा मूरि जीवन की,
जाकी पगधूरी पगरीपै पारि आये हौ ॥
वेगुनके सार ऐसे वेगुनके हार अब,
मेरी मनुहारी की न याहि धरि आये हौ।
पांसासार खेली वित कौन मनुहारिनसों,
जित मनुहारि मनुहारि हारि आये हौ॥६७॥

दोहा-बगे साह लगि हमकरी, तुमसौं प्रीति बिचारि।
कहा जानि तुम करतहौ, हमैं ओर की नारि ॥६८॥

कलहां तारिताका लक्षण ॥

दोहा-प्रथम कछूअपमानकरि, पियकोफिरिपछिताय।
कलहांतरिता नायका, ताहि कहत कविराय ॥६९॥

अथ मुग्धा कलहांतरिताका उदाहरण ॥ सवैया ॥

बारीबहू मुरझानी विलोकि जिठानीकरै उपचार किवा
त्योंपदमाकर ऊँची उसांसलखेमुखसासको ह्वै रह्यो फीके
एकैकहैं इन्हें डीठिलगीपर भेद न कोऊ लहै दुलहीकं
ह्वैकै अजानजोकान्हसोंकीन्होंगुमानभयोवहै जा नहीं जीकं

दोहा--प्रथम केलि तियकलहकी, कथा न कछुकहिजाय
अतनुताप तनुहीसहैं, मनहींमन अकुलाय ॥ ७१

मध्या कलहांतरिता ॥

कवित्त--झालरन दार झूकि झूमति चितान बिछे,
गहब गलीचा अरु गुलगुली गिलमें ।
जगरमगर पदमाकर सु दीपनकी,
फैली जगा ज्योति केलि मंदिर अखिलमें॥
आवत तहाँई मनमोहनको लाज मैन,
जसी कछू करी तैसी दिलही की दिलमें ।
हेरि हारि बिलमें न लीन्हों हिलमिल में,
रही हों हाइ मिलमें प्रभाकी झिल मिल में ॥७२

दोहा--ल्यावो पियहि मनाइयह, कह्योचहतिरहिजाति
कलह कहरकी लहरमें, परी तिया पछिताति ॥७३

अथ प्रौढा कलहांतरिताका उदाहरण ॥

कवित्त--ये अलि इकन्त पाइ पांइन परैहै आइ,
हौं न तब हेरि या गुमान बजमारै सों ।

कहै पदमाकर वै रूठिगे सु ऐसी भई,
नैननते नींद गई हाइके दबारे सों ॥
रैन दिन चैनहै न मैनहै हमारे बश,
बेम मुख सूखत उसाँस अनुसारे सों ।
प्राणनकी हानिसी दिखानसी लगी है हाइ,
कौन गुन जान मानकीन्होंप्राणप्यारेसों ॥७४॥

दोहा—घन घमण्ड पावस निशा, सरवर लग्यो सुखान ।
परखि प्राणपति जानिगो, तज्योमाननीमान ७५

अथ परकीया कलहांतरिताका उदाहरण ॥ सवैया ॥

कासों कहा मैं कहों दुखयोमुखसूखतईहैपियूषपियेते ।
त्यों पदमाकर यों उपहासकोत्रासमिटैनउसाँसलियेते ॥
व्यापे व्यथायहजानि परीमनमोहनमीतसोंमानकियेते ।
भूलिहूं चूक परी जो कहूंतिहिचूककीहूकनजातहियेते ॥

दोहा—मोहनमीत सभीत गो, लखि तेरा सनमान ।
अब सुदगादै तू चल्यो, अरे मुदई मान ॥७७॥

अथ गणिका कलहांतरिता का उदाहरण ॥

सवैया ॥

हारिके हार हजारन को धन देतहुते सुखसे सरसाने
हौं न लियो पदमाकरत्योंअरुबेछिनबेछिसुधारससाने ॥
वे चलिह्यांते गये अनतैहमका अबआपनीबातबखाने ।
आपने हाथमोंआपनेपाँयपैपाथरपारिपरयो पछिताने ॥

दोहा—कहा देखि दुखि दाहिये, कुमतिकछू जो कीन ।
छैल छगूनी छोरितै, छलानिलीनो छीन ॥७९॥

विप्रलब्धाका लक्षण ॥

दोहा—प्रिय विहीन संकेत लखि, जो तिय अतिअकुलाय ।
ताहि विप्रलब्धा कहत, सुकविनके समुदाय ॥८०॥

अथ मुग्धविप्रलब्धाका उदाहरण ॥

कवित्त—खेलको बहानो कै सहेलिन के संग चलि,
आई केलि मन्दिर लों सुन्दर मजेज पर ।
कहै पदमाकर तहां न पिय पाके तिय,
त्योंहीं तन तैरही तमीपति के तेहपर ॥
बाढ़त व्यथाकी कथा काहू सों कछू न कहीं,
लचकि लतालों गई लाजही की जेलपर ।
बीरी परी बिथारि कपोल पर पीरी परी,
धीरी परी धायगिरी सीरी परी सैजपर ॥८१॥

दोहा—नवल गूजरी ऊपरी, निरखि ऊजरी सेज ।
उदित उजेरी रैनको, कहि न सकतकछु तेज ८२

अथ मध्या विप्रलब्धाका उदाहरण ॥

कवित्त—पूर अँसुवानको रह्यो जो पूरि आँखिनमें,
बाहन बह्यो पै चढ़ि बाहिरी बहै नहीं ।
कहै पदमाकर सुधोखेहु न माल तरु,
चाहत गह्यो पै गहवर ह्वै गहै नहीं ॥
कांपि कदलीलो या अलीको अवलम्बकहूं,

चाहत लह्यो पै लोक लाजनि लहै नहीं ।
कंत न मिलेको दुखदारुण अनन्त पय,
चाहति कह्यो पै कछू काहूसों कहे नहीं ॥८३॥
दोहा--सजन बिहीनी सेजपर, परे पेखि मुकतान ।
तबहिं तियाको तनभयो, मनहुं अधपक्योपान ॥

अथ प्रौढ़ा विप्रलब्धाका उदाहरण ॥

कवित्त--आई फाग खेलन गोबिन्दसों आनन्दभरी,
जाको लसै लंक मंजु मखतूल ताग सो ।
कहै पदमाकर तहां न ताहि मिले श्याम,
छिनमें छबीलीको अनंग दियो दागसों ॥
कौनकरै होरी काऊ गोरी समुझावै कहा,
नागरीको राग लग्यो विषसों विरागसों ।
कहरसी केसर कपूर लग्यो कालसम,
गाजसों गुलाब लग्यो अरगजा आगसों ॥
दोहा--निरखि सेज रँग रँग भरी, लगी उसाँसै लैन ।
कछु न चैन चितमें रह्यो, चढ़त चांदनीरैन ॥८६॥

अथ परकीया विप्रलब्धा ॥

कवित्त--गञ्जन सुगंज लग्यो तैसो पौन पुंज लग्यो,
दोष मणि कुञ्ज लग्यो गुञ्जनसों गजिकै ।
कहै पदमाकर न खोज लग्यो ख्यालनको,
बालम मनोज लग्यो वीर तीर सजिकै ॥

मुखन सु बिम्ब लग्यो बूषन कदम्ब लग्यो.
मोहिं न विलम्ब लग्यो आई गेह तजिकै ।
मींजन मयंक लग्यो मीतहू न अंकलग्यो,
पंकलग्यो पायँन कलंकलग्यो बजिकै ॥८७॥

दोहा--लखि संकेत सूनोसुमुखि, बोली विकल सभीति
कहौकहा किहि सुखलह्यो, करि कुमीतसों प्रीति

अथ गणिका विप्रलब्धाका उदाहरण ॥

कवित्त--निशि अंधियारी तऊ प्यारी परबीन चढ़ि,
मालके मनोरथके रथ पै चली गई ।
कहै पदमाकर तहींन मनमोहन सों,
भेंटभई सटकि सहेटतैं अली गई ।
चन्दनसों चांदनीसों चन्द्रसों चमेलिनीसों,
और बनबेलिनीके दलनि दली गई ।
आई हुती छैलक छलैकै छल छन्दनिसों,
छैलतो छल्यो न आपु छैलमों छलीगई॥८९॥

दोहा--इत न मैन मूरति मिल्यो, परत कौनविधि चैन
धनकीभई न धागकी, गई ऐसही रैन ॥ ९० ॥
लहि संकेत शोचे जू तिय, रमन आगमन हेत ।
ताहीको उत्कण्ठिता, वर्णत सुकवि सचेत ॥ ९१ ॥

अथ उत्कण्ठिताका उदाहरण--सवैया ॥

श[illegible] चै[illegible] कारणकंतको मोचै उसासन आंसहुंमोचै ।
[illegible] हिय को पदमाकर मोचसकैनसकोचै ॥

कोचैंतकैइहचांदनीते अलियाहिनिबाहिव्यथा अबलोचै ।
लोचैपरीसियरीपर्यंकपै बीती बरीन खरीखरीशोचै ॥१२॥

दोहा--अरे सु मो मन बावरे, इतहि कहा अकुलात ।
अटकिअटाकितपतिरह्यो तितहिक्यों न चलिजात ॥

मयध उक्ता -सवैया ॥

आयेनकन्तकहांधौंरहे भयोभोर चहै निशिजातिसिरानी ।
योंपदमाकरबूझ्योचहै परबूझिसकै नसकोचभीसानी ॥
धारिसकैनउतारिसकै सुनिहारिशृंगार हिये हहरानी ।
शूलसेफूललगैफरपै तियफूलछरीसी परीमुरझानी ॥ १४ ॥

दोहा--अनत रहे रमि कन्तक्यों, यह बूझनकै चाय ।
सुमुखि सखीके श्रवणसों, मुख लगाय रहिजाय ॥

अथ प्रौढा उक्ताका उदाहरण ॥

कवित्त--सौतिनके त्रासते रहे धौं और वासते,
न आये कौन गासतेप्यो करु तौ तलासतैं ।
कहै पदमाकर सुबास ते जवास तेसु,
फूलनकी रासते जगीहै महासौंसतैं ॥
चांदनी बिकासते सुधाकर प्रकाशते न,
राखत हुलासते न लाउ खसखासतैं ।
पौन करु आशते न जाउ उड़ि वासते,
अरी गुलाबपासते उठाउ आस पासतैं ॥१६॥

दोहा--कियहुँ न मैं कबहूं कलह, गह्यो न कबहूं मौन ।
पिय अबलौं आये न कत, भयो सुकारण कौन ।

परकीया उक्ता ॥

कवित्त--फागुन में फागुन बिचारि ना देखाई देत,
एती बेर लाई उन कानन में नाइ आव ।
कहै पदमाकर हितू जो तू हमारी है तो,
हमारे कहे बीर वहि धाम लगि धाये आव ॥
जोरि जो धरी है बेदरद द्वारे तो न होरी,
मेरी विरहाग ली उलूकनि लौं लाय आव ।
एरी इन नयननकी नीरमें अबीर घोरि,
बोरिपिचकारी चितचोरपै चलाय आव ॥ ९८ ।

दोहा--तजत गेह अरु गेह पति, मोहिं न लगी विलम्ब ।
हरिविलम्बलाईसुकत, क्योंनहिंकहतकदम्ब ॥९९।

गणिका उक्ता--सवैया ॥

काहूकियोधौंकहूंवशभावतो, काहू कहूंधौंकछूछलछायो
त्योंपदमाकरतानतरंगिनि, काहूकि धौंरचिरंगारिझायो ।
जानिपरैनकछूगतिआजकीजाहितयेतोविलंब लगायो ।
मोहनमोमनमोहिबेको किधौं मो मनकोमनिहारन पायो ।

दोहा-कहतसखिनसोंशशिमुखी, सजिसजिसकल शृंगार
मोमनअटक्योहारमें, अटकिरह्योकितयार ॥ १ ।

साजहि सेज शृँगार तिय, पियमिलापकेकाज ॥
वासकसज्जानायका, वाहिकहतकविराज ॥ २ ॥

मुग्धा वासकसज्जा ॥

कवित्त--सोरह शृँगार को नवेली के सहेलिनहूं,
कीन्हीं केलिमन्दिरमें कलपित केरे हैं ।
कहै पदमाकर सु पासही गुलाबपास,
खासे खसखास खसबोइनके ढेरे हैं ॥
त्यों गुलाब नीरनसों हौरनके होज भरे,
दम्पति मिलाप हित आरती उजेरे हैं ।
चोखी चांदनीन पर चौसर चमेलिन के,
चन्दनकी चौकी चारु चांदीके चँगेरे हैं ॥ ३ ॥

दोहा--साजिसैन भूषण वसन; सबकी नजर बचाय ॥
रही पौढ़ि मिस नींदके, दृगदुवारसेलाय ॥ ४ ॥

मध्यावासकसज्जा ॥

कवित्त--सजिब्रजबाल नन्दलालसों मिलैकेलिये,
लगनिलगालगीमें लमकि लमकि उठै ।
कहै पदमाकर बिराक ऐसी चाँदनीसी,
चारोंओरचौकनि में चमकिचमकि उठै ॥
झकि झकि झूमि झूमि झिल झिल झेल झेल,
झरहरी झांपनमें झमकि झमकि उठै ।

दर दर देखौं दरी खानन में दौरि दौरि,
दुरि दुरि दामिनीसी दमकि दमकि उठै ॥ ५ ॥

दोहा--शुभ शृँगार साजे सबै, दै सखीनको पीठि ॥
चले अधखुले द्वारलौं, खुली अधखुली डीठि ॥ ६ ॥

प्रौढ वासकसज्जा ।

कवित्त--चहचही चहल चहूँधा चारु चन्दन की,
चन्द्रक चमीन चौक चौकन चढी है आब ॥
कहै पदमाकर फराकत फरस बन्द,
फहरि फुहारन की फरस फबी है फाब ॥
मोद मदमाती मनमोहन मिलेके काज,
साजि मणि मन्दिर मनोज कैसी महताब ॥
गोल गुलगादी गुल गोलमें गुलाब गुल,
गजक गुलाबी गुल गिन्दुक गले गुलाब ॥७॥

दोहा--यों शृँगार साजे सुतिय, को करि सकतबखान ॥
रह्यो न कछु उपमानको, तिहूंलोकमें आन ॥८॥

परकीया वासकसज्जा ॥

कवित्त--सोसनीदुकूलनि दुराये रूपरोसनी है,
बूटेदार घाँघरीकी घूमनी घुमायकै ।
कहै पदमाकर त्यों उन्नत उरोजनपै,
तंग अँगिया है तनी तननि तनायकै ॥
छज्जनकी छाँह छकि छैलकै मिलैकेहेत,

छाजती छपा में यों छबीली छबिछायकै ॥
ह्वैरही खरीहै छरी फलकी छरीसी छपि,
सांकरी गली में फूल पाँखुरी बिछायकै ॥९॥

दोहा—फूल बिनन मिस कुंजमें, पहिरि गुंजके हार ।
मगनिरखत नँदलालको, सुबलि बारहीं बार १०॥

गणिका वासकसज्जा—सवैया ॥

नीरके तीर उशीरके मन्दिर धीर समीर जुड़ावतजीरे ।
त्यों पदमाकर पंकज पुञ्ज पुरैनके पात परे जनु पीरे ॥
ग्रीषमकी क्यों गनै गरमी गज गौहर चाह गुलाबगँभीरे ।
बैठीबधूबनि बाग बिहार में बार बगारि सिवार सरीरे ॥

दोहा—अमल अमोलिक लालमय, पहिरि विभूषणभार ।
हर्षि हिये परतिय धरचो, सुरख सीपको हार १२
जातियके अधीन है, पीतम रहे हमेश ।
सुखाधीन पतिका कही, कविन नायका बेश १३

अथ मुग्धास्वाधीनपतिका उदाहरण ॥

कवित्त—चाह भरचो चञ्चल हमारो चित नवलबधू,
तेरी चाल चञ्चल चितौनि में बसत है ।
कहै पदमाकर सु चञ्चल चितौनिहूं ते,
औझकि उझकि झझकनि में फंसत है ॥
औझकि उझकि झझकनिते सुरझि बेश,
वाहीकी गहनिमाहीं आय बिलसत है ।

वाहीकोगहनिते सु नाहीं की कहनि आयो,
नाहींकी कहनि तें सु नाहीं निकसत है ॥१४॥

पुनर्यथा सवैया ॥

कबहूं फिर पांवनदेहौंयहांभजिजहौं तहांजहां सुधीसहौ ।
पदमाकर देहरीद्वारे किंवार लगे ललचैहौ न ऐसी चहौ ॥
बहियांजुकही छहियां नहिंनेकहु छुवैपावहुगेलहु लाजलहौ ।
चितचाहैं कहौ बसियां उनही उतहीरहौ हाहाहमेंन गहौ १५

पुनर्यथा सवैया ॥

सतरैबोकरोबतरैबोकरोइतरैबोकरोकरोजोईचहौ ।
पदमाकर आनद दीबोकरोरसलीबोकरोसुखसोंउमहौ ॥
कछु अन्तरराखो न राखौचहौ परयाबिनतीइकमेरीगहौ ।
अब ज्योंहियमेंनितबैठिरही त्योंदयाकरिकै ढिगबैठिरहौ ॥
दोहा—तुव अयान पन लखि भटू, लटू भये नँदलाल ।
जब सयानपन देखिहैं, तब धौं कहा हवाल १७॥

अथ मध्या स्वाधीन पतिका–उदाहरण–सवैया ॥

ता छिनते रहे औरनिभूलि सु भूली कदम्बनकी परछाहीं ।
त्यों पदमाकर संग सखानकी भूलिभूलाय कला अवगाहीं ॥
जा छिनते तू वशीकरमंत्रसीमेली सुकान्हके काननमाहीं ।
दैगलबाँहीं जुनाहींकरी वहनाहीं गोपालको भूलतनाहीं १८॥

दोहा--आधे आये दृगनिरति, आधे दृगनि सुलाज ।
राधे आधे वचनकहि, सुवशकिये ब्रजराज ॥ १९ ॥

अथ प्रौढा स्वाधीनपतिका उदाहरण--सवैया ॥

मोमुखबीरि दईसुदई सुरहीरचिसाधिसुगन्धि घनेरो ।
त्यों पदमाकर केसरिरवोरिकरीतोकरीसोसुहागहैमेरो ॥
बेनीगुहीतो गुही मनभावने मोतिन मांग संवारिसवेरो ।
और शृंगार सजे तो सजो इकहारहहाहियरेमतिगेरो ॥
दोहा--अंगराग औरै अँगनि, करत कछू वरजीन ॥
पै मेंहदी न दिवायहौं, तुमसों पगन प्रवीन ॥२१॥

अथ परकीया स्वाधीनपतिका उदाहरण ॥

कवित्त--उझकि झरोखाह्वै झमकि झुकि झांकी वाम,
श्याम की बिसरिगई खबरि तमाशाकी ।
कहै पदमाकर चहूंघा चैत चांदनीसी,
फैलिरही तैसिये सुगन्ध शुभ श्वासाकी ॥
तैसी छवि तकत तमोरकी तरचोननकी,
वैसी छवि बसनकी बारनकी वासाकी ।
मोतिनकी मांगकी मुखौंकी मुसक्यानहूँकी,
नथकी निहारवेकी नैननकी नासाकी ॥२२॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त--ईशकी दुहाई शीशफूलते लटकि कट,
लटते लटकिलट कन्धपै ठहारिगो ।

कहै पदमाकर सुमन्दचलि कन्धहूते;
भूमि भ्रमि भाईसी भुजामें त्यों भभरिगो ॥
भाईसी भुजाते भ्रमि आयो गोरी गोरी गोरी,
बांहते चपरि चलि चूनरि में अरिगो ।
हेरेउ हरै हरै हरी चूनरि तें चाहो जौलौं,
तौलौं मनमेरो दौरि तेरे हाथ परिगो ॥ २३ ॥

दोहा—मैं तरुणी तुम तरुण तनु, चुगुल चवाई गांव ।
मुरली लै न बजाइयो, कबहुं हमारो नांव ॥२४॥

गणिकास्वाधीन पतिका--सवैया ॥

छाकछकीछतियांधरकै दरकै अँगिया उचके कुचनीके ।
त्यों पदमाकर छूटत वारहूं टूटतहार शृंगार जेहीके ॥
संग तिहारे न झूलहुंगी फिर रंगहिंडोरे सुजीवनजीके ॥
योंमिचकीमचकौनहहालचकैकरहामचकै मिचकीके ॥२५॥

दोहा--या जगमें धनि धन्य तू, सहज सलोने गात ।
धरणीधर जो वशकियो, कहा औरकी बात ॥२६॥

अथ अभिसारिका लक्षणम् ॥

दोहा--बोलि पठावै पियहिकै, पियपै आपुहि जाय ।
ताहीको अभिसारिका, वर्णत कवि समुदाय ॥ २७ ॥

अथ मुग्धा अभिसारिकाका उदाहरण- सवैया ॥

किंकिनी छोरि छपाईकहूंकहूंबाजनीशापलपांयतेनाई ।
त्यों पदमाकर पातहुकेखरकैकहुंकोपि उठै छविछाई ॥
लाजहितेगढ़िजातकहूंअढ़िजात कहूंगजकी गति भाई ।

बेसकी थोरीकिशोरीहरेहरेया विधि नन्द किशोर पै आई।

दोहा--केलिभवन नव बेलिसी, दुलही उलहिइकन्त ॥
बैठिरहाचुपचन्द्रलखि, तुमहिबुलावतकन्त ॥ २९ ॥

अथ मध्याअभिसारिकाका उदाहरण—सवैया ॥

हूलै इतैपर मैन महाउत लाजके आंदू परेगथिपाँयन ॥
त्योंपद माकर कौन कहै गति माते मतंगनिकोदुखदायन ॥
या अँगअंगकीरोशनीमें शुभ सोसनी चीरचुभ्योचित चायन
जाति चलीव्रजठाकुरपैठमकाठुमकीठमकीठकुरायन ॥३०॥

दोहा--इक पग धरत सुमन्दमग, इक पग धरति अमन्द ॥
चली जाति यहिविधिसखी.मनमनकरतअनन्द ३१॥

प्रौढा अभिसारिका—सवैया ॥

कौन है तू कित जातिचलीबलिबीतिनिशाअधरातिप्रमानै।
हौं पदमाकर भावतिहौं निज भावतपै अबेहीं मुहिंजानै ॥
तौ अलबेलि अकेलीडरै किन क्यों डरौ मेरी सहायकेजानै
है सखिसंगमनो भवसो भटकानलौंबाणशरासनतानै ॥३२॥

पुनर्यथा।

कवित्त--घूँघटकी घूमिके सु झूमके जवाहिरके,
झिलमिल झालरकी झमिलौं झुलतजात।
कहै पदमाकर सुधाकर मुखीके हीर,
हारनमें तारनके तोमसे तुलत जात ॥
मन्दमन्दमेकल मतंगलौं चलेई भले,
भुजन समेत भुज भूषण दुलत जात।

घांघरैं झकोरिन चहूँघा खोर खोरनमें,
खूब खुशबोइनके खजानेसे खुलत जात ॥३३॥

दोहा--पग दूपुर नूपुर सुभग, जन अलापि स्वरसात ।
पियसो तिय आगमनकी, कही सु अगमन बात॥

अथ परकीया अभिसारिकाका उदाहरण ॥

कवित्त--मौलसिरी मंजुनकी गुंजनकी कुंजनको,
मोसों घनश्याम कहि कामकी कथै गयो ।
कहै पद्माकर अथाइनको तजि तजि,
गोपगण निज निज गेहके पथै गयो ॥
शोचमति कीजै ठकुरानी हमजानी चित,
चञ्चल तिहारो चढि चाहिकै रथैगयो ।
छीनन छपाकर छपाकर मुखी तूचलि,
बदन छपाकर छपाकर अथैगयो ॥३५॥

दोहा--चली प्रीतिवश मीतपै, मीत चल्यो तियचाहि ॥
भई भेंट अधबीच तहँ, जहाँ न कोऊ आहि ॥३६॥

अथ गणिका अभिसारिकाका उदाहरण--सवैया ॥

केसरिरंगरँगीशिरओढनी कानन कीन्हें गलाब कली हौ ॥
भालगुलाल भरयो पद्माकर अंगनभूषितभाँति भली हौ ॥
औरनकोछलतीछिनमें तुम जातिन और नसोंजुछली हौ ।
फागमेंमोहनकोमनलै फगुवामें कहा अबलेनचलीहौं॥३७॥

दोहा--सही सांझते सुमुखितू, सजि सब साज समाज ।
को अस भडभागी जुहैं, चलीमनावन काज ॥३८॥

अथ दिवाअभिसारिका ॥

कवित्त--दिनकै किंवार खोलि कीनो अभिसारपै न,
जानिपरी काहू कहां जाति चली छलसी।
कहै पदमाकर न नाकरी सकारै जाहि,
कांकरी पगन लगै पंकजकै दलसी॥
कामदसों कानन कपूर ऐसी धूरिलगै,
पदसों पहार नदी लागतहै नलसी।
घाम चांदनीसों लगै इन्द्रसों लगदि रवि,
मग मखतूल सों मही हूं मखमलसी ॥ ३९ ॥

दोहा--सजिसारँग सारँग नयनि, सुनि सारँग वन माँह।
भर दुपहर हरिपै चली, निरखि नेहकी छाँह॥४०॥

अथ कृष्ण अभिसारिकाका उदाहरण--सवैया॥

सांवरी सारी सखीसँगसांवरीसांवरेधारि विभूषणध्वैकै।
त्यों पदमाकर सांवरेईअंग रागनिआंगीरचीकुच द्वैकै॥
सांवरी रैनिमें सांवरीपै घहरै घनघोरघटा क्षितिछवैकै।
सांवरी पामरी कीदै खुहीवलि सांवरेपैचलीसांवरीह्वैकै ४१॥

दोहा--कारी निशि कारीघटा, कचरति कारेनाग।
कारे कान्हरपै चली, अजब लगनकी लाग ॥४२॥

शुक्ल अभिसारिका ॥

कवित्त--सजि ब्रजचन्दपै चली यों मुख चन्द्र जाको,
चन्द्र चांदनी को मुख मन्द सों करत जात।

कहैं पदमाकर त्यों सहज सुगन्धही के,
पुंज वन कुंजनमें कंज से भरत जात ॥
धरत जहांई जहां पग है सु प्यारी तहां,
मंजुल मँजीठही की माठ सी ढरत जात ।
हारन ते हीरे सेत सारीके किनारनते,
वारन ते मुक्ताहू हजारन झरत जात ॥ ४३ ॥

दोहा--युवति जुन्हाई सों न कछु, और भेद अवरेखि ।
तिय आगम पिय जानिगो, चटक चांदनी पेखि ॥
चलन चहै परदेशको, जातियको जब कन्त ।
ताहि प्रवत्स्यत्प्रेयसी, कहत सुकवि मतिमन्त ॥

अथ मुग्धा प्रवत्स्यत्पतिका उदाहरण---सवैया ॥

सेजपरीसफरीसीपलोटतज्योंज्योंघटा घनकी गरजैरी ।
त्योंपदमाकर लाजनितैं नकहेदुलहीहियकी हरजैरी ॥
आलीकछूकोकछू उपचार करै पै नपाइसकै सरजैरी ।
जाहि न ऐसेमय मथुरै यह कोउ न कान्हरकोबरजैरी ॥
दोहा--बोलत बोल नवली विकल, घरघराव सब गात ।
नवयौवनके आगमन, सुनिपियगमन प्रभात ॥४७॥

अथ मध्या प्रवत्स्यत्प्रेयसीका उदाहरण--सवैया ॥

गो गृह काजगुवालनके कहै देखिबेकोकहूंदूरिके खेरो ।
मांगि विदालयेमोहनीसों पदमाकरमोहन होत सबेरो ॥
फेटगहीनगहीबहियां नगरी गहि गोविन्द गौनतेफेरो ।
गोरीगुलाबके फूलनको गजरा लैगोपालकीगैलमेंगेरो ॥

दोहा–सुनि सखीनमुख शशिमुखी, बलम जाहिंगे दूरि ।
बूझ्यो चहति वियोगिनी, जिय ज्यावनकी मूरि ॥ ४९ ॥

प्रौढा प्रवत्स्यत्पतिका ॥

कवित्त–सौदिन को मारग तहांको बेगिमांगीबिदा,
प्यारी पदमाकर प्रभात राति बीते पर ।
सो सुनि पियारी पिय गमन बरायबे को,
आंसुन अन्हाइ बोली आसन सुतीते पर ॥
बालम बिदेश तुम जातहो तौ जाउ पर,
सांची कहिजाउ कब ऐहौ भौन रीते पर ।
पहरके भीतरकै दो पहर भीतरहीं,
तीसरे पहर कैधौं सांझही व्यतीते पर ॥ ५० ॥

पुनर्यथा सवैया ॥

जात हैं तो अब जानदेरी छिनमेंचलबेकी नबातचलै हैं ॥
त्यों पदमाकर पौनके झूँकन कैलियाकूकनिको सहिलै हैं ॥
बेउल हैं बनबाग बिहार निहारि निहारि जबै अकुलै हैं ।
जैहैं न फेरिफिरेंबर ऐहैं सुगांवते बाहेर पांव न दैहैं ॥ ५१ ॥
दोहा–अशन चले आंसू चले चले मैनकेबाण ।
रसन गमन सनिसुखचले, चलत चलैंगेप्राण ॥ ५२ ॥

अथ परकीया प्रवत्स्यत्प्रेयसी ॥ सवैया ॥

जो उरझान नहीं झरसी मृदु मालती मालब है मगनाखै ।
नेहवती युवती पदमाकर पानी न पानकछू अभिलाखै ॥
झांकि झरोखे रही कबकी दबकीदबकी सुमनैमन भाखै ।

कोउ न ऐसो हितूहमरो जुपरोसिनके पियको गहिराखै ॥

दोहा—ननँद चाहसुनि चलनकी, बरजतक्योंन सुकन्त ।
आवत वनबिरहीनको, बैरी बधिक बसन्त ॥५४॥

गणिका प्रवत्स्यत्प्रेयसी ॥ सवैया ॥

आँखिनके अँसुवानिहीसों निजधामही धामधराभारिजै हैं ।
त्यों पदमाकरधीर समीरन धीरधनी कहु क्यों धारिजै हैं ॥
जो तजि मोहिंचलोगेकहूंतोइतीबिरहागिनियां आरिजै हैं ॥
जैहैं कहां कछुरावरेकोहमरेहियको तोहराजारिजै हैं ॥५५॥

दोहा—फवत फाग फजियतबडी, चलनचहत यदुराय ।
को फिरि जाइ रिझाइबो, ध्वनि धमारिकोगाय॥५६॥
आवत बलम बिदेशते, हर्षित होय जु बाम ।
आगम पतिका नायका, ताहिकहत रसधाम ॥५७॥

मुग्धा आगत पतिका ॥

कवित्त—कानि सुनि आयसु सुजान प्राण प्रीतमको,
आनि सखियान सजे सुन्दरीके आस पास ।
कहै पदमाकर सुपन्नन को हौज हरे,
ललित लबालब भरे हैं जल बाँस बाँस ॥
गूँदि गैंदैगुलगंज गोहर न गज गुल,
गुपत गुलाबी गुलगजरे गुलाब पास ।
खासे खसबीजन सुखौन पौन खाने खुले,
खसके खजाने खसखानेखूबखसखास ॥ ५८ ॥

दोहा—आवत लेन द्विरागमन, रमणि सुनत यह बानि ॥
हरषिछपाक्नहित भटू, रही पौढ़ि पटतानि ॥५९॥

मध्या आगत पतिका—सवैया ॥

नँदगांवते आइगो नन्दलला लखि लाड़िली ताहिरिझायरही
मुख घूँघट घालिसकै नहिं माइके माइके पीछे दुराय रही ॥
उचके कुच कीरनकी पदमाकर कैसी कछू छबि छाइरही
ललचाय रही सकुचाय रही शिरनाय रही मुसकायरही ६०॥
दोहा—बिछुरिमिले पियतीय को, निरखत सुमुखिस्वरूप ॥
कछु उराहनो देनको, फरकत अधरअनूप ॥ ६१ ॥

प्रौढा आगत पतिका ॥

कवित्त—आजु दिन कान्ह आगमनके बधाये सुनि,
छाये मग फूलन सुहाये थल थलके ।
कहै पदमाकर त्यों आरती उतारिबे को,
थारनमें दीपहार हारनके छलके ॥
कञ्चनके कलश भराये भूरि पन्ननके,
तानो तुङ्ग तोरन तहांई झलाझलके ।
पौरके दुवारेते लगाय केलि मन्दिर लौं,
पदमनि पांवडे पसारे मखमल के ॥६२॥
दोहा—आवत कन्त विदेशते, हौं ठानक मुदमान
मानहुँगी जब करहिंगे; न पुनि गमनकी आन ६३

परकीया आगतपतिका—सवैया ॥

एकै चलै रसगोरसलै अरु एकै चल मग फूल बिछावत ॥

त्यों पदमाकर गावत गीत सुएकै चल उर आनँदछावत ।
यों नँदनन्दनिहारिबेको नँदगांवके लोग चले सब धावत ॥
आवत कान्ह बने बनते अब प्राण परोसे परोसिनपावत ।
दोहा—रमनि रङ्ग औरो भयो, गयो विरहको शूल ॥
आगो नैहर सो जो सुनि, वहै वैद रस मूल ॥६५॥

गणिका आगत पतिका उदाहरण--सवैया ॥

आवतनाह उछाह भरे अवलोकिवे को निज नाटक शाला ।
हौं नचिगाय रिझावहुँगी पदमाकर त्यों रचिरूप रसाला ॥
ये शुक मेरे सुमेरे कहे यों इते कहिबोलियो वैनविशाला ।
कंत विदेश रहेहो जितै दिन देहु तितै मुक्तानिकीमाला॥६६॥
दोहा—वे आये ल्यायेकहा, यह देखनके काज ॥
सखिन पढ़ावति शशिमुखी, सजत आपनीसाज ६७
विविध कही ये सब तिया, प्रथम उत्तमामानि ॥
बहुरि मध्यमा दूसरी, तीजी अधमा जानि ॥६८॥

अथ उत्तमाका लक्षण ॥

दोहा—सुपिय दोष लखि सुनिजुतिय, धरे न हियमें रोष ।
ताहि उत्तमा कहत हैं, सुकवि सबैं निरदोष ॥६९॥
कवित्त—पाती लिखी सुमुखी प्रजान प्रिय गोविन्द को,
श्रीयुत सलोनेश्याम सुखनि सने रहौ ।
कहै पदमाकर तिहारिक्षेम छिन छिन,
चाहियतु प्यारे मन मुदित घने रहौ ॥
बिनती इती है कै हमेशहु हमैंवो निज,

पायनकी पूरी परिचारिका मतेरहो ।
याही में मगन मन मोहन हमारो मन,
लगनि लगाय लग मगन बनेरहौ ॥ ७० ॥
दोहा—धरति न नाह गुनाह उर, लोचन करति न लाल ।
तिय पियकीछतियाँलगी,बतियांकरति विशाल॥७१॥
पियगुनाह चित चाह लखि, करैमानसनमान ।
ताहि तीयको मध्यमा,भाषतसुकविसुजान॥७२॥

अथ मध्यमाका उदाहरण ॥

कवित्त—मन्द मन्द उरपै अनन्दहीके आँसुनकी,
करसै सुबूँदै मुकतानही के दानेसी ।
कहै पदमाकर प्रपंची पंचबाणनन,
काननकी मानपै परी त्यों घोर घानेसी ॥
ताजी त्रिवलीनमें बिराजी छबि छाजीसबै,
राजी रोम राजी कारि अमित उठानेसी ।
सोहैं पेख पीको बिहँसोहैं भये दोऊ दृग,
सोहै सुनि भौहैं गई उतरि कमानेसी ॥ ७३ ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—जाके मुख सामुहे भयोई जो चाहत मुख,
लीन्हों सो नवाई डीठि पगन अवागीरी ।
बैन सुनिबेको अति व्याकुल हुते जे कान,
तेऊ मूँदिराखे मजा मनहूं न माँगीरी ॥
झारि डारी पुलकि प्रसेदहूंनिवारिडारी,

नेक रसनाहूं त्यों भरी न कछु हांगीरी ।
एते पै रह्यो ना प्राण मोहन लटूपै भटू,
टूक टूक ह्वैके जो छटूक भई आंगीरी ७४ ॥
दोहा—रह्यो मान मनकी मनहिं; सुनत कान्हके बैन ॥
बरजि बरजि हारे तऊ, रुके न गरजी नैन ॥७५॥

अथ अधमाका लक्षण ॥

दोहा—ज्योंही ज्योंपियहितकरत, त्योंत्योंपरतिसरोष ।
ताहि कहतअधमासुकवि, निठुराईकी कोष ॥ ७६ ॥

अथ अधमाका उदाहरण - सवैया ॥

ह्वैउरझायरिझायवेकोरसरागकवित्तनकी ध्वनिछाई ॥
त्यों पदमाकर साहसकै कबहूं नविषादकी बात सुनाई ॥
सपनेहू कियोनकछूअपराधसुआपने हाथनसेजबिछाई ॥
त्योंपरिपांयमनायजऊतउबापिनिकोकछुरारिन आई ॥७७॥
दोहा—मान ठानि बैठी इतौं, सुबश नाह निज हेरि ।
कबहुँजु परवश होहि तौ, कहा करैगी फेरि ॥७८॥

इति नायिका निरूपण ॥अथ नायक निरूप्यते ॥

दोहा--सुन्दरगुण मंदिर युवा, युवति बिलोकै जाहि ।
कविता रागरसज्ञ जो, नायक कहियेताहि ॥७९॥

अथ नायक लक्षण ॥

कवित्त--जगत वशीकरण ही हरण गोपिनको,
तरुण त्रिलोकमें न तैसी सुन्दराई है ।
कहै पदमाकर कलानिको कदम्ब,

अवलंबनि शृङ्गार को सुजान सुखदाई है ॥
रसिक शिरोमणि सुराग रतनागर है,
शील गुण आगर उजागर बड़ाई है ।
ठौर ठकुराई को जु ठाकुर ठसकदार,
नन्दके कन्हाई सो सुनन्दके कन्हाई है ॥८०॥

दोहा–दौरे को न विलोकिबो, रसिक रूप अभिराम
सब सुखदायक मांचहू, लखिबेलायक श्याम ॥८१॥

नायकके भेद ॥

दोहा–त्रिविध सुनायक पति प्रथम, उपपतिवासक और ।
जो विधि सों ब्याह्यो तियन, सोई पति सबठौर८२

पतिका उदाहरण ॥ सवैया ॥

मंडपही में फिरै मडरातन जात कहूं तजिनेहकी औनौ ।
त्यों पदमाकर ताहि सराहत बात कहै जु कछू कहु कौनौ ॥
ये बडभागिनी तोसेतुहीं बलि जो लखिरावरोरूपसलौनो ।
ब्याहही ते भयेकान्हलटू तब ह्वैहै कहा जब होहिगोगौनो ॥

दोहा–आई चालि सुशशिमुखी, नख शिखरूप अपार ॥
दिनदिनतिययौवन बढत, छिनछिनतियकोप्यार ॥
सु अनुकूल दक्षिण बहुरि, शठ अरु धृष्टविचार ॥
कहैं कविन पति एक के, भेद पेखिकै चार ॥८५॥
जो परवनिताते विमुख, सानुकूल सुखदानि ॥
जु बहु तियनकी सुखदसम, सोदक्षिण गुणखानि ॥

अनुकूल का उदाहरण--सवैया ॥

एकही सेज पै सोवत हैं पदमाकर दोऊ महासुख साने ॥
सापनेमेंतियमानकियोयह देखि पिया अतिही अकुलाने ॥
जागि परे पै तऊ यह जानत पौढ़ि रही हमसों रिस ठाने ।
प्राणपियारीके पांपरिके करिसौंह गरेकीगरे लपटाने ॥
दोहा--मनमोहन तनधन सघन, रमण राधिका मोर ।
श्रीराधामुखचन्द्रको, गोकुलचन्द्र चकोर ॥ ८८ ॥

अथ दक्षिणका उदाहरण ॥

कवित्त -देखि पदमाकर गोविन्दको अनन्द भरी,
आई सजि सांझहीहै हरषहिलोरेमें ।
ये हरि हमारेई हमारे चलो झूलनको,
हेमके हिंडोरन झुलानके झकोरेमें
या बिधि बधूनके सुबैन सुन बनमाली,
मृदुमुसुक्याइ कह्यो नेहके निहोरेमें ।
काल्हि चलि झूलैंगे तिहारेई तिहारी सौंह,
आजु तुम झुलौहौ हमारेई हिंडोरेमें ॥ ८९ ॥
दोहा--निज निज मनके चुनि सबै, फूल लेहु इकबार ।
यह कहि कान्ह कदम्बकी, हरषि हलाई डार ॥९०॥
धरैलाज उरमें न कछु, करै दोष निरशंक ।
टरै न टारो कैसहूं, कह्यो धृष्ट सकलंक ॥ ९१ ॥
अथ धृष्टका उदाहरण--सवैया ॥
ठानैमजा अपनेमनकी उरआनै न रोषहु दोषदियेको

त्योंपदमाकर यौवनके मदपै मदहै मधुपान पियेको ॥
रातिकहूंरमि आयोघरै उरमानैनहीं अपराध कियेको ॥
गारिदैमारिदै टारत भावतीभावतोहोतहैहार हियेको ॥

दोहा--यदपि न बैन उचारियतु, गहि निबाहियतुबांह ।
तदपि गरेई परतहै, गजब गुनाही नांह ॥ १६ ॥
सहित काज मधुरै मधुर, बैननिकहै बनाय ।
उरअन्तर घट कपटमय, सो शठ नायकआय ॥

शठका उदाहरण–सवैया ॥

करिकन्दकोमन्द दुचन्दभईफिरि दाखनकेउरदागतीहै ॥
पदमाकरस्वादुसुधाते सिरैं मधुतेमहामाधुरीजागतीहै ॥
मनतीकहायेरी अनारनकी ये अँगूरनते अति पागती है ।
तुम बातनिसीटीकहौ रिसमें मिसरी ते मीठी हमैं लागती है॥

दोहा–हौं न कियो अपराध बलि, वृथा तानियत भौंह ।
तुम उरसिज हर परसिकै, करत रावरी सौंह १८॥
उपपति ताहि बखानहीं, जूपरबधूको मीत ।
बार बधुनको रसिकसो, बैसिक अलज अभीत ॥

अथ उपपतिका उदाहरण ॥ सवैया ॥

आछे किये कुचकंचुकीमें घटमेंनट कैसे बटाकरिबेको ।
मोदग दूपैकिये पदमाकर तो दृग छूटछटा करिबेको ॥
कीजैकहाबिधिकी बिधिको दियो दारुणलौटपटाकरिबेको ।
त्यो हियो कठिबैको कियो तियतेरो कटाक्षकठा करिबेको ॥

पुनर्यथा सवैया ॥

ऐसे कढ़े गनगोपिनके तन मानो मनोभव भाइसेकाढ़े ॥
कहै पदमाकर ग्वालनके डफ बाजि उठे गलगाजतगाढ़े ॥
छांकछकेछलहाइनमेंछिक पावैं न छैलछिनौंछबिबाढ़े ॥
केसरलौं मुख मींजिबेको रस भीजतसे करमींजतठाढ़े ॥
दोहा—जाहिर जाइ न सकै तहँ, घरहायनके त्रास।
पर रहत नित कान्ह के, प्राण परोसिन पास १००

वैसिकका उदाहरण सवैया ॥

छोरतही जुल्फुराकेछिनो छिन छाथेतहांइ उमंगअदाके।
त्यों पदमाकर जेमिसकीनके शोरघनैं मुखमोरिमजाके ॥
दैधनधामधनी अवते मनहींमन मानि समान सुधाके।
वारविलासिनतीके जपे अखराअखरा न खराअखराके ॥
दोहा—हेरिह हरनी कांति वह, सुनिसी करति सुभांति।
दियो सौंपि मनताहितौ, धनकी कहा बिसाँति॥२॥
औरो तीन प्रकारके, नायक भेद बखान।
मानीसुवसन चतुर पुनि, क्रिया चतुर पहिचान॥ ३॥
करै जुतियपै मानपिय, मानी कहिये ताहि।
करै वचनकी चातुरी, वचन चतुरसो आहि ॥४॥
करै क्रियासों चातुरी, क्रियाचतुर सो जान।
इनके उदित उदाहरण, क्रमते कहत बखान ॥५॥

मानीका उदाहरण—सवैया ॥

बालबिहालपरी कबकीदबकी यह प्रीतिकीरीतिनिहारो ॥

त्योंपदमाकर हैं नतुम्हैं सुधिकीनौजोबैरी बसन्तवगारो ॥
तातेमिलो मन भावती सों बलिह्यां ते हहाबचमानहमारो
कोकिलकी कलबानिसुनै पुनिमानरहै गोनकान्हतिहागे

दोहा—जगत जुराफा ह्वै जियत, तज्यो तेज निजभान ।
　रूसि रहे तुम पूस में, है यह कौन सयान ॥ ७ ॥
　संयुत सुमन सुबेलिसी, सेलीसी गुणग्राम ।
　लसत हवेली सी सुघर, निरखि नवेली बाम ॥ ८ ॥

वचनचतुरके उदाहरण--सवैया ॥

दाऊनंदबाबा नयशोमति न्योते गयेकहूंलैसँगभारी ।
हौंहूंइके पदमाकर पौरिमेंसूनीपरीबखरीनिशिकारी ॥
देखे न क्यों कढ़ि तेरेसुखेत पै धाइगई छुटि गायहमारी ।
ग्वालसों बोलि गोपालकह्योसुगुवालिनपै मनमोहनी डारी ॥
दोहा—बिजन बाग सकरी गली, भयो अँधेरी आय ।
　कोऊ तोहिं गहै जो इत, तौ फिर कहा बसाय॥ १० ॥

क्रिया चतुरका उदाहरण--सवैया ॥

आइसुन्योतिबुलाईभलोदिनचारिकोजाहि गोपालही भावै ।
त्यों पदमाकरकाहूकह्यो कैचलोबलिवेगही सासु बुलावै ॥
सो सुनिरोकि सकैक्योंतहां गुरुलोगनसेयहक्योंतबनावै ।
पाहुनी चाहैं चल्योजबहींतबहींहरि सासुहिंछींकत आवै ॥

दोहा--जल विहार मिस भीर में, लै चुभकी इकबार ।
　दह भीतर मिलि परसपर, दोऊ करत बिहार ॥ १२ ॥

ब्याकुल होइ जो विरहवश, बसि बिदेशमें कन्त ।
ताहीसों प्रोषित कहत, जे कोविद बुधिवन्त ॥१३॥

प्रोषितका उदाहरण ॥

कवित्त--साँझ के सलोने घन सबुज सुरंगन सों,
कैसे तो अनंग अङ्ग अङ्गनि सतावतो ।
कहै पदमाकर झकोर झिल्ली शोरनको,
मोरनको महत न कोऊ मनल्यावतो ॥
काहूबिरहीकी कही मानि लेतौ जोपै दई,
जगमें दई तौ दयासागर कहावतो ।
येरी विधि बौरी गुणसार घनोहोतो जोपै,
बिरह बनायो तौ न पावस बनावतो ॥ १४ ॥

दोहा--तजि विदेश सजिवैसही, निज निकेतमें जाय ॥
कबसमेटिभुजभेंटवी, भामिनिहियेलगाय ॥ १५ ॥
फिरिफिरि शोचतिपथिकयह, मेरोनिरखिसनेह ।
तज्योगेहनिजगेहपति, त्योंनतजैकहँदेह ॥ १६ ॥
बिकल बटोही बिरहवश, यहै रहो चित चाहि ।
मिलैजुकहुँपारसपरचो, मुरकिमिलौंतौताहि ॥ १७ ॥
बूझै जो न तियानके, ठानै विविध बिलास ।
सुअनभिज्ञनायककह्यो, वहैनायिकाभास ॥ १८ ॥

अनभिज्ञनायिका॥

कवित्त--नैननहीं सैन करै बीरी मुख दैन करै,

लैनकरै चुंबन पसारि प्रेमपाता है ॥
कहै पदमाकर त्यों चातुरी चरित्र करै,
चित्रकरै सोहे जो विचित्र रतिराताहै ॥
हाव करै भाव करै विविध विभाव करै,
बूझौ पौन एतेपै अबूझनको भ्राता है ।
ऐसी परवीनको कियो जो यह पुरुष तौ,
बीसबिसे जानी महामूरख विधाता है ॥१९॥

दोहा--करि उपाय हारी जु मैं, सन्मुख सैन बनाय ।
समुझत प्यौनइतेहुपै, कहाकीजियतु हाय ॥२०॥
जाहि जबहिं आलंबिकै, उर उपजत रसभाव ।
आलम्बन सुविभावकहि, वर्णत सब कविराव २१॥
आलम्बन शृङ्गारके, कहे भेद समुझाय ।
सकल नायकानायकहु, लक्षण लक्षिबनाय ॥२२॥
वर्णत आलम्बनहि में, दरशन चारि प्रकार ।
श्रवण चित्रशुभस्वप्नमें, पुनिपरतक्षनिहार ॥२३॥
इन चारिहु दरशननके, लक्षण नाम प्रमान ।
तिनके कहत उदाहरण, समझहुसबैसुजान ॥२४॥

श्रवण दर्शन—सवैया ॥

राधिकासों कहिआई जुतूसखि सांवरेकी मृदुमूरति जैसी ।
ताछिनते पदमाकर ताहि सुहात कछु नविसूरति वैसी ॥
मानहु नीर भरीघनकी घटा आँखिनमें रही आनिउनैसी ।
नई सुनि कान्हकथा जुविलोकहिगीतबहोइगी कैसी ॥२५॥

दोहा—सुनत कहानी कान्हकी, तीय तजी कुलकान ।
मिलन काजलागीकरन, दूतिनसों पहिचान २६॥

अथ चित्रदर्शन--सवैया ॥

चित्रके मन्दिरते इक सुन्दरीक्यों निकसीजिन्ह नेहनसाहैं ।
त्यों पदमाकर खोलि रही दृग बोलै न बोलअडोलदशा है ॥
भृङ्गी प्रसंगतैं भृङ्गही होत जुपै जगमें जड़कीट महा है ।
मोहनमीतकोचित्रलिखे भई चित्रहीसीतौ विचित्र कहाहै ॥
दोहा—हरषि उठति फिरि२ परखि, फिरपरखतचखलाय ।
मित्रचित्रपटकोनिमा, उरसों लेति लगाय ॥२८॥

अथ स्वप्नदर्शन—सवैया ॥

सनैसंकेतमें सोंधिसनी सपनेमें नई दुलही तु मिलाई ॥
हौंहूं गही पदमाकर दौरिसो भौंह मरोरतिसैजलों आई ॥
यामनकी मनहींमें रही जुसमेटि नियालै हिया सों लगाई ।
आँखैं गईं खुलिमीवीसुनै सखिहाइमैं नीवीनखोलनपाई ।
दोहा—सुन्दरि सपनेमें लख्यो, निशिमें नन्दकिशोर ।
होत भोर लै दधि चली, पूंछत सकरीखोर ॥३०॥

प्रत्यक्ष दर्शनका उदाहरण—सवैया ॥

आई भले हो चली सखियानमें पाईगोविन्दकिरूपकिझाँकी ।
त्यों पदमाकर हारदियो गृहकाजकहा अरुलाज कहांकी ॥
है नखते शिखलों मृदुमाधुरीबांकियै भौंहैंविलोकनिबाँकी ।
देखि रहीदृगटारत नाहिं नैसुन्दर श्यामसलोनेकि झाँकी ॥
दोहा—हौं लखि आई लखहुगी, लखै न क्यों लोग ।

निशि दिन सांचहु साँवरो, दुगुन देखिबे योग ॥ ३२ ॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेन्द्र श्री सवाई महाराज जगत्सिंहाज्ञया मथुरा स्थाने मोहनलाल भट्टात्मज कवि पद्माकर विरचित जगद्विनोद नाम काव्ये शृङ्गार रसालंबन विभाव प्रकरणम् ॥ १ ॥

अथ उद्दीपन विभागलक्षण ।

दोहा—जिनहिं बिलोकतही तुरत, रस उद्दीपन होत ।
उद्दीपन सुविभाव है, कहत कविनको गोत ॥१॥
सखा सखी दूती सुवन, उपवन षट्ऋतु पौन ।
उद्दीपनहि विभावमें, वर्णत कविमति भौन ॥ २ ॥
चन्द्र चांदनी चन्दनहु, पुहुप पराग समेत ।
योंहीं और शृङ्गार सब, उद्दीपनके हेत ॥ ३ ॥
कहे जु नायकके सबै, प्रथमहि विविध प्रकार ।
अब वर्णत हौं तिनहिंके, सचिव सखा जे चार ॥४॥
पीठमर्द बिट चेट पुनि, बहूरि विदूषकहोइ ।
मोचै मानतियान को, पीठमर्द है सोइ ॥ ५ ॥

पीठमर्दका उदाहरण ॥

कवित्त—भूमि देखौ धरकि धमारनकी धूम देखौ,
भूमि देखौ भूमित छवानै छवी छबीकै ।
कहै पद्माकर उमंग रङ्ग सींचि देखौ,
केसरिकी कीच जो रह्यो मैं ग्वाल गबिकै ॥
उड़त गुलाल देखौताननके ताल देखौ,

नाचत गोपाल देखौ लैहौ कहा दबिकै ।
झेलि देखौ झरिफ सकेलि देखौ ऐसो सुख,
मेलि देखौ मूठि खेलि देखौ फाग फबिकै ॥६॥

दोहा—हौं गोपाल पै भल चहत, तेरोई ब्रजबाल ।
चलति क्यों न नँदलाल पै, लै गुलाल रँगलाल ७
सुबिट बखानत है सुकवि, चातुर सचल कलान ।
दुहुँन मिलावै में चतुर, वहै चेट उर आन ॥८॥

विटका उदाहरण--सवैया ॥

पीतपटी लकुटी पदमाकर मोरपखाले कहूंगहि नाखी ।
यों लखिहालगुवालकोताछिनवालसखासुकलाअभिलाखी ॥
कोकिलकोकिलकेगोकुहूकुहूकोमलकाकेकीकारिका भाखी ।
रूसिरही ब्रजबालके सामुहे आइ रसालकी मञ्जरी राखी ॥
दोहा--हरिको मीत पछीत इमि, गायो बिरह बजाय ।
परत कान्हतजि मान तिय, मिली कान्हसो जाय १०

अथ चेटकका उदाहरण--सवैया ॥

साजिसँकेतमें सांवरेको सुगयोई जहां हुतोग्वालि सयानी ।
त्यों पदमाकर बोलि कह्यो बलिबैठी कहां इतही अकुलानी ॥
तौलौं न जाइतहां पहिरैकिन जौलौंरिसात न सासुजेठानी ।
हौंलखिआयोनिकुञ्जहीमें परीकाल्हिजुरावगीमाल हिरानी ॥

दोहा--उवन ग्वालि तू कित चली, ये उनये घनघोर ।
हौं आयो लखि तत्र घरै, पैठत कारो चोर ॥१२॥

स्वांग ठानि ठानै जु कछु, हांसी वचन विनोद ।
कह्यो विदूषक सों सखा, कविन मानमदमोद १३॥

अथविदूषकका उदाहरण–सवैया ॥

फागकेघोसगोपालनग्वालिनीकैइकठानिकियो मिसिफाऊ ॥
त्योंपदमाकरझोरि झमाइ सु दौरीसबै हरि पै इकहाऊ ॥
ऐसे समै वहै भीत विनोदी सुनैसुक नैनकिये डरपाऊ ॥
लै हर मूसर ऊसरह्वै कहूं आयो तहांबनिकै बलदाऊ ॥

दोहा–कटि हलाय हलकाय कछु, अद्भुत ख्याल बनाय ।
अस को जाहि न फागमें, परगट दियो हँसाय ॥ १५॥

इति सखा ।

अथ सखी ॥

दोहा--जिनसों नायक नायिका, राख कछु न दुराव ।
सखी कहावैं तेसुघर, सांचो सरल सुभाव ॥ १६ ॥
काज सखिनके चारि ये, मण्डन शिक्षा दान ।
उपालम्भ परिहास पुनि, वर्णत सुकवि सुजान ॥ १७॥
मण्डन तियहि शृँगारिबो, शिक्षा विनय विलास ।
उपालम्भ सो उरहनो, हँसी करब परिहास ॥ १८॥

मण्डनका उदारहण–सवैया ॥

मांगसवारिशृँगारिसुधारनि बेनी गुहीजु छुबानिलोंछावै ।
त्यों पदमाकर यानिधि औरहूसाजिशृँगारजु श्यामको भावै ।
रीझै सखीउ लखिराधिकाकोरँगजाअङ्ग जो गहिनो पहिरावै ।

होवयोंभूषितभूषणगात ज्योंढाकतज्योति जवाहिर पावै ।

दोहा--कहा करौं जो आँगुरिन, अनी घनी चुभिजाय ॥
अनियारे चख लखि सखी,कजरादेत डराय ॥२०॥

अथ शिक्षा--सवैया ॥

झाँकतिहैकाझरोखालगीलगलागिबेको इहां झेल नहींफिर ।
त्यों पदमाकर तीखेकटाक्षन कीसरकौसरसैल नहीं फिर ॥
नयननहींकीघलाघलकै घनघावनको कछु तेल नहीं फिर ।
प्रीतिपयोनिधिमेंधुसिकै हँसिके कढ़िबोहँसिखेल नहीं फिर ।

दोहा--बहत लाज बूड़त सुमन, भ्रमत नैन तेहि ठांव ।
नेह नदीकी धारमें, तू न दीजिये पांव ॥ २२ ॥

अथ उपालम्भन ।

कवित्त--ब्रज बहिजाय न कहूं यो आई आँखिनते,
उमँगि अनोखी घटा बरषति नेहकी ।
कहै पदमाकर चलावै , खान पानकीको,
प्राणन परी हैं आनि दहसति देहकी ॥
चाहिये न ऐसो वृषभानुकी किशोरी तोहिं,
आई दै दगा जो ठीक ठाकुर सनेहकी ।
गोकुलकी कुलकी न गैलकी गोपालै सुधि,
गोरस की रसकी न गौवन न गेहकी ॥ २३ ॥

दोहा-कौन भांति आयेनिरखि, तुमवहँ नन्दकिशोर ।
भरभराति भामिनि परी, बनघराति घनघोर ॥

अथ परिहास उदाहरण सवैया ॥

आई भले दुत चाल तू चातुर आतुर मोहनके मनभाई।
सौतिनके सरको पदमाकर पाइ कहां व इती चतुराई ॥
मैं न सिखाईसिखाई समै नहिंयों कहि रैनिकीबातजताई।
ऊपर ग्वालि गोपाल तरे सुइरे हँसि यों तसवीरदिखाई ॥

दोहा--को तेरो यह साँवरो, यों बूझ्यो सखिआय।
मुखते कही न बात कछु, रही सुमुखिमुखनाय ॥

अथ दूती लक्षणम् ॥

दोहा—दूतपने मेंही सदा. जो तिय परमप्रवीन।
उत्तम मध्यम अधम हैं, सो दूती बिधि तीन २७॥
हरै शोच उचरै बचन, मधुर मधुर हितमानि।
सो दूती कही, रस ग्रन्थनमें जानि ॥ २८ ॥

अथ उत्तमा दूतीको उदाहरण ॥

कवित्त—गोकुलकी गलिन गलिन यह फैली बात,
कान्है नन्दरानी वृषभानु भौन ब्याहती ॥
कहै पदमाकर यहांई त्यों तिहारो चलै,
ब्याहको चलन वहै साँवरो सराहती ॥
शोचति कहाहौ कहा करिहैं चवाइनये,
आनँदकी अवलीन कहा अवगाहती।
प्यारो उपपति तै सुहोत अनुकूल तुम,
प्यारी परकीयाते स्वकीया होन चाहती ॥२९॥

दोहा—काल्हि कालिन्दीके निकट, निरखि रहेहौ जाहिं ।
आई खेलन फाग वह, तुमहींसों चितचाहिं ॥ ३० ॥
कछुक मधुर कछुकछु परुष, कहै बचन जो आय ।
ताहीको कवि कहत हैं, मध्यम दूती गाय ॥ ३१ ॥

अथ मध्यम दूतीको उदाहरण—सवैया ।

बैनसुधाके सुधासी हँसी बसुधामें सुधाकी सटाकरती है ।
त्यों पदमाकर बारहिंबार सुबार बगारि लटा करती है ॥
बीरविचारे बटोहिनपै इककाजही तों यों लटा करती है ।
बिज्जुछटासी अटापै चढ़ी सुकटाक्षनिघालिकटा करती है ॥

दोहा—कुञ्ज भवनलों भावते, कैसे सुकहि सु आय ।
जावक रँग भारनि भटु, मगमें धरति न पांय ३३ ॥
कै पियसों कै तियहिसों, कहै परुषही बैन ।
अधम दूतिका कहत हैं, ताहीसों मति ऐन ॥ ३४ ॥

अथ मध्यमाको उदाहरण—सवैया ॥

ऐहै न फेर गई जो निशातनु यौवन है घनकी परछाहीं ।
त्यों पदमाकर क्यों न मिलै उठि योंनिबहैगोननेहसदाहीं ।
कौन सयानि जोकान्ह सुजानसोंठानिगुमान रहीमनमाहीं ।
एकै जु कञ्जकली न खिली तो कहोकहूं भौंरको ठोरहै नाहीं ।

दोहा--कै गुमान गुणरूपके तै न ठान गुणमान ।
मनमोहन चितचढ़िरही, तोसीकिती न आन ॥ ३६ ॥
द्वै दूतीके काज ये, बिरह निवेदन एक ।
संघट्टन दूजी कह्यो, सुकवि न सहितविवेक ॥ ३७ ॥

विरहव्यथानि सुनायकै, विरहनिवेदन जानि ।
दोउनकोजुमिलाइबो, सो संघट्टनमानि ॥ ३८ ॥

अथ विरहनिवेदनको उदाहरण ॥

कवित्त—आईतजिहौंतोताहितरनितनूजा तीर,
ताकि ताकि तारापति तरफति तातीसी ।
कहै पदमाकर घरीकही में घनश्याम,
काम तौक तलवाज कुंजनह्वै करतीसी ॥
याहीं छिनवाहीसोन मोहनमिलौगे जोपै,
लगनि लगाई एती अगिनिअवातीसी ।
रावरी दुहाई तौ बुझाई न बुझेगी फेर,
नेह भरी नागरी की देह दियाबातीसी ॥ ३९ ॥

दोहा—को जिवावतो आजुलौं, बाढ़े विरह बलाय ।
होति जु पैन नहा इसी, ताकी तनक सहाय ॥४०॥

उदाहरण ॥

कवित्त—तासनकी गिलमें गलीचा मखतूलनके,
झरपै झुमाऊ रही झूमि रंगद्वारीमें ।
कहै पदमाकर सुपदीप मणि मालिनकी,
लालनकी सेजफूल जालन समारीमें ॥
जैसै तैसे नितछलबलसों छबीली वह,
छिनक छबीलीको मिलाय दई प्यारीमें ।
छूटि भाजी करेते सु करके विचित्र गति,
चित्र कैसी पूतरी न पाई चित्रसारीमें ॥ ४१ ॥

दोहा--गोरी को जु गोपाल को, होरीके मिस ल्याय ।
विजन सांकरी खोरिमें, दोऊदिये मिलाय ॥४२॥
आपुहि अपनो दूतपन, करै जु अपने काज ।
ताहि स्वयंदूती कहत, ग्रन्थनमें कविराज ॥ ४३ ॥

अथ स्वयंदूतिका का उदाहरण सवैया ॥

रूपिकहूंकढ़िमाली गयो गई ताहिमनावनसासु उताली ॥
त्यों पदमाकरन्हाननदीजेहुतींसजनी सँग नाचन वाली ॥
मंजु महाछबि की कचकी यह नीकीनिकुंजपरीसबखाली ॥
हौंइहबागकीमालिनिहौंइतआयभलेतुमहौवनमाली ॥ ४४ ॥

दोहा--मोहींसों किन भेंटले, जौलौं मिलै न बाम ।
शीत भीत तेरो हियो, मेरो हियो हमाम ॥ ४५ ॥

षट्ऋतु वर्णन--अथ वसन्त ॥

कवित्त--कूलनमें केलिमें कछारनमें कुंजनमें,
क्यारिनमें कलिन कलीन किलकंत है।
कहै पदमाकर परागनमें पानहूं में,
पाननमें पीकमें पलाशन पगंत है ॥
हारमें दिशान में दुनीमें देश देशनमें,
देखो दीप दीपनमें दीपत दिगंत है ।
बीथिन में ब्रजमें नवेलिन में बेलिन में,
बनन में बागनमें बगरो बसंत है ॥४६॥
और भांति कुंजनमें गुंजरत भौंर भीर,

और डौर झौरनमें बौरनके ह्वै गये ।
कहै पदमाकर सु और भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल और छबि छवै गये ॥
और भाँति बिहंग समाजमें अवाज होत,
ऐसो ऋतुराजके न आजदिन ह्वै गये ।
औरै रस औरै रीति औरै राग औरै रंग,
औरै तन औरै मन औरै वन ह्वै गये॥४७॥
पात बिन कीन्हें ऐसी भांति गनबेलिनके,
परत न चीन्हे जे ये लरजत लुंजहैं ।
कहै पदमाकर बिसासी या बसन्तकेसु,
ऐसे उतपात गात गोपिनके भुंजहैं ॥
ऊधो यह सूधोसोसँदेशो कहि दीजो भले,
हरिसों हमारे ह्यां न फूले बन कुंजहैं ।
किंशुक गुलाबकचनार और अनारनकी,
डारनपै डोलत अँगारनके पुंजहैं ॥४८॥

सवैया ॥

ये ब्रजचन्द्र चलोकिन वाब्रजलूकै बसन्तकी ऊकनलागी ।
त्योंपदमाकर पेखोपलाशन पावक सीमानो फूंकन लागी ॥
वैब्रजबारी विचारीबधू बनवारी हियेलौं सुहूकन लागी ।
कारीकुरूप कसाइनैपै सुकुहूंकुहूं क्वैलिया कूकन लागी ॥

अथ ग्रीष्म ऋतु वर्णन ॥

कवित्त–कहरै फुहार नीर नहर नदीसी बहै,

छहरै छबीन छाम छीटिनकी छाटी है
कहै पदमाकर त्यों जेठकी जलाकैं तहां,
पावैं क्यों प्रवेश बेसबेलिनकी बाटी है ॥
बारहू दरीनबीच चारहू तरफ तैसो,
बरफ बिछाय तापै शीतल सु पाटी है।
गजक अँगूरकी अँगूरसे उँचोहै कुच,
आसव अँगूरको अँगूरहीकी टाटी है ॥५०॥

अथ वर्षाऋतु वर्णन

कवित्त—मल्लिकान मंजुल मलिन्द मतवारे मिले,
मन्द मन्द मारुत मुहीम मनसाकी है।
कहै पदमाकर त्यों नदन नदीन तित,
नागर नवेलिनकी नजर निशाकी है ॥
दौरत दरेरो देत दादुर सु दूंदै दीह,
दामिनी दमंकनि दिशानि में दसाकी है।
बद्दलनि बुन्दनि बिलोको बगुलान बाग,
बंगला नवेलिन बहार बरसाकीहै ॥ ५१ ॥
चंचला चमाकै चहूं ओरनते चाह भरी,
चरज गईती फेर चरजन लागी री।
कहै पदमाकर लवंगनकी लोनी लता,
लरज गईती फेर लरजन लागी री ॥
कैसे धरो धीर बीर त्रिविधसमीरै तन,

तरज गईती फेर तरजन लागी री।
घुमड घमण्ड घटा बनकी घनेरी अबै,
गरज गईती फेर गरजन लागी री ॥५२॥
बरषत मेह नेह सरसत अङ्ग अङ्ग,
झरसत देह जैसे जरत जवासो है।
कहै पदमाकर कालिन्दीके कदम्बन पै,
मधुपन कीन्हों आइ महत मवासो है,
ऊधो यह ऊधम जताइ दीजो मोहन को,
ब्रज सो सुवासो भयो अगिनि अवासो है।
पातिकी पपीहा जलपान को न प्यासो कहा,
व्यथित वियोगिनके प्राणनको प्यासो है ॥५३॥

अथ शरदऋतु वर्णन ॥

कवित्त—तालनपै तालपै तमालनपै मालन पै,
वृन्दावन बीथिन बहार बंशीबट पै।
कहै पदमाकर अखण्ड रासमण्डल पै,
मण्डित उमड़ि महा कालिन्दीके तट पै॥
क्षितिपर छानपर छाजत छतानपर,
ललित लतानपर लाड़िली के लट पै।
आई भले छाई यह शरद जुन्हाई जिहि,
पाई छबि आजुहि कन्हाईके मुकुट पै ५४॥
खनक चुरीनकी त्यों ठनक मृदंगनकी,
रुनुक झुनुकसुर नूपुरके जालको॥

कहै पदमाकर त्यों बाँसुरीकी ध्वनि मिलि,
रह्यो बांधि सरस सनाको एक तालको ॥
देखतै बनत पै न कहत बनै री कछु,
विविध बिलास यों हुलास इक ख्याल को ।
चन्द्र छवि राश चांदनीको परकाश,
राधिकाको मन्दहासरासमण्डलगोपालको ५५॥

अथ हेमन्त ऋतु वर्णन ॥

कवित्त--अगरकी धूप मृगमदकी सुगन्धवर,
बसन बिशाल जाल अंग ढाकियतु है ।
कहै पदमाकर सु पौन को न गोन जहां,
ऐसे भौन उमँगि उमँगि छाकियतु है ॥
भोग औ सँयोग हित सुरित हिमन्तही में,
एते और सुखद सुहाय बाकियतु है ।
तानकी तरंग तरुणापन तरणि तेज,
तेल तूल तरुणि तमाल ताकियतु है ॥ ५६ ॥
गुलगुली गिलमें गलीचा हैं गुणीजन हैं,
चांदनी हैं चिक हैं चिरागनकी माला हैं ॥
कहैं पदमाकर त्यों गजक गिजा हैं सजी,
सेज हैं सुराही हैं सुराहैं और प्याला हैं ॥
शिशिरके पालाको न व्यापत कसाला तिन्हैं,
जिनकै अधीन एते उदिन ममाला हैं ॥

तानतुकतालाहैं बिनोदके रसाला हैं,
सुबालाहैं दुशालाहैं बिशाला चित्रशालाहैं ॥५७॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराजराजराजेंद्र श्री सवाई
महाराज जगत्सिंहाज्ञया मथुरास्थाने मोहनलाल
भट्टात्मज कवि पद्माकरविरचित जगद्विनोदं
नाम काव्ये आलंबन विभाव
प्रकरणम् ॥ २ ॥

अथ अनुभव ॥

दोहा—जिनहींते रति भावको, चितमें अनुभव होत ।
ते अनुभव श्रृङ्गारके, वर्णत हैं कविगोत ॥ १ ॥
सात्विक भाव स्वभाव धृत, आनँद अंग विकास ।
इनहींते रतिभावको, परकट होत विलास ।

अथ अनुभवका उदाहरण ॥

कवित्त—गोरसको लूटिबो न छूटिबो छराकोगनै,
टूटिबो गनै न कछू मोतिनके मालको ।
कहै पदमाकर गुवालिनी गुनीलीहेरि,
हरषै हँसैयो करै झूठो झूठे ख्यालको ॥
हांकरति नाकरति नेहकी निशा करति,
सांकरी गलीमें रंगराखति रसालको ।
दीबो दधिदानको सु कैसे ताहि भावत है;
जाहि मनं भायो झार झगरो गोपालको ॥३॥

दोहा—मृदुमुसकाय उठाय भुज, क्षण घूँघुट उलटारि ॥
कोधनि ऐसी जाहि तू, इकटक रही निहारि ॥४॥

स्तम्भस्वेद रोमांचकहि, बहुरि कहत स्वरभंग ॥
कम्प वरण वैवर्ण्य पुनि, आंसू प्रलय प्रसंग ॥ ५ ॥
अन्तर्गत अनुमान में, आठहु सात्विक भाय ॥
जृम्भा नवम बखानही, जे कवीनके राय ॥ ६ ॥
हर्ष लाज भय आदिते, जबै अंग थकि जात ॥
स्तम्भ कहत तासों सबै, रसग्रंथनिमरसात ॥ ७ ॥

अथ स्तम्भ-सवैया ॥

या अनुरागकी फागलखो जहँरागतीराग किशोरकिशोरी ॥
त्यों पदमाकरघालीघली फिरलालहीलालगुलालकी झोरी ॥
जैसीकितैसी रही पिचकीकर काहून केसरिरंगमें बोरी ॥
गोरिनके रँग भीजिगो साँवरो साँवरेकेरंगभीजिसुगोरी॥८॥

दोहा-पियहिपरखितिय थकिरही, बुझेउ सखिननिहार ॥
चलतिक्योंनक्योंचलहुमग, परतनपगरँगभार ॥ ९ ॥
रोष लाज उर हर्ष श्रम, इनहींते जो होत ॥
अंगअंग जाहिरसलिल, स्वेदकहत कवि गोत ॥१०॥

स्वेदका उदाहरण ॥

कवित्त-येरी बलबीरके अहीरनकी भीरनमें,
सिमिटि समीरन अंबीरनको अटाभयो ।
कहै पदमाकर मनोज मनमौज नहीं,
मनकेहटामें पुनिप्रेमको पटाभयो ॥
नेहीनँदलालकी गुलालकी चलाचलपे.
राजे त्यों तन वपसी जघन घटाभयो ।

चोरिचखचोटिन चलाक चित्तचोरी भयो,
लूटिगई लाज कुलकानिको कटाभयो ॥ ११ ॥

दोहा--यों श्रम सीकर सुमुखते, परत कुचनपर वेश ।
उदित चन्द्र मुकुता छतनि, पूजत मनहुँ महेश ॥
शीतभीत हरयादिते, उठे रोग समुहाय ॥ १२ ॥
ताहि कहत रोमांचहैं,सुकविनके समुदाय ॥१३॥

अथ रोमांच--सवैया ॥

कैधों डरी तूखरीजलजन्तुते कैअङ्गमारसिवार भयो है ।
कैनखते शिखलौं पदमाकर जाहिरै झार श्रृंगार भयो है ॥
कैधों कछूतोहिं शीतबिकारहै ताहीकोया उदगार भयो है ।
कैधौंसुवारिबिहारहिमेंतनतेरोकदम्बको हार भयो है ॥१४॥

दोहा--पुलकित गात अन्हात यों, अरी खरी छबिदेत ।
उठे अंकुरे प्रेमके, मनहुं हेमके खेत ॥ १५ ॥
हर्ष भीतमद क्रोधते, वचन भाँतिहो और ।
होत जहां स्वरभङ्गको, वर्णतकवि शिरमौर ॥१६॥

अथ स्वरभंग--सवैया ॥

जातहतीनिज गोकुलमेंहरि आवैं तहां लखिकै मग सूना ।
तासो कहौं पदमाकर यों अरे सांवरो बावरे तैंहमें छूना ।
आजधौं कैसी भई सजनीउतबाविधिबोलकढ्योईकहूना ।
आनिलगायोहियोसोंहियोभरिआयोगरोकहि आयो कछूना ॥

दोहा--हौं जानत जो नहिंतुम्हैं, बोलत अधअँखरान ।
संग लगे कहुँ औरके, करिआये मदपान ॥ १८ ॥

हर्षहिते कै कोपते, कै भ्रम भयते गात ।
थरथरात तासों कहत, कम्प सुमति सरसात॥ १९॥

अथ कम्प--सवैया ॥

साजिशृँगारनि सेजपै पार भई मिसही मिसओट जिठानी ।
त्यों पदमाकर आयगो कन्तइकन्तजबैनिजतन्तमें जानी ॥
प्योलखिसुन्दरि सुन्दरसेजते योंरसकी थिरकी थहरानी ।
बातके लागे नहीं ठहरातहै ज्योंजलजातकेपातपैपानी २०॥
दोहा—थरथरात उर कर कँपत, फरकत अधर सुरंग ।
फरकि पीउ पलकनिप्रकट, पीक लीकको ढंग ॥
मोहितते कै क्रोधते, कै भयहीते जान ।
बरण होत जहँ और विधि, सो वैवर्ण्यबखान ॥२२॥

सवैया ॥

सापनेहूंनलख्यो निशिमें रतिभौनते गौनकहूं निजपीको ।
त्यों पदमाकर सौतिसंयोगन रागभयो अनभावतीजीको ॥
हारनमों हहरातहियो मुकुता सियरात सुबेसरही को ।
भावतेकेउरलागी जऊ तऊ भावतीकोमुख ह्वैगयोफीको ॥
दोहा—कहि न सकत कछु लाजते, अकथ आपनीबात ।
ज्यों ज्यों निशि नियरातहै, त्योंत्यों तियपिय रात ॥
हर्ष रोष अरु शोक भय, धूमादिकते होत ।
प्रकटनीर अँखियानमें, अश्रु कहत कविगोत ॥

अश्रुका उदाहरण ॥

कवित्त--भेद बिनजाने एती वेदन विसाहिवे को,

आजहौं गईही बाट बंशी बटवारेकी ॥
क्रीडत विलोकि नन्दवेषहू निहारि भई,
भई है विकल छवि कान्हरतिवारेकी ।
कहै पदमाकर लटू ह्वै लोट पोट भई,
चितमें चुभी जो चोट चाय चटवारेकी ॥
बावरी लौं बूझति विलोकित कहां तू बीर,
जानै कहा कोऊ प्रेम प्रेम हटवारेकी ॥२६॥

दोहा—आँखिनते आंसू उमड़ि, परत कुचनपर आन ।
जनु गिरीशके शीशपर, डारत भषि मुकतान ॥
तनमनकी न सम्हार जहँ, रहै जीवगन गोय ।
सो शृङ्गार रसमें प्रलय, वर्णत सब कवि कोय ॥

प्रलयका उदाहरण—सवैया ॥

येनँदगांवते आये इहांउत आई सुता वह कोनहूं ग्वालकी ।
त्यों पदमाकर होत जुराजुरी दोउनफागकरीइह ख्यालकी ।
डीठ चली उनकी इनपै इनकी उनपै चली मूठि गुलालकी
डीठसीडीठ लगीउनको इनके लगी मूठिसी मूठिगुलालकी ।

दोहा—दैचखचोट अँगोट मग, तजी युवति बन माहिं ।
खरी विकल कबकोपरी, सुधिशरीरकी नाहिं ॥३०॥
पिय बिछोह सम्मोहके, आलसही अवगाहि ।
छिन इनवदन विकासिबो, जृम्भाकहिये ताहि ॥

जृम्भाका उदाहरण—सवैया ॥

आरससों रससों पदमाकर चौंकि परेचखचुम्बनके किये ।

पीकभरीपलकैं झलकैंअलकैं झलकै छबिछूटि छटालिये ॥
सोमुखभाषिसकै अबको रिसकै कसकै मसकै छतियाछिये ।
रातिकी जागी प्रभातउठी अँगरातजँभात लजात लगीहिये ॥
दोहा—दरदर दौरति सदन द्युति, सम सुगन्ध सरसाति ।
लखत क्यों न आलस भरी, परी तिया जमुहाति ॥

इति सात्विकभाव वर्णनम् ॥

दोहा--अनुभावहि में जानिये, लीलादिक जे हाव ॥
ते सँयोग शृङ्गारमें, वर्णत सब कविराव ॥ ३४ ॥

हावलक्षण ॥

दोहा--प्रगट स्वभाव तियानके, निज शृङ्गारके काज ।
हाव जानिये ते सबै, यों भाषत कविराज ॥३५॥
लीला प्रथम विलास तिय, पुनि विक्षिप्त बखान ।
विभ्रम किलकिंचित बहुरि, मोट्टाइतपुनि जान ॥
बिब्बो कहुपुनि विहृत गनि, बहुरि कुट्टमितगाव ।
रस बन्धनमें ये दशहु, हाव कहत कविराव ॥३७॥
पिय तियको तिय पीउको, धरै जु भूषण चीर ।
लीलाहाव बखानहीं, ताहीको कवि धीर ॥ ३८ ॥

अथ लीलाहावका उदाहरण ॥

कवित्त—रूप रचि गोपीको गोविन्द गो तहाँई जहाँ
कान्हबनि बैठी कोऊ गोपकी कुमारी है ॥
कहै पदमाकर यों उलट कहै को कहाँ,
कसकै कन्हैया कर मसकै जु प्यारी है ॥

नारीते न होत नर नरते न होत नारी,
विधिके करेहूँ कहूँ काहू ना निहारी है।
कामकर्त्ताकी करतूत या निहारी जहां,
नारी नर होत नर होत लख्यो नारी है ॥३९॥

पुनर्यथा—सवैया ॥

ये इत घूँघटघालिचलैं उत बाजत बांसुरीकी ध्वनि खोलैं।
त्यों पदमाकर ये इतै गोरस लै निकसैं यों चुकावत मोलैं ॥
प्रेमके फन्दे सुप्रीतिकी पैठमें पैठतही है दशा यह जोलैं।
राधामयी भई श्यामकी सूरत श्याममयी भई राधिकाडोलैं ॥

दोहा—तिय बैठी पियको पहिरि, भूषण वसन विशाल ॥
समुझिपरत नहिं सखिनको, को तियको नँदलाल ४१
जो तिय पियहि रिझावई, प्रगट करै बहु भाव ॥
सुकवि विचार बखानहीं, सोविलासनिधिहाव॥४२॥

अथ विलास हाव वर्णन ॥

कवित्त—शोभित सुमनवारी सुमना सुमन वारी,
कौनहूं सुमनवारी को नहिं निहारी है।
कहै पदमाकर त्यों बांधनू बसनवारी,
वा ब्रज बसन वारी ह्यो हरनहारी है ॥
सुवरनवारी रूप सुबरनवारी सजै,
सुबरनवारी कामकरकी सम्हारी है।
सीकरनवारी स्वेद सीकरन वारी राति,
सीकरनवारी सो वशीकरन वारी है ॥४३॥

पुनर्यथा--सवैया ॥

आईही खेलन फाग इहां वृषभानुपुराते सखी सँग लीने ।
त्यों पदमाकर गावती गीत रिझावती भाव बताय नवीने ॥
कञ्चनकी पिचकी करमें लिये केसरके रँगसों अँगभीने ।
छोटीमी छाती छुटी अलकै अतिबैसकी छोटीबड़ी परवीने॥

दोहा—समुझि श्यामको सामुहें, करते बार बगार ।
मनमोहन मनहरणको, लगीं करन शृङ्गार ॥४५॥
तनक तनकही में जहां, तरुणि महाछबिदेत ॥
सोई बिक्षितहावको, वर्णत बुद्धि निकेत ॥४६॥

अथ विक्षिप्त वर्णन--सवैया ॥

मानो मयंकहिके पर्यंक निशंक लसैं सुत बंकमही को ।
त्यों पदमाकर जागि रह्योजनु भामहिये अनुरागजुपीको ॥
भूषण भार शृंगारन सों सजिसातनको जुकरैमुखफीको ।
ज्योतिको जाल बिशाल महातियभालपैलालगुलालकोटीको

दोहा—जनुमलिन्द अरविन्दविच, बस्यो चाहि मकरन्द ॥
इमि इकमृगमदबिन्दुसों, कियेसुबश ब्रजचन्द॥४८॥
होत काज कछुको कछू, हरबराय जिहि ओर ॥
विभ्रमतासों कहत हैं, हाव सबै शिरमौर ॥ ४९ ॥

विभ्रम--सवैया ॥

बछरे खरी प्यावैं गऊ तिहिको पदमाकरको मनभावत है ।
तियजानि गिरै या गहो बनमालसुसेचेलइच्योभावत है ॥
उलटी कर दोहनी मोहनीकी अंगुरीथन जानि दबावत है ।

दुहिबो जोदुहाइबोदोउनकोसखिदेखतहींबनि आवतहै ॥

दोहा--पहिर कण्ठबिच किंकिणी, कस्योकमर बिच हार ॥
हरवरायदेखनलगी, कबते नन्दकुमार ॥ ५१ ॥
होत जहां इकबारही, त्रास हास रस रोष ॥
तासों किलकिंचितकहत, हावसबै निर्दोष ॥ ५२ ॥

किलकिञ्चित--सवैया ॥

फागुनमें मधुपान समय पदमाकर आइगे श्याम सँघाती ।
अंचलऐंचोउँचायभुजाभरै भूमिगुलालकी ख्यालसुहाती ॥
झूठिहूदे झझकाय जहां तियझांकी झुकी झझकी मदमाती ।
रूसिरही वरी आधकलौंतियझारत अङ्गनिहारत छाती ॥

दोहा--चढ़त भौंहभरकत हियो, हरषत मुख मुसक्यात ।
मदछाकीतियकोजु पिय, छबिछकि परसत गात ॥
जहँ अंगनकी छबि सरस, बरतन चलन चितौन ।
ललित हाव ताको कहत, जे कवि कविता भौन ॥

अथ ललित ॥

कवित्त--सजि ब्रजचन्द्रपै चली यों मुखचन्द्र जाको,
चन्द्रचांदनीको मुखमन्द सो करत जात ।
कहै पदमाकर त्यों सहज सुगन्धहीके,
पुंज बन कुंजन में कंजसे भरत जात ॥
भरत जहांई जहां पगहै पियारी तहां,
मंजुल मँजीठहीके माठसे ढरत जात ।
बारनते हीरा श्वेत सारीकी किनारनते,
हारनते मुकुता हजारन झरत जात ॥ ५६ ॥

दोहा--सजि शृंगार कुमार तिय, कुटि लघुदृग निदराज ।
लखहु बाह आवत चली, तुमहिंमिलन तकि आज ॥
सुनत भावतेकी कथा, भाव प्रगट जहां होत ।
मोट्टायित तासों कहै, हाव कविनके गोत ॥ ५८ ॥

अथ मोट्टायित हावका उदाहरण--सवैया ॥

रूपदुहूँको दुहूंनसुन्यो सुरहैं तबते मानों संग सदाही ।
ध्यानमें दोऊ दुहूंनलखैं हरषैं अँगअँग अनंग उछाहीं ॥
मोहिरहे सबके यों दुहूँ पदमाकर और कछू सुधि नाहीं ।
मोहनको मनमोहनीमें बस्योमोहनीको मनमोहनमाहीं ॥
दोहा--बशीकरन जबते सुन्यो, श्याम तिहारो नाम ।
दृगनि मूंदि मोहित भई, पुलकि पसीजनि बाम ॥
करै निरादर ईठको, निज गुमान गर्ब बाम ।
कहत हाव बिब्बो कबहुँ, जे कवि मति अभिराम ॥

अथ बिब्बोके हावका उदाहरण--सवैया ॥

केसररंगमहावरसै सरसै रसरंग अनग चमूके ।
धूम धमारनको पदमाकर छाय अकाश अबीरकेमूके ॥
फागम्योंलाडिलीकीतिहिमेंतुम्हैं लाज न लागत गोप कहूंके ।
छैलभये छतियांछिरको फिरौकामरीओढे गुलाल केढूके ॥
दोहा--रहो देखि दृगद कहा, तुहि न लाज कछु छूत ।
म बेटी वृषभानुकी, तू अहीरको पूत ॥ ६३ ॥
लाजनिवार सकै नहीं, पियहि मिलेहू नारि ।
बिहृत हाव तासों सबै, कविजन कहत विचारि ॥

अथ विहृत हावका उदाहरण ॥ सवैया ॥

सुन्दरीको मणिमन्दिरमें लखि आये गोविन्द बनैबड़भागे।
आननओपधाकर सो पदमाकरजीवनज्योतिके जागे॥
औचक ऐंचत अञ्चलके पुलकी अँगअङ्ग हियो अनुरागे।
मैनके राजमें बोलिसकी न भटूब्रजराजसों लाजके आगे॥

दोहा--यह न बात आछी कछू, लहि यौवन परगास।
लाजहिते चुप ह्वै रहति, जो तू पियके पास॥६६॥
तन मर्दति पियके तिया, दरशावत झुठरोष।
याहि कुट्टमित कहत हैं, भाव सुकवि निर्दोष॥६७॥

अथ कुट्टमित वर्णन।

कवित्त-अञ्चलके ऐंचे चल करती दृगंचलकी,
चञ्चलाते चंचल चलैन भजिद्वारेको।
कहै पदमाकर परैसो चौंक चुम्बन में,
छलनि छपावै कुच कुंभनि किनारेको॥
छातीके छिपे पै परी रातीसी रिसाय,
गल-बाँहीं किये करै नाहिं नाहिं पै उपचारेको॥
हौंकरत शीतल तमासे तुंगती करत,
सीकरति रतिमें वशीकरति प्यारेको॥ ६८॥

दोहा--कर ऐंचत आवत इँची, तिय आपहि पियओर।
झूठिहुं रूसिरहै छिनक, छुवत छराको छोर॥६९॥
दैजुडिठाई नाहसँग, प्रकटै विविध विलास।
कहत ग्यारहें हावसो, हेला नाम प्रकास॥ ७०॥

अथ हेलाहाव वर्णन-सवैया ॥

फागकेभीर अमीरनत्योंगहि गोविंन्दलैगई भीतरगोरी ।
भायकरी मनकी पदमाकर ऊपरनाय अबीरकि झोरी ॥
छीनपितम्बर कंबरतैं सुबिदादई मीडकपोलनरोरी ।
नयननचायकहीमुसुक्यायलला फिर आइयो खेलन होरी ॥

दोहा--हरविरचिनारदनिगम, जाको लहत न पार ।
ता हरिको गहिगोपिका, गरबिगुहावतबार ॥७२॥
हानि क्रियाकछु तियप्रकट, बोधन करै जुभाव ।
रसग्रन्थनमें कहतहैं, तासों बोध कहाव ॥ ७३ ॥

अथ बोधकहाव वर्णन-सवैया ॥

दाऊअटानचढ़ पदमाकर रेखदुहूंका दुवोछबि छाई ।
त्योंव्रजबाल गोपालतहां बनमाल तमालहिकी दरशाई ॥
चन्द्रमुखी चतुराई करी तबऐसीकछू अपने मनभाई ।
अञ्चलऐंचेउरोजनतैं नँदलालको माऊतीमाल दिखाई ॥

दोहा--निरखिरहे निधि बनतरफ, नागर नन्दकुमार ।
तोरि हीरको हार तिय, लगी बगारन बार ॥७४॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंस श्रीमन्महाराजाधिराजराजेन्द्र श्रीसवाई-
महाराजजगतसिंहाज्ञयामथुरास्थाने मोहनलालभट्टा-
त्मजकविपद्माकरविरचितजगद्विनोदनामकाव्ये
अनुभावप्रकरणम् ॥ ३ ॥

अथ संचारी भाव।

दोहा—थाई भावनको जिते, अभिमुख रहै मिताव ॥
जे नवरसमें संचरै, ते संचारी भाव ॥ १ ॥
थाई भावनमें रहत, याविधि प्रगट बिलात।
ज्यों तरंग दरियावमें, उठिउठि तितहि समात ॥ २ ॥
थिरह्वै थाई भाव तब, भिरि पूरण रस होत।
थिर न रहत रस रूपलों, संचारिनको गोत ॥ ३ ॥
थाई संचारीन को, है इतनोई भेद।
असंचारिनके कहत हैं, ततीस नाम निवेद ॥ ४ ॥

कवित्त—कहि निरवेद ग्लानि शंका त्यों असूया श्रम,
मद धृति आलस विषाद मति मानिये।
चिन्ता मोह सुपन विबोध स्मृति अमरष,
गर्व उतसुक तासु अवहित्थ ठानिये ॥
दीनता हरष ब्रीडा उग्रता सु निद्रा व्याधि,
मरण अपसमार आवेगहु आनिये ॥
त्रास उन्माद पुनि जड़ता चपलताई,
तेंतिसों वितर्क नाम याही विधि जानिये ॥ ५ ॥

दोहा-याविधि संचारी सबै, वर्णतहैं कविलोग।
जे ज्यहि रसमें संचरै, तेतहँ कहिबे योग ॥ ६ ॥
डर उपजै कछु खेद लहि, विपति ईरषा ज्ञान।
ताहीते निज निदारिबो, सो निर्वेद बखान ॥ ७ ॥
अति उसाँस अरु दीनता विवरण अश्रुनिपात।
निर्वेदहूके होतहै, वे सुभाव निजगात ॥ ८ ॥

अथ निर्वेद--सवैया ॥

यों मन लालची लालचमें लगिलोभतरंगनमें अवगाह्यो ।
त्यों पदमाकर देहके गेहके नेहके काजन काहि सराह्यो ।
पापकियेपै नपातीपावन जानिकै रामको प्रेम निबाह्यो ।
चाह्यो भयो न कछू कबहूं यमराजहूँ सोवृथावैर बिसाह्यो ॥

दोहा--भयो न कोऊ होइगो, मो समान मतिमन्द ।
तजे न अबलौं विषयविष, भजे न दशरथनन्द ॥
भूखहिते कि पियासते, कैरति श्रमते अङ्ग ।
विह्वल होत लगानिसों, कम्पादिक स्वरभंग ॥ ११ ॥

अथ ग्लानिका उदाहरण--सवैया ॥

आजु लखी मृगनैनी मनोहर बेणी छुटीछहरै लबिछाई ।
टूटे हरा हियरा पै परै पदमाकर लीकसी लंकलुनाई ॥
कै रतिकेलिसकेलिसुखैकलिकेलिके भौनतेबाहिर आई ।
राजि रही राति आँखिनमें मनमें धौंकहातनमेंशिथिलाई ॥

दोहा--शिथिलगात कांपत हियो, बोलत बनत न बैन ।
करी खरी विपरीति कहुँ, कहत रँगीले नैन ॥ १३ ॥
कै अपनी दुर्नीति कै, दुवनक्रूरता मानि ।
आवै उरमें शोच अति, सो शंका पहिंचानि ॥ १४ ॥

अथ शंका ॥

कवित्त--मोहिं लखि सोवत विथोरिगो सुवेनी बनी,
तोरिगो हियेको हार छोरिगो सु गैयाको ।
कहै पदमाकर त्यों घोरिगो घनेरो दुख,

बोरिगो बिसासी आज लाजहीकी नैयाको ॥
अहित अन सो ऐसो कौन उपहास है,
शोचत खरी म परी जोवत जुन्हैयाको ॥
बूझैंगे चवैया तब कैहौं कहा दैयाइत,
पारिगोको भैया मेरी सेजपै कन्हैयाको ॥ १५॥

दोहा--लगै न कहुँ ब्रज गलिनमें, आवत जात कलंक।
निरखि चौथकोचांद यह, शोचत सुमुखिसशंक ॥
सहि न सकै सुख औरको, यहै असूया जान।
क्रोध गर्व दुख दुष्टता, ये स्वभाव अनुमान ॥ १७॥

अथ असूयाका उदाहरण ॥

कवित्त--आवत उसाँसी दुखलगै और हांसी सुनि,
दासी उरलाय कहा को नहिं दहा कियो।
कहै पदमाकर हमारे जान ऊधों उन,
तात कौन मातकौन भ्रातको कहाकियो ॥
कंकालिनि कूबरी कलंकिनि कुरूप तसी,
चेटकनि चेरी ताके चित्तको चहा कियो।
राधिकाकी कहावत कहि दीजो मोहनसों,
रसिकशिरोमणिके हायधौंकहाकियो ॥ १८॥

दोहा--जैसोको तसो मिलै, तबहीं जुरत सनेह।
ज्यों त्रिभंगतनुश्यामको, कुटिल कूबरीदेह ॥ १९॥
धन यौवन रूपादिते, कै मदादिके पान।
प्रगट होत मदभाव तहँ औरै गति बखान॥

अथ मदका उदाहरण- सवैया ॥

पूषनिशामें सुबारुणीलै बनिबैठेदृहूँमदके मतवाले ।
त्योंपदमाकर झमै झुकैघन घूमि रचै रसरंग रसाले ॥
शीतको जीतिअभीत भयेसुगनैनसखी कछुशाल दुशाले ।
छाकछकाछबिहीको पियै मदनैननके किये प्रेमके प्याले ॥

दोहा--धन मद यौवन मद महा, प्रभुताको मदपाय ।
तापर मदको मदजिन्हैं, को त्यहि सकै सिखाय ॥
अति रत अति गति ते जहां, सुअनिखेदमरमाय ।
सोश्रमतहांसुभावये, स्वेदउसाँस मनाय ॥ ७३ ॥

अथ श्रमका उदाहरण--सवैया ॥

करैतिरंगथकीथिर ह्वै पर्यंकमें प्यारी परीमुख बायकै ।
त्यों पदमाकर स्वेदकेबुन्द रहेमुक्ताहलसेतन छायकै ॥
बिन्दुरचेमेहँदीकेलसे करता परयों रह्यो आनन आयकै ।
इन्दुमनो अरबिन्दपैराजतइन्द्रवधूनके वृन्दबिछायकै ॥

दोहा--श्रम जलकनपलकन प्रगट, ललकनथकनउसाँस ।
करीखरीविपरीतरति, परीचिसासीपास । २५ ॥
साहस ज्ञान, सुसंगते, धरै धीरता चित्त ॥
ताहीसोंधृतिकहतहैं, सुकविसबैनितनित्त ॥ २६ ॥

अथ धृतिका उदाहरण--सवैया ॥

रेमनसाहसी साहसराखसुसाहससों सबजेर फिरेंगे ।
त्योंपदमाकर या सुखमें दुख त्यों दुखमें सुखसेर फिरेंगे ।

वैसही वेणु बजावत श्याम सु नाम हमारो हू टेर फिरैंगे ।
एकदिनानहिंएकदिनाकबहूंफिरवेदिनफेर फिरैंगे ॥ २७ ॥

पुनर्यथा सवैया ॥

याजगजीवनकोहै यहैफल जो छलछाँडि भजै रघुराई ।
शोधिकै संत महंतनहूं पदमाकर बात यहै ठहराई ॥
ह्वैरहेहोनी प्रयास बिना अनहोनी न ह्वै सकै कोटि उपाई ।
जो बिधिभालमें लीकलिखीसोबढ़ाई बढ़ै न घटै न घटाई ॥

दोहा—बनचर बनचर गगनचर, अजगर नगर निकाय ।
पदमाकर तिन सबनकी, खबर लेत रघुराय ॥२८॥
जागरणादिकते जहां, जो उपजत अलसानि ।
ताहीसों आलस कहत, कविकोविद जे आनि ॥

अथ आलसका उदाहरण ॥

कवित्त—गोकुलमें गोपिन गोविंदसंग खेलीफाग,
रातिभरी आलसमें ऐसी छबि छलकैं ।
देहभरी आलस कपोल रस रोरीभरे,
नींदभरे नयन कछूक झपैं झलकैं ॥
लाली भरे अधर बहालीभरे मुखबर,
कवि पदमाकर विलोकै कौन सलक ॥
भागभरे लाल औ सुहागभरे सब अङ्ग,
पीकभरी पलक अबीरभरी अलकैं ॥३१॥

दोहा—निशिजागी लागीहिये, प्रीतिउमंगतप्रात ॥
उठिनसकतआलसबलित, सहजसलोनेगात ॥३२॥

फुरै न कछु उद्योग जहँ, उपजै अतिही शोच ॥
ताहिविषादबखानहीं, जेकविसदाअपोच ॥ ३३

अथ विषाद वर्णन ॥

कवित्त—शोच न हमारे कछू त्याग मनमोहनके,
तनको न शोच जोपै योंही जरेजाइहैं ।
कहै पदमाकर न शोच अब एहू यह,
आइहैतौ आनिहै न आइहै न आइहै ॥
योगको न शोच और भोगको न शोच कछु,
यही बड़ो शोच सोतो सबनि सुहाइहै ।
कूबरीके कूबरमें बेध्योहै त्रिभंगता,
त्रिभंगको त्रिभंगी लागे कैसे मुरझाइहै ॥ ३४ ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—एकै संग हाल नन्दलाल और गुलाल दोउ,
दृगनि गये जु भरि आनँद मढ़ै नहीं ।
धाय धाय हारी पदमाकर तिहारी सौंह,
अब तो उपाय एक चित्तमें चढ़ै नहीं ॥
कैसीकरौं कहां जाऊँ कासों कहौं कौनसुनै,
कोऊ तो निकासो जासे दरदबढ़ै नहीं ।
येरी मेरी वीर जैसे तैसे इन आँखिन ते,
कढिगो अबीर पै अहीर को कढ़ै नहीं ॥ ३५ ॥

दोहा--अब न धीर धारत बनत, सुरत बिसारीकन्त ॥
पिक पापी पीकन लगे, बगरेउ बागबसन्त॥ ३६॥
नीति निगम आगमनते, उपजै भलो विचार ॥
ताहीसों मतिकहतहैं, सबग्रन्थनको सार ॥ ३७॥

अथ मतिका उदाहरण-सवैया ॥

बादही बापबदीकेबकैमति बोरदे बंजविषय बिषहीको
मानिलैया पदमाकरकीकही जोहित चाहत आपने जीको ॥
शंभुकेजीवको जीवनमूरि सदा सुखदायकहै सबहीको ।
रामहीराम कहै रसना कसना तू भजे रसनामसहीको ॥
दोहा--पाछे परन कुसंगके, पदमाकर यहि डीठ ॥
परधन खात कुपेटज्यों, पिटतबिचारीपीठ॥ ३९॥
जहां कौनहूँ बातकी, चितमें चिन्ताहोय ॥
चिंता तासों कहतहैं, कविकोविद सबकोय ॥ ४०॥

अथ चिंताका उदाहरण ॥

कवित्त--झिलतझकोर रहै यौवनको जो रहै,
समद मरोररहै शोर रहै तबसों ।
कहै पदमाकर तकैयनके मेह रहै,
नेह रहै नैनन न मेह रहै दबसों ॥
बाजत सुबैन रहै उनमद मैन रहै,
चित्तमें न चैन रहै चातकीके रबसों ।
गेहमें न नाथ रहै द्वारे ब्रजनाथ रहै,
कबलों मन हाथ रहै साथ रहै सबसों ॥ ४१ ॥

दोहा--कोमल कंज मृणालपै, किये कलानिधि बास ।
कबको ध्यान रह्योजु धारि, मित्र मिलनकी आस ॥
आपुहि अपनी देहको, ज्ञान जबै नहिं होय ।
बिरहदुःख चिंता जनित, मोह कहावत सोय ॥

अथ मोहका उदाहरण-सवैया ॥

दोउनको सुधि हैनकछू बुधिवाही बलाइमें बढ़ि बहीहै ।
त्योंपदमाकरदीजैमिलाय क्योंचंग चवायनको उमही है ॥
आजुहिकीवादिखादिखमेंदशादो उनकीनहिंजात कही है ।
मोहनमोहि रह्यो कबकोकबकी वह मोहनी मोहि रही है ॥

दोहा—सटपटाति तसबी हँसी, दीह दृगनमें मेह
सुब्रजबाल मोही परत, निमोही को नेह ॥ ४५ ॥
सुपन स्वप्नको देखिबो, जगिबो बहै बिबोध ।
सुमिरनबीती बातको, सुमृति भाव सब शोध ॥४६॥

अथ स्वप्नका उदाहरण--सवैया ॥

कांपिरहेछिनसोवतहूं कछु भाषिवोमो अनुसारि रही है ।
त्यों पदमाकर रंचरुमंचनि स्वेदके बुन्दनिधारि रही है ॥
वेषदिखादिखी के सुखमें,तनकी तनको नसम्हार रही है ।
जानतिहांमखिसापनेमेंनँदलालको नारि निहारि रही है ॥

दोहा—क्योंकरि झूठी मानिये, सखि सपनें की बात ।
जु हरि हरयो सोवत हियो, सो न पाइयत प्रात॥४८॥

अथ विबोधका उदाहरण ॥

कवित्त--अधखुली कंचुली उरोज अध आधे खुले,
अधखुले वेष नखरेखनके झलकैं ।
कहै पदमाकर नवीन अध नीबी खुली,
अधखुले छहरि छराके छोर छलकैं ॥
भोर जगि प्यारी अध ऊरध इतेकी ओर,
भाषी झिखि झिरकि उघारि अध पलकैं ।
आंख अधखुली अधखुली खिरकीहैं खुली,
अधखुली आनन पै अधखुली अलकैं ॥४९॥

दोहा--अनुरागी लागी हिये, जागी बड़ेप्रभात ।
ललित नैन बेनी छुटी, छातीपर छहरात ॥५०॥

अथ स्मृतिका उदाहरण ॥ सवैया ॥

कंचनआभाकदम्बतरेकरिकोऊगईतियतीजतियारी ।
हौंहूं गई पदमाकर त्यों चलिऔचकआईगोकुंजविहारी ॥
हेरि हिंडोरेचढायलियोकियोकौतुकसोनकह्योपरैभारी ।
फूलन वारी पियारी निकुंजकी झूलनहैनवझूलवारी ॥

दोहा--करी जुही तुम वादिना, वाके सँग बतरान ।
वहै सुमिरि फिरि फिरि तिया,राखति अपनेप्रान ॥
जहां जु अमरषहोत लखि, दूजे को अभिमान ।
अमरष तासों कहत हैं, जे कवि सदा सुजान॥५३॥

अथ अमरष वर्णन ॥

कवित्त--जैसो तै न मोसों कहूं नेकहू डरात हुतो,
ऐसो अब होहूं तोहूं नेकहू न डरिहौं ।
कहै पदमाकर प्रचंड जो परैगो तो,
उमंड करि तोसों भुजदंड ठोंकि लरिहौं ॥
चलो चलु चलो चलु बिचलन बीचहीते,
कीच बीच नीच तो कुटुंबको कचरिहौं ।
येरे दगादार मेरे पातक अपार तोहिं,
पछारि छार करिहौं॥५३॥

दोहा--गरब सु अंजनहीं बिना, कंजनको हरिलेत ।
खंजन मदभंजन अरथ, अंजन अँखियन देत ॥
बल विद्या रूपादिको, कीज जहां गुमान ।
गर्व कहत सब ताहिसों, जेकबि सुमति सुजान ॥

अथगर्वका वर्णन ॥

कवित्त--बानीके गुमान कल कोकिल कहानीकहा,
बानीकी सुबानी जाहि आवत भनै नहीं ॥
कहै पदमाकर गोराईके गुमान कुच,
कुंभनपै केसरिकी कंचुकी ठनै नहीं ॥
रूपके गुमान तिल उत्तमा न आनैउर,
आननिकाइ पाई चन्द्रकीरनैं नहीं ।
मृदुती गुमानमय तूलहू न मानै कछु,
गुणकेगुमान गुण गोरिको गनै नहीं ॥५७॥

दोहा--गुलपर गालिब कमल है, कमलन पै सुगुलाब ॥
गालिब गहबगुलाब पै, मोतनसुरभिसुभाव ॥ ५८ ॥
जहां हितूके मिलन हित, चाह रहति हियमांहिं ।
उतसुकता तासों कहत, सब ग्रन्थनमें चाहिं ॥५९॥

अथ उत्सुकता वर्णन ॥

कवित्त--ताकिये तितै तितै कुसुम्भ सींचु बोई परै,
प्यारी परवीन पाउँ धरति जितै जितै ।
कहै पदमाकर सुपौनते उताली बन-मालीपै,
चली यों बाल बासर बितै बितै ।
भारहीके डारन उतारि देत आभरन,
हीरनके हारदेत हिलिन हितै हितै ।
चांदनी के चौसर चहूँघाचौक चांदनीमें,
चांदनीसी आई चन्द चांदनी चितै चितै ॥६०॥

दोहा--सजै विभूषण वसन सब, सुपिय मिलनकी हौस ।
सह्यो परति नहिं कैसहूँ, रह्यो अधघरी यौस ॥
जो जहँकरि कछु चातुरी, दशा दुरावै आय ।
ताहीसों अवहित्थु यह, भाव कहत कविराय ॥

अथ अवहित्थुका वर्णन--सवैया ॥

जोर जगी यमुना जल धारमें धाय धसीजल केलीकीमाती ।
त्यों पदमाकर पैगचलै उछलै जब तुंग तरंग विधाती ॥
टूटे हरा छरा छटें सबै सरबोर भई अँगिया रँगराती ।
कोकहतो यह मेरी दशा गहतो नगोविंदतोमैं बहिजाती ॥

दोहा--निरखतही हरि हरषकै, रहे सु अंशू छाय ।
बूझत अलि केवल कह्यो, गयो भूमही धाय ॥६४॥
अति दुखते विरहादिते, परति जबहिं जो दीन ।
ताहि दीनता कहतहैं, जे कवित्त रसलीन ॥ ६५ ॥

अथ दीनताका उदाहरण--सवैया ॥

कैगिनतीसी इती विनती दिन तीन कलौं बहुवार सुनाई ।
त्यों पदमाकर मोहमयाकरितोहिंदयान दुखीनकी आई ॥
मेरो हराहर हार भयो अबताहि उतारि उन्हैं नदिखाई ।
ल्याईनतूकबहूंबनमालगोपालकीवापहिरीपहिराई ॥ ६६ ॥
दोहा—मुख मलीन तनछीन छबि, परी सेजपर दीन ।
लेत क्यों न सुधि सांवरे, नेहो निपट नवीन ॥६७॥
जहां कौनहूं बातते, उर उपजत आनन्द ।
प्रकटैं पुलक प्रस्वेदते, कहत हरष कविवृन्द ॥६८॥

अथ हर्षका उदाहरण—सवैया ॥

जगंजीवनको पलजानि परचो धनि नैननिकोठहरैयतुहै ।
पदमाकर त्यो हुलसै पुलकैं तनुसिंधु सुधाके अन्हैय तुहै ।
मन पैरत सोरसके नदमें अति आनँदमें मिलिजैय तुहै ।
अब ऊँचे उरोज लखै तियके सुरराजके राजसों पैयतुहै ।
दोहा—तुमहिं विलोकि विलोकिये, हुलसि रह्यो यों गात ।
आँगी में न समात उर; उरमें मृदु न समात ॥७०॥
जहां कौनहूं हेतते, उर उपजत अति लाज ।
व्रीडा तासों कहतहैं, सुकविनके शिरताज ॥ ७१ ॥

अथ क्रीडाको उदाहरण—सवैया ॥

कालिहपरीफिरसाजवीस्यानसुआजुतौ नैनसोंनैनमिलाले ।
त्योंपद्माकरप्रीतिप्रतीतिमें नीतिकीरीति महाउरशाले ॥
ये दिन यौवन जातोइतै तन लाज इती तु करैगीकहांले ।
नेकतौदेखनदेमुखचन्द्रसोंचन्द्रमुखीमतिघूँघुटघाले ॥ ७२ ॥

दोहा--प्रथम समागम की कथा, बूझी सखिन जुआय ।
मुख नवाय सकुचाय तिय, रही सुघूँघुटनाय ॥
निरदैपनसों उग्रता, कहत सुमति सबकोय ।
शयन कहावत सोहबो, वहै सु निद्रा होय॥७४॥

अथ उग्रताका उदाहरण ॥

कवित्त--सिंधुके सुपूत सुत सिंधु तनयाके बंधु,
मंदिर अमंद शुभ बुंदर सुधाई के ।
कहै पदमाकर गिरीशकेबसे हौ शीश,
तारनके ईश कुल कारन कन्हाई के ॥
हालही के विरह विचारी ब्रजबालही पै,
ज्वाल से जगावत गुआलसी लुन्हाई के ।
येरे मतिमन्द चन्द आवत न तोहिं लाज,
ह्वैकै द्विजराज काज करत कसाई के ॥७५॥

दोहा—कहा कहौं सखि कहिको, हिय निरदैपन आज ।
तनु जारत पारतपिपति, अपतिउजारत लाज॥७६॥

अथ निद्राका उदाहरण ॥

कवित्त--चहचही चुभके चुभीहै चोंक चुंबनकी,

लहलही लांबी लटै लपटी सु लंकपर ।
कहै पदमाकर मजानि मरगजी मंजु,
मसकी सु आंगी है उरोजनके अंकपर ॥
सोई रससार पोस गन्धनि समोई स्वेद,
शीतल सुलोने लोने वदन मयंकपर ॥
किन्नरी नरीहै कै छरी है छबिदार परी,
टूटीसी परीहै कै परीहै परयंक पर ॥७७॥

दोहा—नंदनँदन नवनागरी, लखि सोचत निमूल ।
उरउबरे उरजन निरखि, रह्यो सुआननफूल ॥७८॥
विरह विवश कामादिते, तनु संतापित होय ।
ताहीसों सब कवि कहत, व्याधि कहावत सोय॥७९॥

अथ व्याधिका उदाहरण ॥

कवित्त—दूरहिते देखत व्यथा म वा वियोगिनिकी,
आई भले भाजि ह्यां तो लाज मढ़ि आवैगी ।
कहै पदमाकर सुनोहो घनश्याम जाहि,
चेतत कहूं जो एक आहि कढ़ि आवैगी ॥
सर सरितान को न सखत लगगी देर,
येती कछू जुलमिन ज्वाला बाढ़ि आवैगी ।
तातै तन तापकी कहौं मैं कहा बात मेरे,
गातहि छुवोतौ तुम्हैं ताप चढ़ि आवैगी ॥ ८० ॥

दोहा—कबकी अजब अजार मैं, परी बाम तनछाम ।

नित कोऊ मत लीजियो, चन्द्रोदयको नाम॥८१॥
प्राण त्यागि कहिये मरन, सो न वरणिबे योग।
वर्णत शूरसतीनको, सुयश हेत कविलोग ॥ ८२ ॥

अथ मरणका उदाहरण—सवैया ॥

जानकीको सुनि आरतनादसुजानि दशाननकी छलहाई।
त्यों पदमाकर नीचनिशाचरआइअकाशमें आडचोतहांई ॥
रावण ऐसे महारिपुसों अति युद्ध कियो अपने बलताई।
सोहित श्रीरघुराजके काजपै जीवतजै तो जटायुकीनाई ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—पाली पैजपनकी प्रवेशकरि पावकसों,
पौनसे सिताब सहगौनका गमीभई।
कहै पदमाकर पताका प्रेम पूरणकी,
प्रकट पतिव्रतकी सगुनी रतीभई ॥
भूमिहू अकाशहू पतालहू सराहै सब,
जाको यशगावत प[illegible]
सुनत पयान श्रीप्रतापको पुरन्दरप,
धन्यपटरानी जोधपुरमें सतीभई ॥ ८४ ॥

दोहा--हनेराम दशशीशके; दशौशीश भुजबीस।
लैजटायुकी नजरिजनु, उड़े गीध नवतीस॥८५॥
सह दुःखादिकते जहां, होत कम्प भूपात।
अपस्मार सो फेन मुख, श्वासादिकसरसात ॥ ८६ ॥

अथ अपस्मारका उदाहरण–सवैया ॥

जा छिनते छिन सांवरे रावरे लागेकटाक्षकछू अनियारे ।
त्यों पदमाकरताछिनते तियसों अँगअंगनजात सम्हारे ॥
ह्वैहियहायलघायउसी घनघूमिगिरीपरै प्रेम तिहारे ।
नैनगयेफिरफेनबहैमुखचैनरह्यो नेहि मैनके मारे ॥ ८७ ॥
दोहा--लखि बिहाल एकै कहत, भई कहूं भयभीत ।
यकै कहत मिरगी लगी,लगी न जानत प्रीत॥८८॥
अति डरते अति नेह ते, जु उठि चालियतुवेग ।
ताही सों सब कहत हैं, संचारी आवेग ॥ ८९ ॥

अथ आवेग वर्णन ॥

कवित्त--आई संग अलिन के ननँद पठाई नीठ,
सोहब सोहाई सो सई डरी सुपट की ।
कहै पदमाकर गँभीर यमुनाके तीर,
लागी घट भरन नदेली नेह अटकी ॥
ताहि समय मोहन सुबाँसुरी बजाई तामें,
मधुर मलार गई ओर बंशीबट की ।
तानलगे लटकी रही न सुधि घूँघुटकी,
घटकी न अवघट बाटकी न घटकी ॥ ९० ॥
दोहा--सुनि आहट पिय पगनिको, रभरि भजी यों नारि ।
कहुंके कर कहु किंकिणी, कहूं सुनूपुर डारि ॥९१॥
जहां कौनहूं अहितते, उपजत कछुभय आय ।
ताहीको नितत्रासकहि, बर्णतहैं कविराय ॥ ९२ ॥

अथ त्रासका उदाहरण—सवैया ॥

ये ब्रजचन्दगोविन्द गोपालसुन्यौंनक्यौंकेतेकलामकियेमैं ।
त्यों पदमाकर आनन्दकेनँदहौं नँदनन्दन जानिलिये मैं॥
माखनचोरीके खोरिनह्वैचलेभाजिकछू भयमानि जिये मैं ।
दूरिहूंदौरिदुरयो जोचहो तौ दुरौकिनमेरे अँधेरे हिये मैं ॥
दोहा--शिशिर शीत भयभीत कछु, सुपरि प्रीतिकै पाय ।
आपहिते तजि मान तिय, मिली प्रीतिमें जाय ॥
अविचारित आचरन जो, सो उन्माद बखान ।
व्यर्थ वचन रोदन हँसी, ये स्वभाव तहँजान ॥

अथ उन्मादका उदाहरण—सवैया ॥

आपहिंआपपै रूषिरही कबहूं पुनि आपहिं आप मनावै ।
त्यों पदमाकर ताके तमालनि भेटिबेको कबहूं उठिधावै ॥
जोहारिरावरोचित्रलिखै तौकहूं कबहूं हँसिहेरि बुलावै ।
व्याकुलबालसुआलिनसोंकह्योचाहैकछूतौ कछूकहि आवै ॥
दोहा—छिनरोवतिछिनहँसिउठति, छिनबोलति छिनमौन,
छिन छिन पर छीनी परति, भईदशाधौंकौन ॥९७॥
गमनज्ञान आचरणकी, रहै न जहँ सामर्थ ॥
हित अनहित देखै सुनै, जड़ता कहत समर्थ ॥९८॥

कवित्त—आज बरसाने की नवेली अलबेली बधू,
मोहन विलोकिबेको लाज काज लैरही ।
छज्जा छज्जा झांकती झरोखनिझरोखनिह्वै,

चित्रसारी चित्रसारी चन्द्र सम ह्वैरही ॥
कहै पदमाकर त्यों निकस्यो गोविंद ताहि,
जहां तहां इकटक ताकि धरी ह्वै रही ।
छज्जावारी छकीसी उझकीसीझरोखावारी,
चित्र कैसी लिखी चित्रसारी वारी ह्वरही ॥९९॥

दोहा—हलै दुहूंन चले दुहूं, दुहुँ न विसरिगे गेह ।
इकटकदुहुँनिदुहूँ लख, अटकिअटपटेनेह ॥ १०० ॥
जहँ अति अनुरागादि ते, थिरता कछू रहै न ।
नित चित चाहै आचरण, वहै चपलता ऐन ॥ १ ॥

अथ चपलताका उदाहरण—सवैया ॥

कौतुक एकलख्योहरिह्यां पदमाकर यों तुम्हैं जाहिरकीमैं ।
कोऊ बड़े घरकी ठकुराइनि ठाढीनघातरहैं छिनकी मैं ॥
झांकतिहै कबहूझझरीन झरोखनि त्यों सिरकी सिरकी मैं ।
झांकतिहै खिरकीमें फिरैथिरकीथिरकीखिरकीखिरकी मैं ॥

दोहा—चकरीलौं सकरी गलिन, छिन आवत छिनजात ।
परी प्रेमके फन्दमें, बधू बितावत रात ॥ ३ ॥
उर उपजत सन्देह जहँ, कीजे कछू विचार ।
ताहि वितर्क विचारहौं, जे कवि सुमति उदार ॥४॥

अथ वितर्कका उदाहरण ॥

कवित्त—घोस गुण गौरिके सु गिरिजा गोसाँइनको,
आवत यहांही अति आनँद इवै रहै ॥
कहै पदमाकर प्रतापसिंह महाराज,

देखो देखिबेको दिव्य देवता तितै रहैं ॥
शैल तजि बैल तजि फैल तजि गैलनमें,
हेरत उमा को यों उमापति हितै रहैं।
गौरिन में कौन धौं हमारी गुण गौरिएहैं,
शंभु घरी चारकलौं चकृत चितै रहैं ॥ ५ ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त- वेऊ आये द्वारेही हूँ हुती अगवारे और,
द्वारे अगवारे कोऊ तौन तिहि कालमें।
कहै पदमाकर वे हरषि निरखि रहैं,
त्योंही रही हरषि निरखि नँदलाल में ॥
मोहिं तो न जान्यो गयोमेरीआलीमेरोमन,
मोहनके जाइधौं परचो है कौन ख्यालमें।
भून्यो भौंह भालमें चुभ्योकै टेढ़ी चालमें,
छक्यो कै छविजालमें कैबींध्योवनमालमें ॥ ६ ॥
दोहा--किधौं सुअधपक आममें, मानहुँ मिलो मलिन्द।
किधौं तनक ह्वै तमरह्यो, कै ठोढीको बिन्द॥१०७॥

इति श्रीकूर्मवंशावतंसश्रीमहाराजाधिराजराजेन्द्रश्रीसवाई
महाराजजगत्सिंहाज्ञया कविपद्माकरविरचितजग-
द्विनोदनामकाव्येसंचारीभावप्रकरणम् ॥ ४ ॥

अथ थायी भाव ॥

दोहा--रस अनुकूल विचार जो, उर उपजतहै आय।
थायी भाव बखानहीं, तिनहीको कबिराय ॥ १ ॥

हैसब भावन में सिरे, टरत न कोटि उपाव ।
है परिपूरण होत रस, तेई थेई भाव ॥ २ ॥
रति इकहास जु शोक पुनि, बहुरि क्रोध उत्साह ।
भय ग्लानि आचरज निर, वेद कहत कविनाह ॥ ३ ॥
नवरसके नौई इतै, थायी भाव प्रमाण ।
तिनके लक्षण लक्षसब, या विधि कहत सुजान ॥ ४ ॥
सुप्रिय चाहते होत जो, सुमन अपूरब प्रीति ।
ताहीसों रति कहतहैं, रसग्रंथनकी रीति ॥ ५ ॥

अथ रतिका उदाहरण ॥

कवित्त--सजनलगी है कहूं कबहूं शृँगारनको,
तजन लगी है कहूं ये सब सवारी की ।
चखन लगी है कछु चाह पदमाकर त्यों,
लखन लगी है मंजु मूरति मुरारी की ।
सुन्दर गोबिन्द गुण गगन लगी है कछु,
सुनन लगी है बात बाँकुरे बिहारी की ।
पगन लगी है लगी लगन हियेसों नेकु,
लगन लगी है कछु पीकी प्राणप्यारीकी ॥ ६ ॥

दोहा--कान्ह तिहारे मानको, अति आतप यह पाय ।
तिय उर अंकुर प्रेमको, जाइन कहुँ कुम्हिलाय ॥ ७ ॥
बचन रूपकी रचनते, कछुउर लहै बिकास ।
ताते परमित जो हँसनि, वहै कहीयतु हास ॥ ८ ॥

अथ हासका वर्णन ॥ पुनर्यथा—सवैया ॥

चन्द्रकला चुनि चूनरी चारु दई पहिराय सुनायसुहोरी
बेंदीविशाखारचीपदमाकर अंजन आँजि समाजिकैरोरी
लागीजबै ललितापहिरावन कान्हकीकंचुकीकेसर बोरी
हेरिहरे मुसकाइरही अँचरामुख दै वृषभानु किशोरी ९

दोहा—विवश न ब्रज वनितानके, सखि मोहन मृदुकाय ।
चीर चोरि सुकदम्ब पै कछुकरहे मुसक्याय १०
अहित लाभ हित हानि ते, कछु जु हिये दुखहोत ।
शोक सुथायी भावहै, कहत कविनको गोत ११

अथ शोकका उदाहरण—सवैया ॥

मोहिं नशोच इतौतन प्राणको जायरहैकिलहैलघुताई ।
येहु न शोच घनो पदमाकर साहिबीजोपैसुकण्ठहीपाई
शोच इहै इकबाल बधू बिन देहिंगो अंगद को युवराई
यों बचवेलिवधूके सुने करुणाकर को करुणा कछुआई

दोहा—बाम कामकी खसमकी, भस्म लगावत अंग ।
त्रिनयनके नैननि जम्यो, कछु करुणाको रंग १३
रिपुकृत अपमानादि ते, परमित चित्तविकार ।
जु प्रतिकूल हिय हर्षको, वहै क्रोध निरधार ॥

अथ क्रोधका उदाहरण ॥

कवित्त—नहत बिहद्द नृप रामदल बद्दलमें,
ऐसो एकहौंहीं दुष्टदानव दलनहौं ।
कहे पदमाकर चहै तो चहूँचक्रनको,

चीरडारों पलमें पलैया पैजपनहौं ।
दशरथ लालहै कराल कछु लालपरि,
भाषत भयोई नेकु रावणै न गनहौं ।
रीतो करों लंकगढ इन्द्रहि अभीतो करौं,
जीतौं इन्द्रजीतौं आज तो मैं लक्षमन हौं ॥ १५॥

दोहा—फारों बक्षन अक्षको, जो लगि मैं हनुमान ॥
तौलौं पलक न लाइहौं, कछुक अरुण अँखियान ।
लखिउदभटप्रतिभटजुकछु, जग जगातजिचितचाव
सहरष सो नर बीरको, उतसाहस थिर भाव ॥ १७॥

अथ उत्साहका उदाहरण ॥

कवित्त—इत कपि रीछ उत राक्षसनहींकी चमू,
डंका देत बंका गढलंकाते कढ़ैलगी ।
कहै पदमाकर उमण्डजगहीकेहित,
चित्तमें कछूक चोप चावकी चढैलगी ॥
बातनके बाहियेको करमें कमानकसि,
धाई धूरधान आसमान में मढैलगी ।
देखते बनी है दुहूँ दलकी चढा चढी में,
रामदगहू पै नेकलाली जो चढैलगी ॥ १८ ॥

दोहा—मेघनादको लखि लषण, हरषे धनुष चढाय ॥
दुखित विभीषण दबि रहो, कछु कूलेरघुराय ॥
विकृत भयंकरके डरन, जो कछु चित अकुलात ॥
सो भयथायीभावहै, कछुसशंक जहँ गात ॥ २० ॥

अथ भयका उदाहरण ॥

कवित्त—चितै चितै चारों ओर चौंकि चौंकिपरै त्योंहीं,
जहां तहां जब तब खटकतपात हैं।
भाजन सो चाहत गँवार ग्वालिनीके कछू,
डरन डरनि सै उठाने रोम गात हैं ॥
कहै पदमाकर सु देखि दशा मोहनकी,
शेषहु महेशहु सुरेशहु सिहात हैं ॥
एकपाय भीत एकमात कांधेधरे एक,
एकहाथ छीको एकहाथ दधिखातहैं ॥ २१ ॥

दोहा—तीन पैग पुहुमी दई, प्रथमहि परमपुनीत।
बहुरि बढतलखिबामनहिं, भेबलिकछुकसभीत ॥
जहँघिनायजितचीजलखि, सुमिरिपरसमनमाँह।
उपजत जो कछुघिनयहै, ग्लानिकहतकविनाँह ॥
याही को नाम जुगुप्सा जानिये ॥

अथ ग्लानिका उदाहरण ॥

कवित्त—आवत गलानि जो बखान करो ज्यादा यह,
मादा महमलमूत मज्जकी सलीती है ॥
कहै पदमाकर जरातो जागि भीजी तब,
छीजी दिन रैन जैसे रैनहींकी भीती है ॥
सीतापति रामके सनेह वश बीती जुपै,
तौ तौ दिव्य देह यमयातनाते जीती है ॥
रीती रामनामते रही जो बिनकाम तौ,

याखारिज खराब हाल खालकी खलीती है॥२४॥

दोहा—लखिविरूप शूरपनखै, सरुधिर चर चुचुवात ।
सिय हियमें थिनकीलता, भई सुद्वैद्वै पात ॥२५॥
दरश परश सुनि सुमिरिजहँ, कानहुँअजबचारित्र ।
होइ जुचित विस्मित कछू, सो आचरज पवित्र ॥
याही को विस्मयथायी भाव जानिये ॥

अथ अचरजका उदाहरण—सवैया ॥

देखनक्योंनअपूरबइन्दुमें द्वैअरविन्दरहेगहिलाली ॥
त्योंपदमाकर कीर बधू इक मोतीचुगैमनोभैमतवाली ॥
ऊपरतेतमछायरह्योरविकीदवतेनदबैखुलि ख्याली ॥
योंसुनिबैनसखीके विचित्रभये चितचक्रतसेवनमाली ॥

दोहा—नलकृत पुललखि सिन्धुमें, भयेचकितसुरराव ॥
रामपाद नभते सबहिं, सुमिरि अगस्त्यप्रभाव ॥
निफल श्रमादिकते जुकछु, उरउपजत पछिताव ॥
संगति हित निर्वेदसों, सम रसको थिरभाव ॥२९॥

अथ निर्वेदका उदाहरण—सवैया ॥

ह्वैथिरमन्दिरमें न रह्योगिरिकन्दरमें न तप्योतपजाई ।
राजारिझाये नकै कवितारघुराजकथा न यथामति गाई ॥
योंपछितातकछू पदमाकर कासोंकहौ निजमूरखताई ।
स्वारथहूं न कियोंपरमारथ योहीं अकारथबैस बिताई ।

पुनर्यथा—सवैया ॥

भोगमेंरोग वियोग सँयोगमें योगये काय कलेशकमायो

त्योंपदमाकर वेद पुराणपढ्यो पढ़िकै बहुबाद बढ़ायो ॥
दौरयो दुराशमें दासभयोपै कहूं विशरामको धामनपायो ॥
खायोगमायोसु ऐसेहीजीवन हाय मैं रामको नामनगायो ॥
दोहा--पदमाकर कछु निजकथा, कासों कहौं बखान ।
जाहि लखों ताहै परी, अपनी अपनी आन ॥३२॥

इति श्रीमोहनलालभट्टात्मज कविपद्माकरविरचित जगद्विनोद
नाम काव्ये स्थायीभाव प्रकरणम् ॥ ५ ॥

अथ रसनिरूपण वर्णन ॥

दोहा--मिलि विभाव अनुभाव पुनि, संचारिनके बन्द ।
परिपूरण थिर भाव यों, सुर स्वरूप आनन्द ॥१॥
ज्यों पयपाय विकार कछु, ह्वै दधिहोत अनूप ।
तैसीही थिर भावको, वर्णत कवि रसरूप ॥ २ ॥
सो रसहै नव भाँतिको, प्रथम कहत शृँगार ।
हास्यकरुण पुनि रौद्र गनि, वीर सुचारि प्रकार॥
बहुरि भयानक जानिये, पुनि वीभत्स बखानि ।
अद्भुत अष्टम नवम पुनि, सातसुरसउरआनि ॥

अथ शृङ्गाररस वर्णन ॥

दोहा--जाको थायीभाव रति, सो शृंगार सुहोत ।
मिलिविभाव अनुभाव पुनि, संचारिनिके गोत ॥
रति कहियतुजोमनलगनि, प्रीति अपरपरजाय ।
थायी भाव शृँमारके, भल भाषण कविराय ॥
परिपूरण थिर भावरति, सो शृँगार रस जान ।

रसिकनको प्यारी सदा, कविजन कियो बखान ॥
आलम्बन शृंगारके, तियनायक निरधार ।
उद्दीपन सब सखि सखा, बनबागादि विहार ॥ ८ ॥
हावभाव मुसक्यानिमृदु, इमि औरहु जु विनोद ।
है अनुभाव शृँगार नव, कविजन कहत प्रमोद ॥
उन्मादिक सँचरत तहां, सँचारी है भाव ।
कृष्ण देवता श्याम रंग, सो शृँगार रसराव ॥
सो शृँगार द्वैभांतिको, दम्पति मिलन सँयोग ।
अटक जहां कछु मिलनकी, सो शृँगार वियोग ॥

संयोग शृङ्गारका वर्णन--पुनर्यथा ॥

छप्पय--कलकुण्डलदुहुँडुलतखुलतअलकावलि विपुलित ।
स्वेद सीकरन मुदित तनक तिलकावलि सुललित॥
सुरत मध्य मतिलसत हरष हुलसतचव चञ्चल ।
कवि पदमाकर छकित झपित झपि रहत दृगंचल ।
इमिनित विपरीतिसुरतिसमैअसातियसुखसाधकजुसब
हार हर विरंचि पुर उरगपुरसुरपुरलैकहआज अब ।
दोहा--तियपियके पिय तीय के, नखशिख साजि शृँगार ।
करि बदलौतन मनहुको, दम्पतिकरतविहार ॥१३॥
जहँ वियोग पिय तीयको, दुखदायक अतिहोत ।
विप्रलंभ शृगार सो, कहत कविनको गोत ॥१४॥

वियोग शृंगारका वर्णन । पुनर्यथा--सवैया ॥

शुभशीतलमन्दसुगन्ध समीर कछू छल छन्दहूछ्वै गये हैं ।

पदमाकर चांदनी चंदहूके कछू औरहिडौरनच्वैगयेहैं ॥
मनमोहन सों बिछुरे इतही बनिकै न अबै दिनद्वैगयेहैं
सखि वे हम वेतुम वेई बनप कछूके कछ मन ह्वैगयेहैं १५

पुनर्यथा-सवैया ॥

धीर समीर सुतारि ते तीछन ईछन कैसहु ना सहतीमें ।
त्यों पदमाकरचांदनीचन्दचितैचहुँओरनचौंकतीजीमें ॥
छाय बिछाय पुरैनकेपातनलेटती चन्दन की चौकीमें
नीचकहा विरहा करतो सखि होती कहूँजोपैमीचुमुठीमें

पुनर्यथा-सवैया ॥

ऐसी न देखीसुनीसजनीघनीबाढत जातवियोगकीबाधा ।
त्यों पदमाकर मोहनको तबते कलहै नकहूँ पल आधा ।
लाल गुलाल घलाघल मे दृगठोंकरदैगईरूपअगाधा ॥
कैगई कैगई चेटकसी मनलैगईलैगईलैगई राधा ॥ १७ ॥

दोहा—अटकि रहे किन काम रत, नागर नन्दकिशोर ।
करहुँ कहा पीकन लगे, पिक पापी चहुँओर १८
त्रिविध त्रियोग शृँगार यह, इक पूरबअनुराग ।
वर्णतमानप्रवास पुनि, निरखिनेहकीलाग ॥ १९ ॥
होत मिलनते प्रथमहीं, व्याकुलता उर आनि ।
सो पूरब अनुरागहै, वर्णत कवि रसखानि ॥ २० ॥

पूर्वानुरागका उदाहरण पुनर्यथा ॥

कवित्त—जैसी छबिश्यामकीपगीहै तेरी आँखिनमें,
ऐसी छबि तेरी श्याम आँखनपगी रहै ।

कहै पदमाकर ज्यों तानमे पगीहै त्योंही,
तेरी मुसकानि कान्ह प्राणमें पगी रहै ॥
धीर धर धीरधर कीरति किशोरीभई,
लगन इतै उतै बराबर जगीरहै ।
जैसी रट तोहिं लागी माधवकी राधे ऐसी,
राधे राधे राधे रट माधव लगी रहै ॥ २१ ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—मोहिं तजि मोहने मिल्योहै मनमेरी दौरि,
नयनहुं मिलेहैं देखि देखि साँवरो शरीर ।
कहे पदमाकर त्यों तान मय कान भये,
हौंतो रही जकि थकि भूलीसी भ्रमीसी वीर ॥
येतौ निर्दयी दई इनको दया न दई,
ऐसी दशा भई मेरी कैसे धरौं तन धीर ।
हौंतो मनहूंके मन नैननके नैन जोपै,
काननके कान तोपै जानतो पराई पीर ॥ २२ ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—मधुर मधुर मुख मुरली बजाय ध्वनि,
धमकि धमारनकी धाम धाम कै गयो ।
कहै पदमाकर त्यों अगर अबीरनकी,
करिकै घलाघली छला छली चितै गयो ॥
कोहै वह ग्वालिनी गुवालनके संगमें,
अनंग छवि वारो रस रंगमें भिजै गयो ॥

वैगयो सनेह फिर छ्वै गयो छराको छोर,
फगुवा न दैगयो हमारो मन लै गयो ॥ २३ ॥

दोहा--ज्यों ज्यों वर्षत घोर घन, घन घमण्ड गरुवाइ ।
त्यों २ परति प्रचण्ड अति, नई लगनकी लाइ २४
सूचक पिय अपराधकी, इंगित कहियेमान ।
त्रिविधमानसी मानिए; लघु मध्यम गुरु आन २५
परतिय दरशन दोषते, करै जु तिय कछु रोष ।
सुलघु मान पहिंचानिये, होतख्यालही तोष २६

लघुमान वर्णन ॥

कवित्त--वाहीके रँगी है रँग वाहीके पगीहै मग,
वाही के लगी है सँग आनँद अगाधको ।
कहै पदमाकर न चाह तजि नेकु दृग,
तारनते न्यारो कियो एकपल आधाको ॥
ताहूपै गोपाल कछु ऐसे ख्याल खेलतहैं,
मान मोरबेकी देखिबेकी कारि साधाको ॥
काहू पै चलाइ चख प्रथम खिझावैं फेरि,
बाँसुरी बजाइकै रिझाय लेत राधाको ॥ २७ ॥

दोहा--ये हैं जिनसुख वेदिये, करति क्यों न हित होस ।
ते सब अबहिं भुलाइयतु, तनक दृगनके दोस २८
और तियाके नाम कहुँ, पियमुखते कढ़िजाय ।
होत मानमध्यममिटै, सौंहन किये बनाय ॥२९॥

मध्यमा वर्णन ॥

कवित्त—बैसहीकी थोरी पै न भोरीहै किशोरी है,
याकी चित चाहराह औरकी मझैयो जिन ।
कहै पदमाकर सुजान रूपखान आगे,
आन बान आनकी सुआनकै लगैयो जिन ॥
जैसे अब तसे सुधि सौंहनि मनाय ल्याई,
तुम इक मेरी बात येती बिसरैयो जिन ।
आजुकी घरीते लै सभूलि ह्व भलेहो श्याम,
ललिताको लैकै नाम बांसुरीबजैयो जिन ॥३०॥

दोहा—आनि आनि तिय नामलै, तुमहिं बुलावत श्याम ।
लेन कह्यो नहिं नाहको, निज तियको जो नाम ॥
आनि तिया राति पीउ लखि, होय मानगुरुआइ ।
पाँइ परे भूषण भरे, छूटत कहूं बराइ ॥ ३२ ॥

अथ गुरुमान वर्णन ॥

कवित्त—नीकीको अनैसी पुनि जसी होय तसी तऊ,
यौवन की मूरतै न दारि भागियतुहै ।
कहैपदमाकर उजागर गोबिंद जोपै,
चूकिगे कहूं तो एतो रोष रागियतुहै ॥
प्रेम रस हाय लै जगाय लै हियेसोंहित,
पाइल पहिरि चलु प्रेम पागियतु है ।
येरी मृगननी तेरी पाइ लगियेनीपाइ,
पाइ लागि तेरे फेर पाइ लागियतुहै ॥ ३३ ॥

दोहा--निरखि नेकु नीको बनो, या कहि नन्दकुमार ।
सुभुज मेलि मेल्यो गरे, गजमोतिनको हार॥ ३४ ॥
पिय जु होइ परदेश में, सो प्रवास उर आन ।
जाते होत बधून को, अति संताप निदान ॥ ३५ ॥
सौ प्रवास द्वै भांति को, इक भविष्य इक भूत ।
तिनके कहत उदाहरण, रस ग्रन्थनके सूत ॥ ३६ ॥

भविष्यत् प्रवासका उदाहरण--सवैया ॥

औसर कौनकहासमयोकह काज विवादये कौनसी पावन ।
त्यों पदमाकरधीरसमीरउसीर भयो तपिकै तनतावन ॥
चैतकी चांदनीचारुलखेचरचाचलवेकी लगे जु चलावन ।
कैसी भई तुम्हैं गंगकी गैलमें गीत मदारनके लगेगावन ।
दोहा--रमन गमन सुनिशशिमुखी, भई दिवसको चन्द ॥
परखि प्रेमपूरण प्रकट, निरखि रहेनँदनंद ॥३८॥

नये प्रवासका उदाहरण-- सवैया ॥

कान्ह परो कुब्जाकेकलोलनिडोलनि छोड़दई हरभांती ॥
माधुरी मूरति देखिबिनापदमाकरलागै न भूमि सोहाती ॥
क्या कहिये उनसों सजनी यह बात है आपन भागसमाती ।
दोष बसंतको दीजै कहाउलहैनकरीलकीडारनपाती ॥३९॥

पुनर्यथा ।

कवित्त--रैन दिन नैनन ते बहतो न नीर कहा,
करतौ अनंग को उमंग शर चापतौ ।
कहै पदमाकर सुराम बाग बन कैसो,

तैसोतन ताय ताय तारापतिवा पतौ ॥
कीजै योग वियोग तो सँयोगहू न देतोदई,
देतौ जो सँयोग तो वियोगहि न थापतौ ।
होतो जो न प्रथम सँयोग सुख वैसो वह,
ऐसो अब जो न तो वियोग दुखव्यापतौ ॥४०॥

दोहा—सुनत सँदेश विदेश तजि, मिलवे आय तुरंत ॥
समुझिपरतसुकन्तजहँ, तहँप्रकटयोनवसन्त ॥ ४१ ॥
इक वियोग शृंगारमें, इती अवस्था थाप ॥
अभिलाषागुणकथनपुनि, पुनिउद्वेग प्रलाप ॥ ४२॥
चिन्तादिक जे षट कही, विरह अवस्था जानि ।
सञ्चारी भावन विषे, हौं आयहु जो बखानि ॥४३॥
ताते इत वर्णत न मैं, अभिलाषादिक चार ।
तिनके लक्षण लक्षिसब, हौं भाषत निरधार ॥४४॥
तिय अरुपियजो मिलनकी, करै विविधचितचाह ।
ताहीको अभिलाष कहि, वर्णतहैं कविनाह ॥ ४५ ॥

अभिलाषाका उदाहरण ॥

कवित्त--ऐसी मतिहोत अब कैसी करौ आली,
वनमालीके शृँगारिवे शृँगारिवोई करिये ।
कहै पदमाकर समाज तजि काज तजि,
लाजको जहाज तजि डारिवोई करिये ॥
घरी घरी पल पल छिन छिन रैन दिन,
नैननकी आरती उतारिवोई करिये ।

इन्दु ते अधिक अरविन्दते अधिक ऐसो,
आनन गोविन्दको निहारिबोई करिये ॥ ४६ ॥
दोहा—पिय आगमते अगमनहिं, करि बैठी तियमान ।
कबधौं आइ मनाइहैं, यही रही धरि ध्यान ॥४७॥
करै विरहमें जो जहां, पियगुण गुणन बखान ।
ताहीको गुण कथनकहि, वर्णत सुकवि सुजान ॥

गुणकथनका उदाहरण ॥

कवित्त—हौंहूंगई जान तितआइगो कहूंते कान्ह
आनि बनितानहूंको झमकि झलौगयो ।
कहै पदमाकर अनंगकी उमंगनिसों,
अंग अंग मेरे भरि नेहको छलौगयो ॥
ठानि ब्रज ठाकुर ठगोरिनकी ठेलाठेल,
मेलाकै मझार हित हेलाकै भलो गयो ।
छाहकै छला छूवै छौगुनी छूवै छरा छोरनछूवै,
छलिया छबीली छैल छाती छूवै चलोगयो॥४९॥

पुनर्यथा—सवैया ॥

चौरन गोरिनमें मिलिकैइतै आईही हाल गुवालकहांकी
कौनविलोकिरह्योपदमाकर बातियकीअवलोकनिबांकी
धीरअबीरकी धुंधुरिमें कछुफेरसों कैमुख फेरकै झांकी ।
कैगई काटि करेजनिके कतरे कतरे पतरेकारिहांकी ॥५०॥
दोहा—गुणवारे गोपालके, करि गुण गणनि बखान ।
इक आपहिके आसरे, राखति राधा प्रान ॥ ५१ ॥

विरह बिम्ब अकुलायउर, त्यों पुनि कछुन सुहाय ।
चित न लगत कह कैसहू, सो उद्वेग बनाय ॥५२॥

उद्वेगका वर्णन ॥ पुनर्यथा ॥

कवित्त—घर ना सुहात ना सुहात बन बाहिरहूं,
बागना सुहात जो खुशाल खुशबोहीसों ।
कहै पदमाकर घनेरे धन धाम त्योंहीं,
चैन न सुहात चांदनीहूं योग जोहीसों ॥
सांझहु सुहात न सुहात दिन मांझ कछु,
व्यापी यह बात सो बखानतहौं तोहीसों ।
रातिहु सुहात न सुहात परभात आली,
जब मन लागि जात काहू निर्मोहीसों ॥ ५३ ॥

दोहा- ह्वै उदास अति राधिका, ऊंचे लेति उसाँस ।
सुनि मनमोहन कान्हकी, कुटिल कूबरी पास ॥
विरही जन जहँ कहत कछु, निरखि निरर्थकबैन ।
तासों कहत प्रलापहैं, कवि कविताके ऐन ॥ ५५ ॥

प्रलापका उदाहरण ॥

कवित्त--आमको कहत अमिलीहै अमिलीको आम,
आकही अनारनको आकिबो करति है ।
कहै पदमाकर तमालनको ताल कहै,
तालनि तमाल कहि ताकिबो करति है ॥
कान्हैं कान्ह काहूकहि कदलीकदम्बनिको,
भेंटि परिरम्भनमें छाकिबो करति है ।

साँवरे जो रावरे यों बिरह बिकानी बाल,
बन बन बावरी लौं ताकिबो करतिहैं ॥ ५६ ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त--प्राणन प्यारे तनु तापके हरण हारे,
नन्दके दुलारे ब्रजवारे उमहत हैं।
कहै पदमाकर उरूझे उर अन्तर यों,
अन्तर चहेहू जे न अन्तर चहत हैं ॥
नैनन बसे हैं अंग अङ्ग हुलसे हैं रोम,
रोमनि रसे हैं निकसे हैं को कहत हैं।
ऊधो वे गोविन्द कोऊ और मथुरामें यहां,
मेरो तो गोविन्द मोहिं मोहिं में रहत हैं ॥५७॥

दोहा--निरखत बनघनश्यामकहिं, झटतिउठातिजुबाम।
विकल बीचही करत जनु, कर कमनती काम ॥
दशा वियोगहि की कहत, जुहै मूरछा नाम ॥
जहँ न रहत सुधि कौनहूं, कहा शीत कहँ घाम॥५९॥

मूर्च्छाका उदाहरण ॥

कवित्त--ये नन्दलाल ऐसी व्याकुल परी है बाल,
हालही चलौ तौ चलौं जोरि जुरिजायगी।
कहै पदमाकर नहीं तो ये झकोरै लगैं,
औरैल अचाका बिन घोरे घुरि जायगी ॥
सीरे उपचारन घनेरे घनसारन को,
देखतहीदेखौ दामिनी लौं दुरि जायगी।

तौहीं लग चैन जौलौं चेती है न चन्द्रमुखी.
चेतैगी कहूंतौ चांदनी में चुरि जायगी ॥ ६० ॥
दोहा–तौही तौ भल अवधलौं, रहैं जु तिय निरमूल ।
नहिं तौ क्यों करि जियहिगी, निरखि शूलसे फूल ॥

इति शृङ्गाररस वर्णन ॥

अथ हास्यरस वर्णन ॥

दोहा–थायी जाको हास है, वहै हास्य रस जानि ।
तहँ कुरूप कूंदव कहब, कछु विभावते मानि ॥
भेद मध्य अरु ऊँचस्वर, हँसबोई अनुभाव ।
हर्ष चपलता औरहू, तहँ सञ्चारी भाव ॥ ६३ ॥
श्वेत रंग रस हास्यको, देव प्रथम पति जास ।
ताको कहत उदाहरण, सुनत जो आवै हास ॥६४॥

हास्यरसका उदाहरण ॥

कवित्त–हँसिहँसिभजैं देखि दूलह दिगम्बरको,
पाहुनी जे आवै हिमाचलके उछाहमें ।
कहै पदमाकर सुकाहूसों कहैको कहा,
जोई जहां देखै सो हँसेई तहां राहमें ॥
मगन भयेई हँसै नगन महेशठाढ़े,
और हँसेऊ हँसो हँसकै उमाहमें ।
शीशपर गंगाहँसै भुजनि भुजंगा हँसै,
हांसहीको दंगाभयो नङ्गाके विवाहमें ॥ ६५ ॥
दोहा–कर मूसर नाचत नगन, लखि हलधरको स्वांग ।

हँसि हँसि गोपी फिर हँसै, मनहुँ पियेसी भांग ॥

अथ करुणारस लक्षण ॥

दोहा—आलम्बन प्रियको मरण, उद्दीपन दाहादि ।
थायी जाको शोक जहँ, वहै करुणरस यादि ॥
रोदति महिपति नादिजहँ, वर्णतकविअनुभाव ।
निरखेदादिक जानिये, तहँ संचांरी भाव ॥६८॥
चित्रबधू तरके वरण, वरुग देवता जान ।
या विधि को या करुणरस, वर्णतकविकवितान ॥

करुणारसका उदाहरण ॥

कवित्त--आंसुन अन्हाय हाय हाय कै कहत सब,
औध पुरवासी के कहायो दुःख दाहिये ।
कहै पदमाकर जलूस युवराजी कोसु,
ऐसो को धनी है जाय जाके शीश वाहिये ॥
सुतके पयान दशरथ ने तजे जो प्रान,
बढ़्यो शोकसिंधुसो कहांलौं अवगाहिये ।
मूढ़ मंथराके कहे बनको जो भजे राम,
ऐसी यह बात कैकेयी की तौ नचाहिये ॥ ७० ॥

दोहा—राम भरत मुख मरण सुनि, दशरथके मनमाँह ।
महिपरभै रोदत उचारि, हा पितु हा नरनाँह ॥७१॥

अथ रौद्ररस थायीवणन ॥

दोहा—थाया जाको क्रोध अति, वहै रौद्र रस नाम ।
आलम्बन रिपु रिपु उमँड़, उद्दीपन तिहिंठाम ॥

भ्रकुटि भंग अति अरुणई अधर दशन अनुभाव ।
गर्व चपलता औरहू तहँ संचारीभाव ॥ ७३ ॥
रक्तरंगरस रौद्रको, रुद्र देवता जान ।
ताको कहत उदाहरण, सुनहु सुमति दैकान ॥७४॥

अथ रौद्ररस वर्णन ॥

कवित्त—घारि टारि डारौं कुम्भकर्णहिं निदारि डारौं;
मारौं मेघनादै आजु यों बल अनन्तहौं ।
कहै पद्माकर त्रिकूटहीको ढाहि डारौं,
डारत करेई यातुधाननको अन्तहौं ॥
अच्छहि निरच्छकपि रुच्छह्वै उचारौं इमि,
तोण तिच्छ तुच्छनको कछु व न गन्तहौं ।
जारि डारौं लंकहि उजारि डारौं उपवन,
फारिडारौं रावणको तौं मैं हनुमन्तहौं॥ ७५॥

दोहा—अधर चब्ब गहि गब्ब अति, चहिरावणको काल
दृग कराल मुख लाल करि, दौरेउ दशरथ लाल
जाकों रस उत्साह शुभ, है इक थायी भाव ।
सुरस बीर है चारि विधि, कहत सबै कविराव ७७
युद्ध बीर इक नामहै, दया बीर बियनाम ।
दीन बीर तीजी सुपुनि, धर्मवीर अभिराम ॥७८॥
युद्ध बीरको जानिये, आलंबन रिपु जोर ।
उद्दीपन ताको तबहिं. पुनि सैनाको भोर ॥ ७९ ॥
अँग फरकत दृग अरुणई, इत्यादिक अनुभाव ॥

गर्व असूया उग्रता, तहँ संचारी भाव ॥ ८० ॥
इन्द्र देवता वीरको, कुन्दन वर्ण विशाल ॥
ताको कहतउदाहरण, मुनिजन होतखुशाल ॥८१॥

अथ वीररस वर्णन ॥

कवित्त–सो है अत्र ओढ़े जे न छोड़े शीश संगरकी,
लंगर लँगूर उच्च ओजके अतंकामें ।
कहै पदमाकर त्यों हुंकरत फुंकरत,
फैलत फलात भाल बांधत फलंकामें ॥
आगे रघुबीरके समीरके तनय सङ्ग,
तारीदे तड़ाक तड़ा तड़के तमंकामें ।
शंकादे दशाननको हंकादै सुबंकाबीर,
डंकादै विजयको कपिकूदि परचो लंकामें ॥८२॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त--जाही ओर शोरपरै घोरबन ताही ओर,
जोर जंग जालिमको जाहिर दिखात है ।
कहै पदमाकर अरीनकी अवाई पर,
साहब सवाईको ललाई लहरात है ॥
परिघ प्रचंड चमू हरषित हाथी पर,
देखत बनत सिंह माधवको गात है ॥
उद्धत प्रसिद्ध युद्ध जीतिही के सौदाहित,
रौदा ठनकारि तन हौदा न समात है ॥ ८३ ॥

दोहा–धनुष चढ़ावत भे तबहिं, लखिरिपुकृत उत्पात ॥

हुलसि गात रघुनाथको, बख्तर में न समात ॥८४॥

अथ दया वीरका वर्णन ॥

दोहा--दया वीरमें दीन दुख, वर्णत आदि विभाव ।
दूरि करब दुख मृदु कहब, इत्यादिक अनुभाव॥८५॥
सुकृत चपलता औरहूं, तहँ सञ्चारी भाव ।
दयावीर वर्णत सबै, याही विधि कविराव ॥ ८६ ॥

अथ दया वीरवर्णन सवैया ॥

पापी अजामिलपार कियोजेहि नाम लियो सुतहीको रायन
त्यों पदमाकर लातलगेपर विप्रहूके पग चांगुने चायन ।
को असदीन दयाल भयो दशरत्थके लालसे सूधे सुभायन
दौरे गयंदउबारिबेको प्रभुबाहन छोंडिउबाहने पायन ॥८७॥

दोहा—मिले सुदामा सों जुकरि, समाधान सन्मान ।
पग पलोटि पगश्रम हरेउ, येप्रभु दयानिधान ॥

अथ दानवीर वर्णन ॥

दोहा—दान समयको ज्ञान पुनि, याचक तीरथ गौन ।
दान वीर के कहत हैं, ये विभाव मतिभौन ॥ ८९ ॥
तृण समान लेखत सुधन, इत्यादिक अनुभाव ।
ब्रीडा हरषादिक गनौ, तहँ संचारी भाव ॥ ९० ॥

दान वीरका उदाहरण ॥

कवित्त--बगसि वितुंड दये झुण्डनके झुण्ड रिपु,
मुण्डनकी मालिका दई ज्यों त्रिपुरारीको ।
कहै पदमाकर करोरनको कोष दये,

षोडशहू दीन्हें महादान अधिकारीको ॥
ग्राम दये धाम दये अमित अराम दये,
अन्न जल दीने जगतीके जीवधारीको ।
दाता जयसिंह दोय बातैं तो न दीनी कहूँ,
वैरिनको पीठि और डीठि परनारीको ॥ ९१ ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—सम्पति सुमेरकी कुवेरकी जु पावे ताहि,
तुरत लुटावत विलम्ब उर धारै ना ।
कहै पदमाकर सुहेम हय हाथिन के,
हलके हजारनके वितर विचारै ना ॥
गंज गज बकश महीप रघुनाथ राय,
याहि गज धोखे कहूं काहू देइ डारै ना ॥
याही डर गिरिजा गजाननको गोइ रही,
गिरिते गरेते निज गोदते उतारै ना ९२

दोहा—दै डारै जनु भिक्षुकनि,हनि रावणहिंसुलंक ।
प्रथम मिल्यो याते प्रभुहि, सुविभीषणहैरंक ९३॥

अथ धर्मवीर वर्णन ॥

दोहा—धर्मवीरके कवि कहत, ये विभाव उर आन ।
वेद सुमृति शीलन सदा,पुनि पुनि सुनब पुरान॥
वेद विहित क्रम वचन वपु,औरहु है अनुभाव ।
धृति आदिक वर्णत सुकवि,तहँ संचारी भाव ॥

अथ धर्मवीरका उदाहरण ॥

कवित्त–तृणके समान धनधान राज त्यागकरि,
पाल्यो पितु वचन जो जानत जनैया है।
कहै पदमाकर विवेकही को बानो बीच,
सोचो सत्य वीर धीर धीरज धरैयाहै॥
सुमृतिपुराण वेद आगम कह्यो जो पंथ,
आचरत सोई शुद्ध करम करैया है॥
मोद मति मंदर पुरंदर महीको धन्य,
धरम धुरंधर हमारो रघुरैया है॥ ९६॥

दोहा- धारि जटा बल्कल भरत, गन्यो न दुख तजिराज।
भे पूजत प्रभु पादुकन, परम धर्मके काज ९७॥

अथ भयानक वर्णन ॥

दोहा–जाको थाई भाव भय वहै भयानक जान।
लषण भयंकर गजब कछु, ते विभाव उर आन॥
कम्पादिक अनुभाव तहँ, संचारी मोहादि।
कालदेव कैलावरण सुभयानक रसयादि॥ ९९॥

अथ भयानक उदाहरण ॥ पुनर्यथा ॥

कवित्त–झलकत आवैं झुंड झिलम झलानि झप्यो,
तमकत आवैं तेग वाही औ शिलाहीहै।
कहै पदमाकर त्यों दुन्दुभि धुकार सुनि,
अब बक बोलै यों गलीम और गुनाहीहै॥
माधवको लाल कालहू तें विकराल दल,

साजि धायो ये दई दईधौं कहा चाही है ।
कौन को कलेऊ धौं करैया भयो कालअरु,
कापै यों परैया भयो गजब इलाही है ॥ १०० ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—ज्वालाकी जलनसी जलाक जंग जालनकी,
जौरकी जमाहै जोम जुलुम जिलाहेकी ।
कहै पदमाकर सु रहियो बचाये जग,
जालिम जगतसिंह रंग अवगाहेकी ॥
दौरि दावादारनपै द्वारसौ दिवाकरकी,
दामिनी दमंकनि दलेल दिग दाहेकी ।
कालकी कुटुम्बिन कलाहै कुल्हि कालिकाकी,
कहरकी कुन्तकी नजारिकछवाहेकी ॥ १ ॥

छप्पय—भुवन धुंधुरित धूलि धूलि धुंधुरित सुधूमहु ।
पदमाकर परतक्ष स्वच्छ लखि परत न भूमहु ।
भग्गत अरि परि पग्ग मग्ग लग्गत अँगअग्गनि ।
तहँ प्रतापपृथिपाल ख्याल खेलत खुलिखग्गनि ।
तहँ तबहिं तोपि तुंगनि तड़पि तंतडानतेगनि तडकि
धुकि धड़धड़धड़धड़धड़ाधड़धड़धड़ाततद्धाधड़कि २

दोहा—एक और अजगरहि लखि, एक ओर मृगराइ ।
विकल बटोही बीचही, परो मूरछा खाइ ॥ ३ ॥

बीभत्सरस वर्णन ॥

दोहा—थाई जासु गलानहै, सो बीभत्स गनाव ।
पीबमेद मज्जा रुधिर, दुर्गंधादि विभाव ॥ ४ ॥
नाक मूँदिबो कम्प तन, रोम उठब अनुभाव ।
मोह असूया मूरछा, दिकसञ्चारी भाव ॥ ५ ॥
महाकाल सुर नील रँग, सू बिभत्स रस जानि ।
ताको कहत उदाहरण, रसग्रन्थनि उर आनि ॥ ६ ॥

अथ बीभत्सका उदाहरण ॥

छप्पय—पढ़त मन्त्र अरु यंत्र अन्त्र लीलत इमि जुग्गिनि
मनहुँगिलत मदमत्तगरुड़तिय अरुण उरग्गिनि
हरषगात हरषात प्रथम परसन पलपंगत ।
जहँ प्रताप जिति जङ्ग रंग अग अँग उमंगत ॥
जहँपदमाकरउत्पत्ति अति रणहि रकतनद्दियबहत ।
चकचकितचित्तचरबीनचुभिचकचकाइचण्डारहत ॥ ७ ॥

दोहा--रिपु अंत्रनकी कुण्डली, करिजुग्गिनि जु चबाति ।
पीबहिमें पागी मनो, युवति जलेबी खाति ॥ ८ ॥

अथ अद्भुतरस वर्णन ॥

दोहा--जाको थाई आचरिज, सो अद्भुत रस गाव ।
असंभवित जेते चरित, तिनको लखत विभाव ॥ ९ ॥
वचनबिचल बोलनि कँपनि, रोम उठनि अनुभाव ।
बितरकशंका मोह ये, तहँ संचारीभाव ॥ १० ॥

जासु देवता चतुरमुख, रंग बखानत पीत ।
सो अद्भुत रस जानिये,सकल रसनको भीत ॥ ११ ॥

अद्भुतरसका उदाहरण ॥

कवित्त—अधम अजान एक चढिकै विमान भाष्यो,
पूँछतहौं गंगा तोहि पारिपारिपाँइहौं ॥
कहै पदमाकर कृपाकरि बतावै सांची,
देखे अति अदभुत रावरे सुभाइहौं ॥
तेरे गुण गानहुँ की महिमा महान मैया,
कान कान नाइके जहान मध्य छाई हौं ॥
एक मुख गाये ताके पंचमुख पाये अब,
पंचमुखगाईहौं तो केते मुख पाइहौं ॥ १२ ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—गोपी ग्वाल माली जुरे आपुस में कहैं आली,
कोऊ यशुदाके अवतारचो इन्द्रजाली है ।
कहै पदमाकर करै को यों उतालीजापै,
रहन न पावै कहुं एको फन खाली है ॥
देखै देवताली भई विधिके खुशाली कूदि,
किलकत काली हेरि हँसत कपाली है ।
जनमको चाली येरि अद्भुत देख्याली आजु,
कालीकी फनाली पै नचत वनमालीहै ॥ १३ ॥

पुनर्यथा ॥

कवित्त—मुरली बजाई तानगाई मुसक्याय मन्द,
लटकि लटकि माई नृत्यमें निरत है ।
कहै पदमाकर गोविन्दके उछाह अहि,
विषको प्रवाह प्रति मुखप झिरतहै ॥
ऐसो फैल परत फुसकरतही में मनो,
तारन को वृन्द फूत कारन गिरत है ।
कोप करि जौलों एक फन फुफकावैकाली,
तौलोंवनमाली सोऊ फनपै फिरतहै ॥ १४ ॥

सात दिन सात राति करि उतपात महा,
मारुत झकोरै तरु तोरै दहि दुखमें ।
कहै पदमाकर करी त्यों धुम धारनहू,
एते पै न कान्ह कहू आयो रोष रुखमें ॥
छोरि छिगुनीके छत्र ऐसो गिरि छाइ राख्यो,
ताके तरे गाथ गोय गोपी खरा सखमें ।
देखि देखि मेघनको सेन अकुलानी रह्यो ॥
सिन्धुमें न पानी अरु पानी इन्दु मुखमें ॥१५॥

दोहा--घन वर्षत करपर धरयो, गिरि गिरिधर निरशंक ।
अजब गोपसुत चरित लखि, सुरपति भयोसशंक ॥

अथ शान्तरस वर्णन ॥

दोहा--सुरस शान्त निर्वेद हैं, जाको थाई भाव ।
सतसंगत गुरु तपोवन, मृतक समान विभाव ॥१७॥
प्रथम रुमांचादिक तहां, भाषत कवि अनुभाव ।
धृति मति हरषादिक कहै, शुभ सञ्चारी भाव ॥
शुद्ध शुक्ल रङ्ग देवता, नारायण है तान ।
तासो कहत उदाहरण, सुनहु सुमति दै कान ॥

शान्तरसका उदाहरण सवैया ॥

बैठि सदा सतसंगहीमें विषमानि विषयरस कीर्ति सदाहीं ॥
त्यों पदमाकरझूठ जितो जग जानिसुज्ञानहिंके अवगाहीं ॥
नाककी नोकमें डीठि दिये नितचाहैंन चीजकहूँचितचाहीं।
संतत संतशिरोमणिहै धनहै धन वे जनवै परवाहीं ॥२०॥

दोहा--वनवितान रवि शशिदिया, फलभख सलिल प्रवाह ।
अवनि सेज पंखा पवन, अब न कछू परवाह ॥
सबहितते विरकत रहत, कछू न शंकात्रास ॥
विहितवरत सुन हितसमुझि; शिशुवतजे हरिदास ॥

इति नवरसनिरूपणम् ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
खेतवाड़ी-बम्बई.

गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास,
"लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस,
कल्याण-बम्बई.